आर.एन.आई. नं. 3653/57
मुद्रण तिथि 5 से 8 नवम्बर, 2017
डाक प्रेषण तिथि 10 नवम्बर, 2017

वर्ष : 75 अंक : 11
मार्गशीर्ष, 2074 मूल्य : ₹ 10

डाक पंजीयन संख्या JaipurCity/413/2015-17
WPP LICENCE NO. JAIPURCITY/WPP-004/2015-17

ISSN 2249-2011

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

कथा-कविता-प्रेरक प्रसंग अंक

75 हीरक वर्ष

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्व साहूणं

एसो पंच णमोक्कारो, सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

अंधविश्वासों की अटवी, मानव को भटकाती है।
सच्चे विश्वासों की प्राची, नई रोशनी लाती है।।

प्रवृत्ति के साथ रही हुई फल की आकांक्षा एवं सुख पाने की अभिलाषा ही कर्म बन्ध का कारण है।

ACHARYA SHRI KAILASSAGARSURI GYANMANDIR
SHRI MAHAVIR JAIN ARADHANA KENDRA
Koba, Gandinagar-382007.
Phone : (079) 23276252, 23276204-05

संसार की समस्त सम्पदा और भोग
के साधन भी मनुष्य की इच्छा
पूरी नहीं कर सकते हैं।

- आचार्य हस्ती

आवश्यकता जीवन को चलाने
के लिए जरूरी है, पर इच्छा जीवन
को बिगाड़ने वाली है,
इच्छाओं पर नियंत्रण आवश्यक है।

- आचार्य हीरा

जिनका जीवन बोलता है,
उनको बोलने की उतनी जरूरत भी नहीं है।

- उपाध्याय मान

With Best Compliments :
Rajeev Nita Daga Foundation Houston

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'।।

卐 संरक्षक
अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ
घोड़ों का चौक, जोधपुर (राज.), फोन-0291-2636763

卐 संस्थापक
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

卐 प्रकाशक
विनयचन्द डागा, मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003(राज.)
फोन-0141-2575997, फैक्स-0141-4068798

卐 प्रधान सम्पादक
प्रो. (डॉ.) धर्मचन्द जैन
सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2,
नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)
फोन : 0291-2626279
E-mail : editorjinvani@gmail.com
E-mail : jinvani@yahoo.co.in

卐 सह-सम्पादक
नौरतन मेहता, जोधपुर
डॉ. श्वेता जैन, जोधपुर

卐 भारत सरकार द्वारा प्रदत्त
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं.-JaipurCity/413/2015-17
WPP Licence No. JaipurCity-004/2015-17
ISSN 2249-2011

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

धणुं परक्कमं किच्चा,
जीवं च ईरियं सया।
धिइं च केयणं किच्चा,
सच्चेण पलिमंथए।।

-उत्तराध्ययन सूत्र, 9.21

धनुष पराक्रम का करके,
ईर्या को उसकी डोर करे।
धृति को मूठ बना कर उसकी,
बाँध सत्य से जोर धरे।।

नवम्बर, 2017
वीर निर्वाण संवत्, 2544
मार्गशीर्ष, 2074

वर्ष 75 अंक 11

सदस्यता शुल्क

त्रिवार्षिक : 250 रु.	स्तम्भ सदस्यता : 21000/-
20 वर्षीय, देश में : 1000 रु.	संरक्षक सदस्यता : 11000/-
20 वर्षीय, विदेश में : 12500 रु.	साहित्य आजीवन सदस्यता- 4000/-

एक प्रति का मूल्य : 10 रु.

शुल्क/साभार नकद राशि 'जिनवाणी' बैंक खाता संख्या SBI 51026632986 IFSC No. SBIN 0031843 में जमा कराकर जमापर्ची (काउन्टर-प्रति) अथवा ड्राफ्ट भेजने का पता 'जिनवाणी', दुकान नं. 182-183 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-302003 (राज.)
फोन नं.0141-2575997, फैक्स : 0141-4068798, E-mail:sgpmandal@yahoo.in

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोन- 0141-2562929

नोट- यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रम

'कथा-कविता-प्रेरक प्रसंग अंक'

सम्पादकीय-	जिनवाणी की हीरक यात्रा (11)	-डॉ. धर्मचन्द जैन	6
विचार-वारिधि-	समकित, गुरु और श्रद्धा	-आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	10
प्रवचन-	पाया है तो दे दे प्यारे	-श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.	11
प्रेरक-प्रसंग-	प्रेरणा देते दो प्रसंग	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	15
	आस्था से आनन्द	-श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.	16
	अनोखा भोजन	-श्री हरिशचन्द्र अरोड़ा 'सौभाग्य'	32
	गन्दा कौन?	-श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'	39
कथा-	बंटवारा	-आचार्यश्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी म.	41
	सबसे बुरी बात	-श्री मोतीलाल सुराना	44
	श्रम का महत्त्व	-श्री पूरन 'सरमा'	45
	तीन पैसे	-श्री प्रीतपाल विरात	47
	दान का फल	-श्री नवलसिंह डूंगरवाल	51
रिपोतार्ज -	आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 55 वें दीक्षा-दिवस पर श्रद्धा-भक्ति एवं समर्पण का सैलाब	-श्री नौरतनमल मेहता	17
प्रवचनांश-	प्राणातिपात	-आचार्यश्री विजयरत्नसुंदरसूरिजी म.	26
शरीर-विज्ञान-	रोगाणु और स्वास्थ्य	-श्री पी. शिखरमल सुराणा	33
कविता/गीत-	बीसवीं शताब्दी का मानव	-श्रीमती पुष्पा जैन	5
	दीक्षा का स्तवन	-श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.	24
	भगवान तुम हमारे.....!	-महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा.	25
	मुक्ति-प्राप्ति का सरलतम उपाय	-श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	29
	छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन	-डॉ. दिलीप धींग	34
	श्रीमद् वर्धमान-वन्दना	-श्री अरुणमुनिजी म.	37
	महावीर की प्यारी वाणी	-श्रीमती सूरजकुंवर मेहता	38
	मुक्तक	-श्री चम्पालाल चोरडिया	38
	ये इष्ट सुमंगलकारी हैं	-डॉ. इन्दरराज बैद	43
	भौतिकवादी मृगतृष्णा	-डॉ. नरपतचन्द्र सिंघवी	44
	समकित जीवन	-श्री राजमल पवैया	46
	स्वभाव	-श्री भानी राम 'अग्निमुख'	48
	जिनवाणी	-श्री नन्दलाल मारू	52
चिन्तन/विचार-	ध्यान की उपयोगिता	-श्री पूनमचन्द मुणोत	14
	आत्मा की खेती	-श्री हरीश 'मधुर'	25
	सुई बनाम कैंची	-संकलित	34
	धर्म और नैतिकता	-प्रो. सुमेरचन्द जैन	35

	बुरे का भला	–श्री सुन्दरलाल छल्लाणी	36
	जड़ को सींचो	–श्रीमती सन्तोष डागा	42
	नश्वर मोह	–श्री हरीश 'मधुर'	48
	दाम्पत्य का शत्रु अहंकार	–श्रीमती आभा जैन	49
	सौन्दर्य का केन्द्र - संघ	–कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज	50
बाल-जिनवाणी -	सच्चा वीर	–डॉ. दिलीप धींग	84
	बचपन लौटकर आता नहीं है....	–श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया	84
	जैन धर्म : उभरते प्रश्न व उत्तर	–श्री प्रमोद महनोत	85
	सातवाँ बोल - शरीर पाँच	–संकलित	85
	My Dream	–*Collected*	86
	कौन किसके गुरु?	–श्री सुरेशचन्द्र धींग	87
	Nice Quote	–*Mrs. Minakshi Dinesh Jain*	88
	भारत की बेटी प्रियल	–श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा	89
	धैर्य से सफलता	–डॉ.प्रेमचन्द गोस्वामी	91
शीलव्रत-सूची-	निमाज चातुर्मास के पश्चात् से भोपालगढ़ चातुर्मास तक शीलव्रतधारकों की सूची	–संकलित	55
साहित्य-समीक्षा-	नूतन साहित्य	–डॉ. श्वेता जैन	53
समाचार विविधा-	समाचार-संकलन	-संकलित	56
	साभार-प्राप्ति-स्वीकार	-संकलित	81

बीसवीं शताब्दी का मानव

श्रीमती पुष्पा जैन

वैज्ञानिक उपलब्धियों की दौड़ में,
तकनीकी उपकरणों की होड़ में,
लगा हुआ मानव
बीसवीं शताब्दी के
चौराहे पर आकर
कुछ विस्मित सा,
कुछ क्षुब्ध सा,
एक नन्हें बालक की तरह
सहमा-सहमा सा खड़ा है,
मानो लौट जाना चाहता हो,
उस आदिम-काल में,
जहाँ ये सारी उपलब्धियाँ
शून्य में परिवर्तित हो जायें,
जहाँ यन्त्रों की गड़गड़ाहट में
मानव बन्धु की आहें
कुचली न जायें,
जहाँ भौतिक सुख की खोज में
स्नेह और ममता के बंधन को
तोड़ा न जाये
किन्तु
आज वह जिस चौराहे पर खड़ा है
वहाँ से लौटने का प्रयास
उतना ही सच है
जितना कि नींद की गोलियों से
खुद को भूल जाने का प्रयास।

-जिनवाणी, जनवरी 1977 से साभार

सम्पादकीय

जिनवाणी की हीरक यात्रा (11)

❖ डॉ. धर्मचन्द जैन

डॉ. शान्ता भानावत के सम्पादन में नवम्बर 1993 से जिनवाणी पत्रिका का आकार छोटा (5''x7.5'') हो गया, जो निरन्तर चलता रहा। उसी समय से जिनवाणी कम्प्यूटरीकृत होकर प्रकाशित होने लगी। डॉ. शान्ता भानावत ने भी जिनवाणी को व्यवस्थित रूप में सम्भाला तथा उनके अनन्तर जून माह से सितम्बर तक उनके सुपुत्र डॉ. संजीव भानावत ने सम्पादक के रूप में अपनी सेवाएँ दी। तदनन्तर से वर्तमान प्रधान सम्पादक (डॉ. धर्मचन्द जैन) अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। सम्पादक मण्डल में डॉ. संजीव भानावत एवं श्री पुखराज मुणोत को स्थान दिया गया। जिनवाणी पत्रिका ने डॉ. नरेन्द्र भानावत के सम्पादन में विशिष्ट स्वरूप ग्रहण कर लिया था, जिसका निर्वाह करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की असीम कृपा से एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के तत्कालीन अध्यक्ष डॉ.सम्पतसिंहजी भाण्डावत तथा मंत्री श्री विमलचन्दजी डागा के आदेश से वर्तमान सम्पादक ने यह कार्य अपने हाथ में लिया। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल का कार्यालय जयपुर में था एवं सम्पादक का निवास जोधपुर में था; फिर भी कम्प्यूटरीकृत जिनवाणी के पृष्ठों की एक प्रति कूरियर द्वारा जयपुर स्थित डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस को भेजने से प्रकाशन का कार्य आसान हो गया था। इस प्रिंटिंग प्रेस में जिनवाणी नवम्बर 1993 से प्रकाशित होने लगी थी तथा आज भी जिनवाणी इसी प्रेस से छप रही है। इससे पूर्व वर्षों तक जिनवाणी का प्रकाशन फ्रैण्ड्स प्रिण्टर्स एण्ड स्टेशनर्स जयपुर से हो रहा था। जिनवाणी का कम्प्यूटरीकरण जोधपुर में बाजार से करवाया जा रहा था। कुछ वर्षों पश्चात् अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री मोफतराज जी मुणोत के सौजन्य से माणक चौक में स्थित स्वाध्याय संघ कार्यालय में कम्प्यूटर प्रदान किया गया एवं कम्प्यूटर पर जिनवाणी का कार्य होने लगा। तबसे जिनवाणी जोधपुर में व्यवस्थित रूप से सम्पादित एवं कम्प्यूटरीकृत होने लगी।

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सान्निध्य में सवाईमाधोपुर में 21 फरवरी 1994 को सात दीक्षाएँ सम्पन्न हुई, जिनमें व्याख्यात्री महासती श्री रुचिता जी म.सा., महासती श्री रक्षिताजी म.सा., महासती श्री पुष्पलताजी म.सा., महासती श्री स्नेहलताजी म.सा., महासती श्री मंजूलताजी म.सा. अभी भी जिनशासन को दीप्त कर रही हैं। 13 मई 1994 से जिनवाणी की आजीवन सदस्यता 350 रुपये से बढ़ाकर 500 रुपये की गई। मुख वस्त्रिका स्थानकवासी परम्परा में यतना के लिए आवश्यक उपकरण स्वीकार किया गया है। इसकी अनिवार्यता पर श्री लालचन्द नाहटा केकड़ी का महत्त्वपूर्ण आलेख मई 1994 के अंक में प्रकाशित हुआ।

डॉ. धर्मचन्द जैन ने 'अपनी बात' के स्थान पर 'सम्पादकीय' नाम से विचारपूर्ण आलेख लिखना प्रारम्भ किया। उनका प्रथम आलेख 'लक्ष्मी की पूजा' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। तदनन्तर उपभोक्ता संस्कृति, समय, अप्रमाद आदि विभिन्न विषयों पर सम्पाकीय लिखे गये। प्रत्येक अंक में सम्पादकीय हेतु नवीन विषय निर्धारित किया गया। जिनवाणी का स्वरूप अधिकांश वही रहा, जो डॉ. नरेन्द्र भानावत एवं डॉ. शान्ता भानावत के समय था। प्रवचन, निबन्ध, प्रश्नमंच, कथा, प्रसंग, संवाद, कविता, विचार आदि के साथ साहित्य समीक्षा, समाज-दर्शन, शोक श्रद्धांजलि, साभार-प्राप्ति-स्वीकार के स्तम्भ प्रकाशित हो रहे थे। 26 सितम्बर 1994 को जोधपुर में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी श्री बदनकंवरजी म.सा. का 84 वर्ष की वय में लगभग 60 वर्ष की संयम पर्याय के साथ समाधिमरण हो गया, जिन पर एक परिचयात्मक आलेख विदुषी साध्वी श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. से प्राप्त

सामग्री के आधार पर प्रकाशित किया गया। वे सरलता, सहिष्णुता, सहजता, सहृदयता, संतोषवृत्ति जैसे सद्गुणों से सुशोभित थीं। 16 दिसम्बर 1994 को भोपालगढ़ में श्रद्धेय श्री दयामुनिजी म.सा. का समाधिपूर्वक देहावसान हो गया। आपने देवस्थान विभाग से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् दीक्षा अंगीकार की थी तथा 10 वर्षों तक शुद्ध संयम पर्याय का पालन किया।

जिनवाणी के अंकों पर पाठकों की प्रतिक्रियाएँ निरन्तर प्राप्त हो रही थीं। फरवरी 1995 के अंक में श्री केशरीचन्द सेठिया मद्रास ने जो प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की उसका कुछ अंश इस प्रकार हैं-''जिनवाणी का दिसम्बर 94 का अंक सामने है। आद्योपान्त पढ़ गया हूँ। समय का भान नहीं रहा। मुद्रण, साज-सज्जा तो उत्कृष्ट है ही, किन्तु इसकी उत्तम प्रकाशित सामग्री पठनीय, मननीय, चिन्तनीय, ज्ञानवर्द्धक एवं हृदयग्राही है।'' पूज्य आचार्य-प्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की 85वीं जन्मतिथि पर 15 जनवरी 1995 को पोरवाल, पल्लीवाल एवं हाड़ौती क्षेत्र की शाखाओं का श्री जैन रत्न युवक संघ का क्षेत्रीय सम्मेलन आयोजित हुआ। दार्शनिक, तात्त्विक एवं धार्मिक आलेख निरन्तर प्रकाशित हो रहे थे। श्रीमती मेनका गाँधी का 'आलेख शाकाहारी नहीं है चाँदी का वर्क भी' मार्च 1995 के अंक में प्रकाशित हुआ। श्री कन्हैयालाल जी लोढ़ा के 'पुण्य-पाप विषयक ज्ञातव्य तथ्य' विभिन्न अंकों में प्रकाशित हुए। ज्ञाताधर्मकथा पर आधारित कथाएँ एवं उसके पश्चात् उपासकदशांग के आधार पर श्रावकों का जीवन भी जिनवाणी में प्रकाशित हुआ, जिनका आलेखन धर्मचन्दजी जैन, अध्यापक द्वारा किया गया। श्री पी.एम. चोरडिया के प्रश्नमंच ने जिनवाणी के पाठकों को विभिन्न विषयों पर निरन्तर उपयोगी सामग्री प्रदान की। जिज्ञासा और समाधान शीर्षक से एक नया स्तम्भ प्रारम्भ हुआ, जिसमें आगमिक जिज्ञासाएँ एवं समाधान निरन्तर अनेक वर्षों तक प्रकाशित होते रहे। जैन आचार्यों द्वारा रचित प्रकीर्णक साहित्य विशिष्ट साहित्य है, जिसमें समाधिमरण का सम्यक् प्रतिपादन हुआ है। इस पर सम्पादक के चार(मार्च से जून) अंकों में आलेख प्रकाशित हुए।

युवक संघ के सदस्यों को जैन धर्म दर्शन का ज्ञान कराने के लक्ष्य से तृतीय धार्मिक शिविर महाबलेश्वर में 01 से 07 जून 1995 में आयोजित हुआ। साध्वीप्रमुखा मैनासुन्दरीजी म.सा. का महावीर की प्रमुख श्राविकाओं के सम्बन्ध में जून 1995 में महत्त्वपूर्ण आलेख प्रकाशित हुआ। उन्होंने 'सिसकते संस्कार और बढ़ती विकृतियाँ' विषय पर भी अपने विचार प्रकट किये, जो सितम्बर 1995 के अंक में प्रकाशित हैं। अंग्रेजी के आलेख भी स्थान पा रहे थे। अमेरिका के एमोरी विश्वविद्यालय अटलांटा के मधुर संचेती का आलेख 'Gandhian Concepts of Truth and Non-violence' प्रकाशित हुआ। 'The new allies : Science and Non-violence' शीर्षक से डी.आर.मेहता का आलेख तीन अंकों में प्रकाशित हुआ। अक्टूबर 1995 के अंक में 'हांगकांग में जैन धर्म' शीर्षक से सम्पादकीय लिखा गया, जिसमें वहाँ के जैन समाज एवं उनकी गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया। 15 नवम्बर 1995 को पण्डितरत्न श्री सुरेन्द्रमुनिजी म.सा. का भोपालगढ़ में लगभग 40 वर्ष की वय में 16 दिवसीय तप संथारे के साथ समाधिमरण हो गया। उन्हें श्रद्धांजलि दी गई तथा गुणानुवाद सभाओं का आयोजन हुआ। जिनवाणी समय-समय पर अहिंसा, शाकाहार एवं समाज हित में चेतना जाग्रत करती रहती है। जानवरों के द्वारा प्लास्टिक की थैलियाँ खाया जाना कितना खतरनाक है इस सम्बन्ध में जिनवाणी पत्रिका ने पाठकों को चेताया। अलवर, जयपुर आदि के निकट स्थापित होने वाले कत्लखानों का विरोध किया गया। हावड़ा जिले में स्थापित होने वाले आधुनिक मांस प्रसंस्करण संयंत्र का विरोध करने के लिए सितम्बर 1995 में सम्पादकीय लिखा गया।

आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. के 86वें जन्मदिवस पर श्रावकरत्न श्री रतनलालजी बाफना जलगांव द्वारा आगम-आराधना प्रोत्साहन योजना प्रारम्भ की गई, जिसके अन्तर्गत दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र, तत्त्वार्थ सूत्र आदि के अध्ययनों को कंठस्थ एवं अर्थसहित ज्ञान करने हेतु प्रोत्साहन मिला। श्री बाफना साहब ने आगे भी जैन धर्म का मौलिक इतिहास पर

प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं तथा समाज को स्वाध्याय से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। जुलाई 1996 के अंक में पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के विचार 'संघहित सर्वोपरि है' शीर्षक से प्रकाशित हुए- ''श्रावक-श्राविका हमारे अंगरक्षक हैं, जैसे देश की रक्षा के लिए योग्य शासक जरूरी है वैसे ही ईमानदार सैन्यदल भी आवश्यक है। अगर सैन्यदल ईमानदार नहीं होगा तो शासन गड़बड़ा जायेगा और भ्रष्टाचार दूर नहीं हो सकेगा। इसी प्रकार धर्म शासन में भी आचार्य, उपाध्याय आदि योग्य शासकों के साथ ईमानदार श्रावक-श्राविकाओं का सैन्यदल चाहिए। श्रावक-श्राविकाएँ साधु-साध्वियों के व्यक्तिगत लपेटे में नहीं आएं, वे संघ को मुख्य मानकर संयम के अनुरूप सेवा करें। संघ मुख्य है, व्यक्ति मुख्य नहीं। संघ सदा रहेगा, व्यक्ति सदा नहीं रहेगा।''

जिनवाणी में 'जिज्ञासा और समाधान' शीर्षक से कई वर्षों तक लगातार महत्त्वपूर्ण जिज्ञासाएँ और उनके समाधान प्रकाशित होते रहे। श्री पी.एम. चोरडिया का एक महत्त्वपूर्ण आलेख जुलाई 1995 में 'पर्युषणावधि में स्वाध्यायियों के कर्तव्य एवं आचार-संहिता' प्रकाशित हुआ। यह लेख आज भी स्वाध्यायियों के लिए मार्गदर्शन कर सकता है।

अगस्त 1996 में सम्यग्दर्शन विशेषांक प्रकाशित हुआ। इसके प्रथम खण्ड में सम्यग्दर्शन का तात्त्विक विवेचन करने वाले 48 प्रवचन व आलेख, द्वितीय खण्ड में सम्यग्दर्शन का जीवन व्यवहार में विवेचन करने वाले 25 आलेख तथा तृतीय खण्ड में विभिन्न धर्म-दर्शनों एवं तुलनात्मक आलेखों से सम्बद्ध 12 आलेख प्रकाशित हुए। एक परिशिष्ट भी प्रकाशित हुआ, जिसमें श्वेताम्बर, दिगम्बर ग्रन्थों के आधार पर सम्यग्दर्शन के स्वरूप का प्रतिपादन किया गया। विशेषांक में यथास्थान विचार, कविता, तथ्य एवं प्रसंग भी सम्यग्दर्शन का पोषण करते हैं। इस विशेषांक में आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा., आचार्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., आचार्यश्री जवाहरलालजी म.सा., आचार्यश्री आत्मारामजी म.सा., आचार्यश्री देवेन्द्रमुनि जी म.सा., आचार्यश्री नानालालजी म.सा., गणाधिपति श्री तुलसीजी, बहुश्रुत पण्डित श्री समरथमल जी म.सा., उपाध्यायश्री अमरमुनिजी म.सा., पण्डितश्री प्रकाशमुनिजी म.सा., जैन दिवाकरश्री चौथमलजी म.सा., श्रीमद् विजयराम चन्द्रसूरिजी म.सा. आदि संतप्रवरों के साथ डॉ. सागरमल जैन, डॉ. रामजीसिंह, डॉ. दयानन्द भार्गव आदि विद्वज्जनों के आलेख भी इस विशेषांक की शोभा बढ़ा रहे हैं। डॉ. जैन के सम्पादकत्व में लगभग 450 पृष्ठों का यह विशेषांक सर्वत्र पठनीय एवं संग्रणीय समझा गया। डॉ. महेन्द्र भानावत उदयपुर ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए लिखा-''जिनवाणी का सम्यग्दर्शन विशेषांक उत्कृष्ट जीवन जीने की एक मूल्यपरक उपलब्धि है। यह जैनों के लिए ही नहीं, उन सभी के लिए महत्त्वपूर्ण सामग्री उपलब्ध कराता है, जो मूल्यों के राष्ट्रव्यापी क्षरण के लिए सतत चिंतातुर हैं और मानवता की प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्नरत है।'' बम्बोरा से श्री दिलीप धींग ने लिखा- ''जिनवाणी के सम्यग्दर्शन विशेषांक का पारायण कर गया हूँ। बेशक! खूब श्रम और निष्ठा से आपने यह कार्य किया है। सम्यग्दर्शन पर अनेक कोणों/दृष्टियों से अनेक विचारकों के विचार संभवतः पहली दफा एक साथ प्रस्तुत किए गए हैं। विशेषांक खूब सहेजा-सराहा जायेगा।''

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा कार्यकारिणी बैठक में क्रियोद्धारक द्विशताब्दी वर्ष को साधना वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय किया गया। साधना वर्ष आयोजन समिति के अध्यक्ष पद का दायित्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा को सौंपा गया तथा त्याग-तप के साथ 21 संकल्पों हेतु श्रावक-श्राविकाओं द्वारा अधिक से अधिक भागीदारी निभाने हेतु आह्वान किया गया। वर्ष भर चले इस कार्यक्रम में न्यायाधिपति श्री चौपड़ा साहब ने देश के विभिन्न नगरों में भ्रमण कर साधना वर्ष में चेतना फूंकी। 19 से 22 जून 1997 तक जोधपुर में साधना समारोह का सम्पूर्ति कार्यक्रम आयोजित हुआ। चार दिनों के इस कार्यक्रम में गुरु महिमा, रात्रिभोजन त्याग, ब्रह्मचर्य, सदाचार, सप्तकुव्यसन त्याग, सामायिक-स्वाध्याय, अहिंसक जीवन पद्धति, श्रावकाचार विषयों पर विशिष्ट वक्ताओं के व्याख्यान हुए। वर्ष भर में लक्ष्य से अधिक सफलता प्राप्त हुई। 208

जीवनपर्यन्त चौविहार-त्यागी, 410 जीवन्तपर्यन्त रात्रिभोजन-त्यागी, 1755 सामूहिक भोज में रात्रिभोजन-त्यागी बने। इसी प्रकार मद्यपान, धूम्रपान, मांसाहार, सप्तकुव्यसन, जर्दा-गुटखा, तम्बाकू का त्याग भी स्वीकार किया गया। 546 बारहव्रतधारी श्रावक तथा 234 जीवन्तपर्यन्त शीलव्रती तैयार हुए। इस अवसर पर जुलाई-अगस्त 1997 का जिनवाणी अंक क्रियोद्धार चेतना अंक के रूप में प्रकाशित हुआ, जिसे पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के निर्मल, ओजस्वी एवं संयमी व्यक्तित्व को समर्पित किया गया। श्रावकाचार, संघ, रत्न सम्प्रदाय क्रियोद्धार आदि विभिन्न विषयों पर इस अंक में उपयोगी सामग्री उपलब्ध है। इस अंक में क्रियोद्धारक आचार्य श्री रत्नचन्द्रजी म.सा. द्वारा रचित भजनों एवं प्रार्थनाओं का भी सुन्दर संकलन हुआ है।

सितम्बर 1996 के अंक में 'क्रूरता विरहित सौन्दर्य प्रसाधन' सूची प्रकाशित हुई। सूत्रकृतांग सूत्र के प्रथम अध्ययन की एक-एक गाथाओं का हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद एवं विवेचन प्रकाशित होने लगा।

पूज्य आचार्यप्रवर के अजमेर चातुर्मास में लगभग 309 श्रावक/श्राविका बारहव्रती बने तथा 17 दम्पतियों ने शीलव्रत ग्रहण किया। संवत्सरी पर्व पर 300 से अधिक भाई-बहनों ने सामूहिक रूप में रात्रिभोजन न करने का संकल्प ग्रहण किया। यहाँ 27 अक्टूबर को आयोजित संघ की आमसभा में संघ के विधान का संशोधित प्रारूप पारित किया गया। जिनवाणी 80 पृष्ठों में प्रकाशित हो रही थी, अतः कई बार समाचार का आधिक्य होने पर अक्षरों को छोटा कर दिया जाता था। विवाह समारोह में होने वाली फूलों की वर्षा के विरोध में भी जिनवाणी में डॉ. उदयलाल जारोली एवं श्री रिखबराज कर्णावट के आलेख प्रकाशित हुए। पशुओं पर होने वाले अत्याचार रोकने हेतु विचारात्मक एवं प्रस्तावात्मक आलेख के द्वारा जिनवाणी ने एक मुहिम चलाई। स्वाध्यायियों को प्रोत्साहन देने हेतु अब दो स्वाध्यायियों का परिचय जिनवाणी में प्रकाशित होने लगा। पाली में सामायिक-स्वाध्याय भवन का 17 नवम्बर 1996 को उद्घाटन सम्पन्न हुआ।

समय-समय पर बाल-दीक्षा के विरोध में स्वर उठते रहे हैं। जिनवाणी पत्रिका ने इन स्वरों को प्रभावहीन बनाने में भूमिका अदा की। फरवरी एवं मार्च 1997 का सम्पादकीय बाल-दीक्षा को समर्पित रहा एवं राजस्थान उच्च न्यायालय जोधपुर ने भी 21 फरवरी 1997 को अपने ऐतिहासिक निर्णय में बाल-दीक्षा को उपयुक्त ठहराया। निर्णय जिनवाणी (मार्च 1997, पृष्ठ 39-41) में प्रकाशित हुआ। मार्च अंक बाल-दीक्षा के समर्थन में समर्पित रहा, जिसमें अनेक आलेख इसी विषय पर केन्द्रित रहे। श्री जैन रत्न युवक संघ शाखा पीपाड़ के सौजन्य से ज्ञानवर्धक वर्गपहेली प्रतियोगिता प्रारम्भ हुई, जो कुछ अंकों तक निरन्तर चलती रही। श्री रमेशमुनिजी शास्त्री का 'कर्मसिद्धान्त : स्वरूप और चिन्तन' आलेख चार अंकों में प्रकाशित हुआ। जिनवाणी में एक प्रेरक समाचार प्रकाशित हुआ, जिसमें उल्लेख किया गया कि जोधपुर के श्री आनन्दराजजी भंसाली ने प्रज्ञाचक्षु होने के पश्चात् छह कर्मग्रन्थ कण्ठस्थ किए। श्राविका संघ द्वारा विभिन्न वर्गों की परीक्षाएँ आयोजित की जाने लगीं। स्वाध्याय संघ द्वारा भी इस प्रकार की परीक्षाएँ ली जा रही थीं। परिष्ठापनिका समिति को लेकर श्रावक संघ में ऊहापोह होता रहता है। श्री हीरालाल मोहनलाल तुरखिया ने अपने आलेख में उपासरे के समीप परठने योग्य भूमि छोड़ने का सुझाव दिया। युवक संघ अपने विभिन्न कार्यक्रमों के साथ गोवंश को बचाने के लिए भी सक्रिय हुआ। जैन रत्न युवक संघ जोधपुर द्वारा 160 बछड़ों को अभयदान देकर उन्हें कत्लखानें ले जाने से बचाया गया। सवाईमाधोपुर आदि स्थानों पर भी यह सक्रियता देखी गई।

श्री स्थानकवासी जैन संघ मैसूर ने निर्णय लिया कि सामूहिक प्रीतिभोज में 16 व्यंजनों से अधिक खाद्य सामग्री नहीं होगी, जमीकंद का प्रयोग वर्जित रहेगा तथा मांसाहारी एवं मिश्रित होटलों में विवाह समारोह का आयोजन नहीं किया जायेगा। (मई 1997, पृष्ठ 61)। वयोवृद्ध श्री राममुनिजी म.सा. का 18 मई 1997 को स्वर्गगमन हो गया। आपने 66 वर्ष की वय में प्रव्रज्या अंगीकार कर 10 वर्ष से अधिक संयम पर्याय का पालन किया।

(क्रमशः)

विचार-वारिधि

समकित, गुरु और श्रद्धा

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.

- समकित किसी को दी या ली नहीं जा सकती। वह तो वास्तव में आत्मा का गुण है। मोह का आवरण दूर करने पर स्वतः प्राप्त होती है। व्यवहार में तत्त्व समझाने की दृष्टि से सम्यक्त्व देना कहते हैं और बोधदाता गुरु को सम्यक्त्वदाता कहते हैं। असलियत में सम्यग्दर्शन आत्मा का ही गुण है।
- मनुष्य बच्चों के घरोंदे की तरह नाशवान को ही बनाने का प्रयत्न करता है। जो अपना और अविनाशी है उसको बनाने की फिक्र नहीं करता, वह अज्ञान और मोह के पर्दे में सत्य को नहीं देख सकता। यदि इन पर्दों को दूर कर लिया जाय तो पूर्णता और प्रकाश दूर नहीं।
- जिस प्रकार दर्शनशक्ति से शून्य आँखें होकर भी व्यर्थ हैं, ठीक उसी प्रकार धर्म के बिना कुबेर का भण्डार, भीम का बल, वैज्ञानिकों का विज्ञान, काम का सौन्दर्य, वसुन्धरा का धन व रत्नाकर के रत्न सब व्यर्थ हैं।
- अनुशासन का संघ में कठोरता से पालन हो। ढुलमुल नीति से संघ का तेज अक्षुण्ण नहीं रहेगा। वर्तमान में कई स्थानों पर स्मारक, मूर्ति और कीर्तिस्तम्भ बन रहे हैं। यह श्रमण संस्कृति के सर्वथा विपरीत है।
- आप में से बहुत से भाई पिता बने हुए हैं। बालक के लालन-पालन व रक्षण में हजारों रुपया पूरा कर देते हैं। समझते हैं कि बच्चे को पढ़ा लिखा शादी कर काम लायक कर देना हमारा फर्ज है, किन्तु उसको सद्ज्ञान देना, सुनीति एवं सदाचारमय जीवन बनाना फर्ज नहीं है क्या?
- गुरु कर्म काटने का मार्ग बतलाते हैं, परन्तु कर्म स्वयं को काटना पड़ता है। जैसे किसी अटवी को पार करते समय अकेले यात्री को पीछे कदम रखता हुआ जवान साथी मिल जाय तो साहस आ जाता है। वैसे ही जीव को सद्गुरु के सहयोग से बल मिलता है।
- साधु और श्रावक की श्रद्धा और प्ररूपणा में साम्य तथा स्पर्शना में अंतर है। गृहस्थ संसार में रहते हुए संपूर्ण हिंसा आदि पापों का त्याग नहीं कर सकता है, फिर भी उसका विचार शुद्ध होता है, वह पाप को पाप और षट्कायिक जीवों को अपने समान समझता है। चतुर्थ से तेरहवें गुणस्थान तक की श्रद्धा प्ररूपणा एक है, समान है, क्षयोपशम का अंतर होने पर भी दोनों की दृष्टि एक है। ज्ञान के बिना कषाय का जोर नहीं हटता, आप भी स्वाध्याय शील रहें तो आचार की त्रुटियाँ सहज दूर हो सकती हैं।
- सापेक्ष वचन सत्य है। सिक्के का एक बाजू मुद्रांकित और दूसरा राज सिंहासन अशोक चक्र वाला है। सिक्के के दोनों बाजू समझने पर ही उसका पूर्ण परिचय हो सकता है। मंडप का खंभ मेरी दृष्टि से पूर्व में ही है, पूर्व वाले की अपेक्षा पश्चिम, दक्षिण वाले से उत्तर और उत्तर वाले से दक्षिण में कहना सर्वमान्य है। प्रत्येक वचन अपना कथन करता है पर दूसरे का निषेध नहीं करता, यही सुनय है।
- त्यागी पुरुष संसार के भोगों का अमूर्छित भाव से उपभोग कर मधुमक्खी की तरह उड़ जाता है, किन्तु रागी-अज्ञानी मल की मक्खी की तरह फंस कर प्राण गंवा देता है। दुःखमय संसार में प्राणियों की रति देख कर शास्त्रकार भी आश्चर्य करते हैं-"अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो।"

-'नमो पुरिसवरगंधहत्थीणं' ग्रन्थ से साभार

प्रवचन

पाया है तो दे दे प्यारे

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.

सरस व्याख्यानी, महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. द्वारा जैन स्थानक-भोपालगढ़ में 23 अगस्त, 2017 को फरमाए इस प्रवचन का आशुलेखन जिनवाणी के सह-सम्पादक श्री नौरतमलजी मेहता द्वारा किया गया।-**सम्पादक**

जो होते हैं शूर-पापों से होते हैं दूर, कर्मों को कर दिया चकनाचूर और जिनका ज्ञान होता है भरपूर, ऐसे अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् आर्य सुधर्मा के शासन के सफल संचालक कुशलवंश के कुशल संवाहक गणिरत्न के मर्यादा-पालक, गुरु हस्ती के संघ के संवर्धक, जीवन-नया के निर्णायक, चतुर्विध संघ के नायक अनन्त उपकारी आचार्य भगवन्त के चरणों में वन्दना करने के पश्चात्.....।

बन्धुओं!

''दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं'', का उद्घोष करने वाला पर्वाधिराज पर्युषण पर्व का आज पंचम दिवस अर्जन के साथ विसर्जन की प्रेरणा प्रदानकर रहा है। इस सूत्र का कथन है-

पाया है तो दे दे प्यारे,
पाय पाय फिर खोना क्या,
नर जाग गया फिर सोना क्या?
जिण अखियन में नींद घणेरी,
तकिया और बिछौना क्या
नर जाग गया फिर सोना क्या?

आज का दिन अर्जन के साथ विसर्जन और पाने के साथ देने की प्रेरणा दे रहा है। प्रश्न होता है-दान क्या? दान क्यों देना चाहिए? देने का क्या फायदा होने वाला है? आप बोलते हैं ना- 'हाथ रो दियो ऐ लो नहीं जावें। दिया हुआ कभी निष्फल होने वाला नहीं है। खेत में बीज बोया, फसल आयेगी या नहीं, निश्चित नहीं है। व्यापार में धन लगाया, लाभ होगा या नहीं वह भी निश्चित नहीं है। पर, हाथ से दिया कभी निष्फल नहीं होता।

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज एक कविता फरमाते थे, जिसका तात्पर्य है कि मैं आपको ऐसा व्यापार बताता हूँ जो आपका धन दुगुना, चौगुना, सहस्र गुना ही नहीं, अनन्त गुना हो जायेगा। गुरुदेव कहते थे- ''ब्याज से धन दो गुना हो सकता है तो व्यापार से धन चार गुना बढ़ सकता है। खेत में बीज डालें तो वह हजार गुना हो सकता है, लेकिन दान देने पर वह अनन्त गुना हो सकता है। आपको ब्याज का पता है। आप कहते भी हैं- बेटो कमावे चार प्रहर, ब्याज कमावे आठ प्रहर।''

दिया तो चन्दनबाला ने भी था। चन्दनबाला ने क्या दिया? महाराज कभी लूखा फलका मांग ले तो ये बहिनें लूखा फलका बहराती नहीं है। कभी-कभी तो इनकी बात जुबान पर भी आ जाती है- ''लूखो फलको बहराऊँला, तो म्हने लूखो मिलेला।'' आपने अनुभव किया होगा- गाय घास खाती है, पर देती दूध है। चन्दनबाला ने उड़द के बाकले बहराए। उस दान के परिणामस्वरूप साढ़े बारह करोड़ स्वर्ण मुद्रा की वर्षा हुई।

द्रव्य दान से द्रव्य फल मिलेगा, इसमें कोई आश्चर्य नहीं, चन्दनबाला भगवान के चरणों में दीक्षित हुई तो छत्तीस हजार साध्वियों की मुखिया बन गई। यह है दान का परिणाम। आपने सुना है नयसार के भव में दान देने से भगवान महावीर का जीव संसार से परित हो जाता है। दाखों का पानी दान देने

से, खीर का दान देने से क्या हुआ, आप जानते हैं, कई बार सुनते हैं इसलिए उसे दोहराने की जरूरत नहीं पर 'हाथ रो दियो ऐलो (खाली) नहीं जावे।'

आचार्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज फरमाते थे, हमने पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज के मुखारविन्द से सुना, वह आपको सुनाना चाहता हूँ। आप याचक को दें, गरीब को दें, भी खारी को दें यहाँ तक कि आप दुश्मन को भी दें तो हाथ का दिया कभी व्यर्थ नहीं जाता। कथा भाग में वर्णन आता है- आज रात को एक सर्प आएगा, वह डसेगा। महाराज की बात पर जिसे विश्वास नहीं था पर यही बात कोई ज्योतिषी कह दे तो उस पर विश्वास होगा या नहीं? आप ज्योतिषी की बात पर विश्वास करेंगे। निमितज्ञ ने कहा- सांप आकर डसने वाला है।

सायं का समय होता है, जिस रास्ते से सर्प के आने का अन्दाज रहता है, उस रास्ते पर दूध का कटौरा रख दिया जाता है। सर्प दूध पीकर वापस लौट जाता है। दान देने से मौत टल गई इसीलिए कहा जाता है कि हाथ का दिया व्यर्थ नहीं जाता। आगम के वचन हैं- अभयदान और सुपात्रदान तो लाभ के कारण हैं ही, किसी को भी दान देंगे तो वह लाभ का ही कारण है।

आज दान-दिवस है। पाया है तो दे दे प्यारे। आप दोगे नहीं और संग्रह ही संग्रह करते जाओगे, अर्जन ही अर्जन करते रहोगे और विसर्जन नहीं करोगे तो बीमार हो जाओगे। दान परित-संसारी बनने का परमिट है, दान मुक्ति में जाने का एडमिशन है।

संग्रह ही संग्रह करोगे तो रोगी बन जाओगे। कोई खाता ही खाता रहे और जाये नहीं तो? पेट फूल जाएगा, आफरा आ जाएगा, शरीर ही नहीं, मन भी खिन्न रहेगा। इसीलिए कहा अर्जन करो तो विसर्जन भी करो। पाया है तो दो।

दान क्यों देना चाहिए? जो देता है वह मीठा होता है। लेता है वह खारा होता है। एक बच्चा पिता के साथ जा रहा था। जाते-जाते उसे प्यास लगी। बच्चे ने पिता से कहा- "मुझे प्यास लगी है, पानी पीलाओ।" पिता ने नदी से गिलास भरकर बच्चे को दे दी। बच्चे ने देखा- "पानी मीठा है, स्वादु है।" आगे चलने पर बच्चे ने समुद्र देखा। बच्चे ने कभी इतना पानी नहीं देखा था। बच्चे ने पानी देखकर फिर से कहा- मुझे पानी पीना है। पापा ने समुद्र के पानी का गिलास भरा और दे दी बच्चे के हाथ में। बच्चे ने पानी पीया तो खारा लगा, वह पी नहीं सका, उसे उल्टी होने लगी।

संग्रह करने वाला समुद्र के पानी की तरह से खारा होता है। जो लुटाता है, सबको देता है, नदी के पानी की तरह मीठा होता है। नदी जब बहती है तो सबको पानी देती हुई जाती है इसीलिए कहा जा सकता है दान देने से धन घटता नहीं। आपने वह दोहा तो सुना ही होगा-

चीड़ी चोंच भर ले गई, नदी न घटियो नीर।
दान दिया धन ना घटे, कह गए संत कबीर।।

आप मेरे से आगे-आगे बोलते हैं इसका मतलब आप-सब जानते हैं। हाँ, कुछ हैं, जो कहते हैं कि देते ही देते रहने से राजाओं के रजवाड़े और सेठों की तिजोरियें खाली हो जाती है, पर ऐसा नहीं होता। यह तो कहने वालों ने बात कही होगी। आपने यह भी सुना है कि तीर्थंकर भगवन्त जब दीक्षा लेते हैं तो प्रतिदिन एक करोड़ स्वर्ण मुद्राएँ दान करते हैं। वह दान एक दिन, एक सप्ताह अथवा एक महीने का नहीं, एक वर्ष तक निरन्तर चलता है। जब दीक्षा के लिए उद्यत होते हैं तब से वर्षीदान शुरू होता है और एक वर्ष तक चलता है। उनके भण्डार खाली नहीं होते, देवता उनके भण्डार को भरते रहते हैं।

दान देने से धन घटने वाला नहीं है। दान देने से तो धन बढ़ता है। आपने देखा होगा चने के खेत में जब बूंट आती है, तब राह में जो भी आता-जाता है, वह चने की बूंट को चूंटता है।

ज्यों-ज्यों चूंटता है चने की नई-नई बूंटे निकलती रहती है। दान देने वाला मीठा होता है। खाओगे तो बदबू होगी, खिलाओगे तो खुशबू बढ़ेगी। आप जानते हैं- 'उतरियो घाटी, हुय्यो माटी।'

हमारे पढ़ने में आया कि दान वशीकरण मंत्र है। दान उदारता का प्रतीक है। श्रावक के छह कर्त्तव्यों में दान करणीय है और प्रतिदिन करणीय है। मानव का प्रथम धर्म दान है। दान देने के अनेक कारण बताए जा रहे हैं। लिया-ही-लिया जायेगा, तो लेने वाला विष उगलेगा। आपने सर्प देखा है। सांप के मलद्वार नहीं होता, ऐसा मैंने सुना है। सांप जो खाता है वह शरीर में रहता है। सांप खाता ही खाता है तो विष निगलता है। सांप को दूध पिलाया जाता है, वह भी ज़हर बनता है।

दान के अनेक उदाहरण रखे जा सकते हैं। गुरुदेव फरमाते हैं- तपस्या करने से कर्मों की निर्जरा होती है। देने वाला और लेने वाला दोनों की भावना शुद्ध होनी चाहिए। नहीं तो फिर गुरु लोभी, चेला लालची वाली कहावत चरितार्थ हो जाएगी। आदमी देता थोड़ा है और चाहता ज्यादा, तो फिर उसके लिए कहा जाता है-

ऐरण री चोरी करे, दे सुई रो दान।
ऊपर चढ़ने देखसी, कद आसी विमान।।

आप जानते हैं ऐरण बहुत भारी होता है। चोरी तो खूब करे और दान के नाम पर सुई जितना दान देकर सोचे कि मैंने दान दिया है, मेरे लिए विमान आएगा तो विमान आने वाला नहीं है। दान में भावना की शुद्धता जरूरी है। चन्दनबाला ने उड़द के बाकुले का दान किया। आज कई बहिनें चन्दनबाला के तेले करती हैं। वे हमसे कहती हैं- ''बाबजी! आप गोचरी पधारो तो म्हारो ध्यान राखजो, म्हारे चंदनबाला रो तेलो करियोड़ो है।'' महाराज निमन्त्रण स्वीकार नहीं करते और जो निमन्त्रण स्वीकार करते हैं वे सच्चे साधु नहीं होते। बहिन का ऐसा कहना निमन्त्रण नहीं तो क्या है?

दान कौन दे सकता है? दान का भूषण क्या? दान का दूषण क्या? मैं सब बातें रखूँ उतना समय नहीं है, पर दान सब दे सकते हैं। सेठ-साहूकार दे सकता है तो गरीब-से-गरीब भी दान दे सकता है। दान देने वालों को धन की ममता हटानी होगी। तप कौन कर सकता है जो तन की ममता घटाता है, इसी तरह दान भी वही दे सकेगा जो धन की ममता छोड़ता है।

दातारों का मजा यही,
खाने और खिलाने में।
कंजूसों का मजा यही,
धन जोड़-जोड़ मर जाने में।।

सूर्य का स्वभाव देने का है। सूर्य सब जगह प्रकाश करता है। आप मांगों तब भी, नहीं मांगों तब भी, सूर्य का प्रकाश सब जगह होता है। दाता बिना मांगे देता है जबकि कंजूस और मक्खीसूच चाहे जितनी बार मांग लो, देने का नाम नहीं।

कंजूस किसे कहते हैं? मौसमी में रस होता है उसे ज्यूस कहते हैं और जो खुद न तो खाता है, न किसी को खाने देता, वह कंजूस होता है। बिल्ली आपने देखी है। बिल्ली का स्वभाव होता है दूध मिल गया, बिल्ली दूध पीती है। वह दूध को पीए या नहीं पीए, परन्तु उसे धरती पर फैला देती है।

अकबर ने बीरबल से पूछा- ''हथेली में केश क्यों नहीं होते?''

अकबर के दरबार में बीरबल अकेला तो था नहीं, बहुत से लोग बैठे थे। उन्होंने बारी-बारी अपनी बात कही। बीरबल से पूछा गया तो उसने कहा- ''हजूर! आपके देते-देते हाथ साफ हो गए। आप रोज-रोज देते ही देते हैं, आपके हाथ देते-देते साफ हैं, कहीं केश (बाल) नहीं।''

बीरबल यह बताओ कि तुम्हारे हाथ साफ कैसे?

हजूर! मेरे हाथ लेते-लेते साफ हो गए हैं।

बादशाह ने कहा- "ये जितने भी लोग हैं उनके हाथों में केश क्यों नहीं?"

बीरबल बोला- आपके हाथ देते-देते और मेरे हाथ लेते-लेते साफ हो गए, ये जो लोग हैं इनको कुछ नहीं मिला तो हाथ मलते-मलते इनके हाथ भी साफ हैं।

आज दान-दिवस है। पर्वाधिराज पर्युषण पर्व में प्रारम्भ के ये सात दिन एक प्रकार से आत्मशुद्धि का सप्ताह है। आज देश-प्रदेश में कभी 'सफाई' सप्ताह मनाया जाता है तो ज्ञान के लिए 'स्कूल चलो' सप्ताह मनाया जाता वैसे ही संवत्सरी के पूर्व हम आत्मशुद्धि का सप्ताह मनाते हैं।

हम सब दान कर सकते हैं समय-दानी भी हैं तो सद् विचारों का दान भी किया जा सकता है। आगम में दस प्रकार के दान कहे गए हैं। महासती ज्ञानलताजी आज 53 साल की हो गई है।

दीक्षा के 34 साल हो गए हैं। पाँच समिति-तीन गुप्ति की आराधना प्रशंसनीय है। जन्म का अनुमोदन नहीं है। अनुमोदना है पाँच समिति-तीन गुप्ति की साधना की। इनकी संयम-साधना निरन्तर बढ़ती जाय। इनकी दीक्षा 2040 में हुई। इनकी दीक्षा के सात दिन पहले प्रमोदमुनिजी की दीक्षा हुई थी। सात दिन बाद मद्रास में ज्ञानलताजी-दर्शनलताजी और चारित्रलताजी की दीक्षा हुई। आप स्वास्थ्य-समाधि के साथ अपने अध्यवसायों में आगे बढ़ती रहें, यही मंगल मनीषा है।

ध्यान की उपयोगिता

श्री पूनमचन्द मुणोत

ध्यान और साधना का अटूट सम्बन्ध है। किसी भी प्रकार की साधना क्यों न हो, उसमें ध्यान को स्थान रहता ही है। प्राचीन ग्रंथों में ध्यान के विषय में अवश्य ही विधान है। अध्यात्म क्षेत्र की कोई ऐसी साधना नहीं, जिसमें ध्यान का स्थान न हो। योगशास्त्र ही नहीं, आज का मनोविज्ञान भी ध्यान को महत्त्व देता है और उसका प्रयोग भी करता है। यन्त्र, मंत्र, तंत्र सभी साधनाओं में ध्यान के विविध रूपों का विधान किया गया है। जप में ध्यान को स्थान मिलता है। तप, ध्यान और जप विषयक जो प्राचीन उल्लेख उपलब्ध होते हैं, उससे ज्ञात होता है कि ध्यान को साधना का मुख्य अंग साधकों ने स्वीकार किया है।

ध्यान चेतना की वह अवस्था है, जहाँ समस्त अनुभूतियाँ एक ही अनुभूति में विलीन हो जाती हैं, विचारों में सामंजस्य आ जाता है, परिधियाँ टूट जाती हैं, भेद रेखाएँ मिट जाती हैं। जीवन स्वतन्त्रता की इस अखण्ड अनुभूति में जीवात्मा परमात्मा बन जाता है।

ध्यान आत्मा की एक शक्ति है। ध्यान के बिना ध्येय की पूर्ति एवं प्राप्ति नहीं की जा सकती। स्वाध्याय और ध्यान तो मन की साधना के मुख्य अंग हैं, प्रातः जल्दी उठकर सबसे पहले ध्यान, बाद में स्वाध्याय। स्वाध्याय और ध्यान से मन बड़ा प्रसन्न रहता है। स्वाध्याय से ज्ञान की प्राप्ति होती है। ध्यान के मुख्य तीन लाभ हैं-

1. ध्यान करने से मन शान्त और प्रसन्न रहता है। मनोबल में भी वृद्धि होती है। अनुभूति बढ़ती जाती है।
2. जब मन इधर-उधर हो जाता है, तब ध्यान की साधना से उसे केन्द्रित किया जा सकता है।
3. ध्यान से मनुष्य की मानसिक शक्ति बढ़ जाती है। ध्यान आत्मा की एक अद्भुत शक्ति है। ध्यान जीवन का बल है।

ध्यान से मन की शक्ति और मौन से वाणी की शक्ति बढ़ती है। धर्म साधना के इतिहास में ध्यान और मौन दोनों का ही अत्यन्त महत्त्व रहा है। बहुत से संत आज भी सप्ताह में एक दिन मौन रखते हैं और प्रतिदिन ध्यान की साधना भी करते हैं।

(जिनवाणी, अगस्त 1981 से गृहीत)

प्रेरणा देते दो प्रसंग

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

प्रभाव, स्वभाव, निभाव से श्रेष्ठ है- भाव। भाव भव भ्रमणता को समाप्त करता है तो प्रभुता को सम्प्राप्त कराता है। भाव से अणु भी विराट बन जाता है। भाव का प्रभाव जीवन में जगह-जगह देखने को मिल ही जाता है। आगम में सुपात्रदान के लिए गृहस्थ को नित्य भावना भाने का संदेश दिया है। आज भावना कम भाते हैं, आमन्त्रण दे डालते हैं। जबकि आहार ग्रहण के पूर्व आहार दान की भावना भाने से महान् निर्जरा का लाभ मिलता है।

चातुर्मास का प्रथम दिन एक बंधु दर्शन-वन्दन कर बोले- 'मत्थएण वंदामि'। मैं जन्म से जैन नहीं हूँ पर एक महासतीजी की कृपा हुई और मैं जैन धर्म की कुछ बातें सीख पाया, सिद्धान्त समझ पाया हूँ।

मेरा निवेदन है हम भी इसी शहर में रहते हैं, आपके अनुकूलता हो तब हमें भी आहार दान, सुपात्र दान का लाभ दिरावें।

कुछ दिवस पश्चात् सन्त आहारार्थ उनके घर पहुँचे। वहाँ देखा कि वे बंधु गृहद्वार पर कुर्सी लगा लेखन कार्य कर रहे हैं। नज़र पड़ते ही क्या हर्षित, क्या प्रफुल्लित, क्या प्रसन्नवदन हुए। संत स्वयं उनकी भाव भक्ति देख प्रसन्न हो गए।

पहुँचे रसोई में सभी वस्तुएँ निर्दोष प्रासुक सूझती। गवेषणा द्वारा पता चला नित्य का नियम है वस्तु तैयार होने के बाद 12 बजे तक सूझती ही रखी जाए चाहे क्यों नहीं संत-सती कल ही घर फरस चुके हैं तो भी रोज-रोज यही क्रम। उदार भाव, उत्तम भाव से आहार दान।

भीगे नयनों से प्रवचन श्रवण, अस्खलित गति से प्रवचन लेखन यही उनका नित्य क्रम। प्रवचन पश्चात् आमंत्रण नहीं, भक्तिभाव युक्त प्रार्थना- 'मेरी विनति झोली में रखना।'

एक दिवस संत ने पूछा- ''क्या आप रोज ऐसे ही गृहद्वार पर कुर्सी लगा कर बैठते हैं?''

हाँ भगवन्! 12 बजे तक भावना भाता हूँ, लाभ मिल जाए तो मेरी किस्मत, नहीं तो गाय को रोटी डालता हूँ फिर ही खाता हूँ, जिस दिन गुरु नहीं उस दिन गाय को देकर ही संतुष्ट होता हूँ।

संत ने कई बार अनुभव किया कि एक दिन छोड़, दो दिन छोड़, 4 दिन छोड़, 15 दिन छोड़ गोचरी को उनके यही पहुँचे, पर वो कभी भी परीक्षा में अनुत्तीर्ण नहीं हुए।

धरती पर आज भी ऐसे भाव वाले पुण्यशाली जीव हैं, जिन्हें देखकर लगता है जिनवाणी आज भी जीवन्त है। जन्म से नहीं जीवन से धर्म स्वीकारें। संकल्प की पूर्ति के स्वप्न देखने वाले धरती पर लाखों मिलते हैं, पर विरले होते हैं जो स्वप्न पूर्ति के लिए संकल्पबद्ध होते हैं और उस स्वप्न पूर्ति के लिए हर स्तर तक का त्याग और प्रयास करने के लिए मानसबद्ध होते हैं। और वह भी स्वप्न-संसार का भोग का, धन का नहीं, क्योंकि ऐसी अनेक राजकुमारियाँ थीं जिन्होंने स्वप्न पूर्ति के लिए कई कुकृत्य हिंसाएँ की। ऐसे राजा महाराजा थे, जिन्होंने स्वप्न पूर्ति के लिए युद्ध लड़े। अनेक माताएँ भी हैं जिन्हें गर्भ में आने पर संतान स्वप्न देती हैं, माँ संतति सुरक्षा के लिए उस स्वप्न का पोषण करती, सुरक्षा करती है। पर धर्म-धर्म गुरु के लिए आने वाले स्वप्न को साकार करने का सत्व मात्र समर्पण में है।

बात सन् 2006 की है। एक महासंघ की पुरजोर विनती चातुर्मास की। इतने में एक छोटा सा संघ आया विनती लेकर, न पूर्व परिचित न परिपूर्ण साधन। पर एक ही बात मुझे आप का चातुर्मास कराने का स्वप्न

आया है। उस परिवार ने अपनी पूरी भक्ति और शक्ति लगा दी, आखिर भक्त के बस में भगवान होते हैं।

चातुर्मास का सहवास मिला, स्वीकृति मिली। हर कार्य में पूरे परिवार की भागीदारी चाहे प्रवचन श्रवण, चाहे गोचरी सेवा, चाहे स्थानक की देखरेख हो चाहे गुरु भक्तों की सेवा शुश्रूषा, भोजन व्यवस्था हो या आवास व्यवस्था सब में से दोनों भाई नज़र आते ही।

एक दिन एक व्यक्ति आया, महाराज साहब इतने छोटे से गाँव में सब सुव्यवस्थित व्यवस्था, वास्तव में इसके पीछे सम्पत्ति ही नहीं गजब का सत्त्व है। क्या है भाई! भगवन् ये जो भाई हैं उन्होंने चातुर्मास को सफल बनाने के लिए पाँच माह के लिए अपनी दुकान ही बंद कर दी है।

धरती पर सेवा करने वाले किस हद तक त्याग कर सकते हैं, यह उन्हें देखकर लगा। अस्वस्थता, बाजार मंदी, कोई गृह प्रसंग, प्रतिकूलता चलते व्यक्ति दुकान-ऑफिस न जाए समझ में आता है, पर धर्मगुरु के चातुर्मास को यशस्वी सफल बनाने के लिए व्यवसाय से ही छुट्टी।

धन्य है उनके ऐसे सत्त्व, सद्भाव और समर्पण को।

आस्था से आनन्द

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.

भगवान महावीर का संदेश है- व्यक्ति जन्म से नहीं, कर्म से महान् बनता है। जब जीव संस्कार प्राप्त करता है, तो उसके भीतर में भी महानता सहज आकार लेने लगती है, वह संस्कार बीज से वृक्ष बनने लगता है। क्योंकि व्यक्ति गहराई से, आत्मीयता से, प्यास से जिसे पाता है उसे सहेज संभालकर रखता है और संवर्द्धित करता है।

घटना क्रम हैः- मुम्बई सन् 2002 का चातुर्मास, एक बिहारी सेवक, जिस सेठ के यहाँ कार्यरत था। वह सेठ उदार, दयालु, श्रद्धालु था एवं अपने कर्मकरों (कुटुम्बीजन सदृश नौकरों) को निर्देश दे रखा था कि- ''देखो बहुत ही पुण्यवानी से अपने नजदीक गुरु भगवन्त का चातुर्मास प्राप्त हुआ है, तुम में से जो भी जाना चाहे वह दर्शन, वन्दन, प्रवचन-श्रवण के लिए जा सकता है, पीछे काम की चिन्ता न करें, कोई दूसरा जिम्मेदारी समझकर कर लेगा।''

तो वह बिहारी आता है और बड़े भक्तिभाव से संतों के पास बैठता, उनकी बातें ध्यान से सुनता। चार महीने में उसने नवकार मंत्र, वंदन सूत्र एवं कई भजन याद कर लिये। चातुर्मास के अन्तिम दिन संत ने कहा कि कुछ परेशानी........। मत्थएणवंदामि। ऐसे तो जिन्दगी दुःख का ही नाम है, पर सेठ बहुत अच्छे हैं। रोटी, पानी, दवा, पगार की कोई चिन्ता नहीं, पर अब एक काम और अच्छा हो गया कि घर का काम करते- पहले माँ-बाप, पत्नी-परिवार की याद आती, चिन्ता सताती और रोना आता था, पर अब नवकार मंत्र गुनगुनाता रहता हूँ- काम करता रहता हूँ। मस्त-मंत्र मिल गया चिन्ता का हरण का, कष्ट निवारण का। कुछ समय (वर्ष) पश्चात् सेठ के साथ पुनः दर्शन को आया। देखने के साथ आँखें सावन-भादों बरसाने लगी।

संत ने पूछा- क्या बात है भाई?

महाराज साहब! अब तो मंत्र रग-रग में बसा हुआ है, दुःख परेशानी की- चिन्ता की चिता जल गयी।

सुनाओ- नवकार मंत्र।

उसने (बिहारी) भाव-भक्ति और लयबद्धता से जो नवकार मंत्र सुनाया, सुनकर- सन्त के, श्रावकों के कोर भी भीग गये। जैनेतर होकर भी जैन से बेहतर नवकार मंत्र पर श्रद्धा-आस्था।

इस प्रसंग में वो सेठजी थे श्री मोफतराजजी मुणोत एवं कार्यकर भाई था श्री दिलीप जो बिहार के मधुबनी जिला से था।

आचार्यश्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 55 वें दीक्षा-दिवस पर श्रद्धा-भक्ति एवं समर्पण का सैलाब

श्री नौरतनमल मेहता

1. मंगलप्रभात में 108 गुरु-भक्तों द्वारा संघनायक के श्री चरणों में 108 बार वन्दन।
2. सैकड़ों भक्तों द्वारा दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं त्याग-तप के साथ व्रत-प्रत्याख्यानों के प्रति उत्साह।
3. दो विरक्त बहिनों के परिवारजनों द्वारा आज्ञा-पत्र संघनायक के श्रीचरणों में समर्पित।
4. तप-साधिका श्रीमती सुमनजी धर्मपत्नी श्री रविन्द्रजी लूंकड़ ने 36 दिवसीय तपस्या की, श्रीमती गंगादेवीजी धर्मपत्नी श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल (मंत्री-श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़) एवं श्रीमती कान्तादेवी जी धर्मपत्नी श्री धर्मचन्दजी कांकरिया ने दस-दस के प्रत्याख्यान लिए।
5. 36 दिवसीय तप-साधना के प्रत्याख्यान।
6. 55 बकरों को भोपालगढ़ संघ के सौजन्य से अभयदान की घोषणा।
7. जोधपुर महानगर के हर क्षेत्र के श्रद्धालुओं द्वारा आचार्यप्रवर के आगामी चातुर्मास की विनति। दीक्षा महोत्सव का लाभ जोधपुर को मिले पुरजोर प्रार्थना। जोधपुर महानगर के हर क्षेत्र को संभालने की विनति। सामूहिक गुरु चरण वन्दन के अन्तर्गत 36 वन्दना में अधिकांश भक्तों की भागीदारी।
8. पीपाड़- बिलाड़ा- गोटन- डांवरा- बुचेटी- रतकूड़िया जैसे समीपवर्ती ग्राम-कस्बों की क्षेत्र स्पर्श करने, कुछ स्थानों की चातुर्मास करने एवं दीक्षा-महोत्सव के लाभ की विनति।
9. संत-सतीवृंद के प्रवचनों के आधार पर प्रश्न मंच का सार्थक कार्यक्रम।
10. श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाशजी लूंकड़ तथा श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्रजी कांकरिया द्वारा शीलव्रत अंगीकृत।

आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक जिनशासन गौरव आचार्यप्रवर पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का 55वां दीक्षा-दिवस कार्तिक शुक्ला षष्ठी, गुरुवार, तदनुसार 26 अक्टूबर 2017 को चतुर्विध संघ में गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा का दीक्षा-दिवस त्याग-तप एवं गुरु गुणगान के साथ श्रद्धा-भक्ति पूर्वक मनाया गया। करीब दो हजार की जनमेदिनी के लिए प्रवचन की व्यवस्था श्री जैन रत्न विद्यालय भोपालगढ़ के परिसर में रही। प्रातः 9 बजे के लगभग श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्र मुनि जी म.सा. एवं नवदीक्षित श्री कल्पेश मुनि जी म.सा. विद्यालय परिसर पधारे। जय-जय के जयनादों से संघ सदस्यों ने प्रवचन स्थल पर पहुंच कर सामायिक-साधना में अपना स्थान सुनिश्चित कर लिया। देखते-देखते विशाल प्रांगण प्रवचन-श्रवण करने वालों से खचाखच भर गया। विद्यालय परिसर में अनुशासित बैठकर जन समुदाय ने प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया।

श्रद्धेय श्री योगेश मुनि जी म.सा. ने नमस्कार महामंत्र के अनन्तर गुरु-भक्ति में एक प्रार्थना करवाई। उत्साही भक्तों ने प्रार्थना में समवेत स्वर मिलाकर अपनी भक्ति-भावना का अच्छा परिचय दिया।

श्रद्धेय मुनि श्री के संकेत पर **नवदीक्षित संतरत्न श्री कल्पेश जी म.सा.** ने प्रवचन का शुभारंभ किया ही था कि दूर से महासती मण्डल के आगमन के कारण कुछ क्षण प्रवचन रोक कर व्याख्यात्री महासती

श्री ज्ञानलता जी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-8 ने मुनिपुंगवों को वन्दना की एवं अपने स्थान पर विराजमान होते ही नवदीक्षित मुनिश्री ने आराध्य आचार्य भगवन्त के दीक्षा-प्रसंग से कहा कि आज हम पूज्य गुरुदेव का दीक्षा-दिवस मना रहे हैं। रुको-देखो-चलो। आचार्य भगवन्त हड़बड़ी और घबराहट में कोई काम नहीं करते, इसीलिए आपका हर निर्णय सुखद परिणाम लेकर आता है। संघ के हर निर्णय में स्टोप, लुक एण्ड गो आपकी विशेषता है। साइलेंट जोन की तरह आचार्य श्री की सन्निधि में आने वाला शांति पाता है। आचार्य भगवन्त हर आगत को कोई न कोई नियम दिलाते हैं, हर भक्त आपके प्रभाव से गुरु आज्ञा को प्रभु आज्ञा की तरह पालता है। आचार्य भगवन्त अपनी साधना में प्राय: दूसरों से दूरी बनाएं रखते हैं। जैसे दो गाड़ियों में एक गाड़ी से दूसरी गाड़ी दूरी बनाकर चलती है तो कोई खतरा नहीं होता। आचार्य भगवन्त न निन्दा करते हैं, न विकथा। यहां तक कि आपश्री तो अपनी प्रशंसा तक नहीं सुनना चाहते। गुरुदेव की हरदम मुस्कराहट दर्शन-वन्दन करने वालों की पीड़ा हरने वाली होती है। मुनि श्री ने गुरु गुणगान के अन्त में कहा-भगवन्त सागर हैं, मैं एक बिन्दु की तरह हूँ फिर भी मैं गुरुगुणगान की और गुणों की अनुमोदना करता हूँ।

महासती वृन्द के उद्गार

पूर्व में निश्चित कार्यक्रमानुसार सर्वप्रथम **नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्री जी म.सा.** ने आचार्य भगवन्त के माता-पिता की विशिष्टताओं का उल्लेख करते हुए कहा कि माता-पिता के संस्कारों से संस्कारित गुरु हीरा पूर्व भव में निश्चित रूप से शुभ कर्मों का बंध करके आए हैं। भगवन्त के जीवन में मोती की तरह चमक है तो माता मोहिनी की तरह मोह की अल्पता। नवदीक्षिता महासती जी ने प्रारम्भिक 10 वर्ष की प्रमुख-प्रमुख विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उपस्थित जन समुदाय से साधना-आराधना में आगे बढ़ने का आह्वान किया।

महासती श्री महिमाश्री जी म.सा. ने अपनी बात रखते कहा कि पुण्यवानी की पूंजी जिनके साथ होती है उनकी प्रज्ञा बढ़ती ही जाती है। गुरु हस्ती की साधना से आकर्षित होकर स्वयं को साधना-पथ पर अग्रसर करने वाले ने पाप से निवृत्ति और साधना में प्रवृत्ति बचपन से सीख ली थी। दो सामायिक किए बिना मुंह में पानी नहीं लेना और दोपहर में चार लोगस्स करने का आप श्री का प्रयास आज नवयुवकों के लिए प्रेरणादायी है। आप 10 से 20 वर्ष की अवस्था में प्रियधर्मी तो थे ही, दृढ़धर्मी भी थे।

महासती श्री अरिहाश्री जी म.सा. ने 20 से 30 वर्ष की वय के विशिष्ट कृतित्व रखते कहा आप उस अवस्था में स्वयं व्यसन से तो दूर रहते ही अपने अधिकारियों को भी सार्वजनिक स्थल पर व्यसन नहीं करने देते थे। युवावस्था में विनय-विवेक के साथ जागृति करके आप हमारे लिए राही बन गए।

महासती श्री सरोज श्री जी म.सा. ने 30 से 40 वर्ष के विशिष्ट उल्लेखों को उल्लेखित करते कहा कि उस समय भी आप श्री ने अपनी कोई इच्छा तक नहीं रखी। आप श्री का आज्ञा-पालन में पूरा समर्पण रहा इसलिए आपने नव दीक्षित होकर गुरु-सेवा को आदर्श तो बनाया ही, सबकी सेवा-पर्युपासना में लग कर योग्यताएं-पात्रताएं प्राप्त कीं।

महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा- ने 40 से 50 वर्ष की उपलब्धियों का बखान करते कहा कि गुरु हस्ती के संयम रस से आपश्री अपने जीवन को उज्ज्वल करते गए। आज्ञा में तर्क-वितर्क नहीं, तह त्ति होता है, आपश्री ने गुरु आज्ञा से एक नागौर का स्वतंत्र चातुर्मास किया। आपश्री से जब गुरु हस्ती ने भावी व्यवस्था के सम्बन्ध में पूछा तो आपका उत्तर था-भगवन्! आप जिसे भी गादी पर बैठा देंगे मैं आपश्री की मूर्ति मानकर उनकी सेवा करूँगा।

महासती श्री निष्ठाप्रभा जी म.सा. ने 50 से 60 वर्ष के प्रमुख गुणों को रेखांकित करते कहा कि आपश्री के चादर महोत्सव के समय गर्मी की प्रचण्डता थी। तरुण तपस्वी श्री कैलाश मुनि जी महाराज को लू के

कारण हुए तेज बुखार में आपश्री ने सेवा का आदर्श तो बनाए रखा ही राग-रहित भावना का परिचय भी दिया।

महासती श्री भाग्यप्रभा जी म.सा- वंदनीय की वन्दना इसीलिए है कि हमारे आराध्य गुरुवर्य में पांच पैरामीटर ऐसे हैं जो हमें जीवन जीने का आदर्श बताते हैं। लाइफ प्रिंसिपल्स के प्रति सजग गुरुदेव ने किसी भी क्षेत्र को अछूता नहीं रखा। महासती जी ने कहा कि तीन-चार दिन पहले जब मैं वन्दना कर रही थी, आचार्य भगवन्त ने फरमाया कि मैं अपने दु:ख से कभी दु:खी नहीं होता। मैं तो संत-सतियों की सुख-शांति की सोचता हूँ। हमारे गुरुदेव ने कभी अपना ब्राण्ड नहीं बनाया। आपश्री के शासनकाल में रत्नसंघ में अनेक दीक्षाएं हुई हैं आपने अपने दक्षिण प्रवास में समाचारी का शुद्ध आराधन किया, आपश्री की पहल के कारण अन्यान्य आचार्यों ने दक्षिण प्रवास किया है। बैंगलोर महानगर में जाने वाला संत हो या आचार्य वह कुमकुम का टीका लगाकर नहीं लौटता, परन्तु आपने अपने आचार-विचार-व्यवहार से सबका मन मोह लिया। महासती जी ने बड़े महानगरों के बजाय बंगारपेट जैसे छोटे स्थान पर उसी शान से चातुर्मास करने को बड़ी उपलब्धि बताते कहा कि हम सीमित समयावधि में सब गुणों का विवेचन तो दूर नाम तक नहीं गिना सकते। आप श्री मेरे को सहारा देने आ रहे हैं, हमारी सबकी संभाल उसी तरह करते रहें।

व्याख्यात्री श्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.-ने अपनी बात रखते कहा कि गगन मण्डल में तारे तो अनेक होते हैं किन्तु चन्द्रमा एक ही होता हैं। अनेक ग्रहों में सूर्य का अपना विशेष महत्त्व है। इस लोक में अनेकानेक संत हैं पर आचार्य विरले ही होते है। तीर्थ कई होते हैं पर तीर्थंकर की महिमा है।

भगवान महावीर के प्रथम गणधर सुधर्मा, दूसरे जम्बू, तीसरे प्रभव का उल्लेख कर व्याख्यात्री महासती जी ने कहा कि उत्तराधिकारी बनने के लिए कई विशिष्ट तपस्वी-ज्ञानवान-क्रियावान संत हैं। संघ नायक किन्हें बनाएं? आचार्य श्री प्रभव की तरह आचार्य श्री हस्ती ने आप श्री की योग्यता जान-देखकर यह पद दिया है।

आचार्य श्री हीरा में आज भी लघुता के दर्शन होते है। आपश्री में सुज्ञता है, विज्ञता है। मुम्बई चातुर्मास के समय वहां आचार्य श्री विजयराजजी महाराज का चातुर्मास भी था। दोनों आचार्यों ने आत्मीयता का परिचय दिया तो आचार्य श्री विजयराजजी ने कहा-जब हमारे बीच इतनी आत्मीयता है तो क्यों न संभोग खुले कर दिए जाएं। दूरदर्शी गुरु हीरा ने अपने प्रत्युत्तर में कहा किसी से सम्बन्ध तोड़कर अन्य से बनाना ठीक नहीं है। यह है आपकी प्रज्ञा।

व्याख्यात्री महासती ने कहा-आचार्य श्री रत्नचन्द्र जी महाराज ने इस भूमि में 14 संतों के साथ क्रियोद्धार किया। आचार्य श्री हीरा ने उन 21 बोलों को तो सुरक्षित रखा ही, कुछ नए बोल जोड़कर संयम की चमक बढ़ाई है वह वस्तुत: आपश्री के शासनप्रेम का अनुपम उदाहरण है। आज भक्तजन प्राय: कहते हैं कि समय को देखकर समाचारी में परिवर्तन किया जाना चाहिए। आप माइक पर बोलना, टिफिन लेने जैसे प्रवृत्ति के हामी नहीं हैं बल्कि आप संयम की चमक बनाए रखने के प्रबल पक्षधर हैं, इसलिए आप संयम चक्रवर्ती हैं।

गुरुणीजी महाराज साध्वीप्रमुखा शासन प्रभाविका महासती श्री मैना सुन्दरीजी महाराज जिन्होंने लम्बे समय तक संयम-साधना की, आपश्री ने संथारे में साज देकर उनके जीवन को निखारा, वह आपका अनूठा आदर्श ही तो है।

आचार्य श्री हीरा के अनेक गुणों का कीर्तन करते हुए महासती जी ने कहा कि आप श्री के चरणों में तो देवता भी नमस्कार करते हैं। ऐसे अतिशयधारी गुरु भगवन्त के चरणों में कोटिश: वन्दन कह कर अपनी बात को विराम दिया।

मुनिपुंगवों के हृदयोद्गार

श्रद्धेय श्री विनयमुनि जी म.सा ने अपनी बात रखते कहा कि प्रत्येक भोर दर्शन-वन्दन से विभोर हो जाती है, आचार्य भगवन्त के अनन्त गुणों के प्रति सीमित समय में असीमित भावनाएं कैसे रखी जा सकती

हैं? मुनिश्री ने संस्कृत भाषा में गुरु गुणगान कर अपनी भावना व्यक्त की।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनि जी म.सा ने प्रवचन पूर्व एक सामूहिक गीत से उपस्थित विशाल जन समुदाय को गुरु गुणगान में समाहित कर भक्त भक्ति कैसे रखता है, बता दिया। गीत के बोल-

मेरी एक ही तमन्ना, हस्ती के पट्टधारी,
रहना ना दूर हमसे, ले खबर हमारी।
तू पास जिनके रहता, रहता वहां सवेरा,
कि दूर जिससे होता, होता वहां अंधेरा।
तेरे बगैर गुरुवर, दिन भी है रात भारी।।
बनकर के हीरा मांझी, अब पार तुम उतारो
मैं भक्त हूँ तुम्हारा, एक बार तुम पुकारो।
समझूं न रीत तेरी, ऐसा मैं हूँ अनाड़ी।।

मुनिश्री ने धर्मानुरागी बन्धुओं को संबोधित करते कहा कि गुरु व्यक्ति नहीं अपितु एक शक्ति होता है। शक्ति जीव को भक्ति के मार्ग में लगाती है।

गुरु एक पद है, विचार है। हम सबने गुरु की क्रिया और शक्ति का अनुभव किया है। व्यक्ति तो नजर आता है पर शक्ति नहीं दिखती। व्यक्ति दिखता है, शक्ति अनुभव में आती है। आज ऐसे गुरु का दीक्षा-दिवस है जो गुरु व्यक्ति तो है, शक्ति सम्पन्न भी है। हमारे गुरु यथा नाम तथा गुण के धारी हैं। गुरु हीरा धरती पर वर्द्धमान का स्वरूप हैं। उनमें संतत्व झलकता है।

आज हमारे गुरु का दीक्षा-दिवस है। दीक्षा लेते ही व्यक्ति सज्जन से संत बन जाता है। गुरु भगवन्त ने संत का जीवन स्वीकार किया। उनका स्वरूप हमारे को नज़र आता है। हमारे गुरु भगवान महावीर के सिद्धान्तों पर आचरण करने वाले हैं। सन्त के ढ़ाई अक्षर हैं।

हमारे गुरुदेव में संत-तत्त्व झलकता है। 'स' सहजता का प्रतीक है। गुरुदेव से बातचीत करने के लिए किसी को अपोइंटमेंट लेने की जरूरत नहीं। सबके लिए आपके दरवाजे खुले हैं। आप कभी कमरे में बन्द नहीं रहते इसलिए सबको सहज सुलभ हैं।

हमारे गुरुदेव दानी हैं, लुटाने वाले हैं। गुरुदेव इतना देते हैं कि लेने वाला परेशान-सा हो जाता है। आप हर स्थिति में सहज रहते हैं, कभी चेहरे पर शिकन तक नहीं आती। आहार में जो भी मिल जाय उसे सहज स्वीकार कर लेते हैं। रास्ता भी कैसा ही क्यों न हो उस पर चल पड़ते है। दूसरा हो तो जरा भी गलत रास्ता आया नहीं कि बताने वाले का पाणी उतार दिया जाता है, पर गुरु हीरा हर स्थिति में सहज रहते हैं।

गुरु हीरा हेज को सहेज कर रखते हैं। सरलता आपका विशिष्ट गुण है तो सन्त में दूसरा अक्षर न का है। आप नम्र हैं, विनयवान हैं, विनम्र हैं। संघ नायक जैसे पद पर रहते हुए आप कितने विनम्र हैं, आप रोज देखते हैं। आप अनुशासनप्रिय हैं अनुशासन के लिए कभी किसी को कठोर भी कह देते हैं तो मन ही मन आपको पीड़ा होती है।

मुनि श्री ने एक राजा के दरबार का दृष्टांत रखते कहा कि उस राजा ने एक कांच का और दूसरा असली हीरा जन समुदाय के समक्ष रखकर पूछा कि इन दोनों में से जो भी असली हीरा को पहचानेगा-बतायेगा उसे इनाम दिया जायेगा। दोनों एक जैसे दिखते थे। देखे तो कइयों ने पर असली कौनसा है, समझ में नहीं आया। एक अनुभवी बुजुर्ग ने कहा मैं बताता हूँ। उसने हीरे को और कांच को हाथ में लिया। एक हाथ में असली हीरा दूसरे में नकली। कांच हाथ में गर्म होता है, लेकिन हीरा कभी गर्म नहीं होता। यही बात हमारे गुरुदेव में है। आप कभी गर्म नहीं होते, हमेशा शान्त और सहज रहते हैं।

सन्त का तीसरा अक्षर है-'त'/त यानी तपस्वी। सन्त तपस्वी होता है। हमारे गुरुदेव बाहर का तप भी करते हैं तो आभ्यन्तर तप में भी रत रहते हैं। संतत्व सिद्धत्व प्राप्त करता है, यह आप-हम देख सकते हैं।

आचार्य श्री हीरा के आचरण में कई गुण समाहित हैं। आपश्री के आचरण में न पोलापन है न ढीलापन। आपने गुरु हस्ती की सन्निधि में ऐसा जीवन जीया है। आप श्री को तीन बातें मिल गई, तीन बातें आप दे भी रहे हैं।

आपका अद्भुत समर्पण है। जो गुरु ने कह दिया वह सर्वतोभावेन स्वीकार्य है। मैंने भगवान को नहीं देखा, पर गुरु के रूप में साक्षात् भगवान मुझे मिले हैं। दूसरा गुण है-हमारे गुरुदेव में असीम श्रद्धा है। शय्या त्यागने के साथ आपके मुंह से गुरुदेव का नाम निकलता है। एक बार हमने गुरुदेव से पूछा-उठने के साथ आप सबसे पहले किनको याद करते हैं ? आपका उत्तर था-सबसे पहले मैं तो गुरुदेव का नाम लेता हूँ। गुरु के नाम से सारे काम फतह होते हैं। यह है गुरु पर असीम श्रद्धा। आचार्य भगवन्त का तीसरा गुण है-अप्रतिहत विनय। जो आज्ञा हुई, तुरन्त पालना। एक-दो घंटे बाद नहीं, तत्काल। आप श्री के अनेक गुण है, सबको थोड़े समय में नहीं कहा जा सकता। लोग आचार्य देव के प्रवचन को लच्छेदार कहते हैं। आप श्री के प्रवचन लच्छेदार नहीं, रसदार होते हैं, इसलिए कोई भी सुनने वाला बीच में से उठता नहीं।

आचार्य श्री ने अपने गुरुदेव से तीन गुण लिए तो तीन गुणों को देने वाले आप महापुरुष है। आप सबको अमित वात्सल्य देते हैं। आप जानते हैं-माँ-बाप का वात्सल्य सबसे ज्यादा होता है आप श्री का ऐसा ही वात्सल्य हम पर उमड़ता है। दूसरी देन है-अविरल स्नेह। गुरु हस्ती के मन में हीरा रमा हुआ था, आप हम सबको अविरल स्नेह देते हैं जिसका न कोई और है, न छोर। तीसरी आपकी देन अतुल विश्वास। आपका सब पर अतुल विश्वास है। आपके मन में नहीं आता कि मेरा यह शिष्य कभी मेरे विपरीत हो जायेगा। संघ संचालक और संवर्धन में आपश्री दिन-रात लगे रहते हैं। आपश्री ने अपने माता-पिता का नाम रोशन किया है। आपके अक्षर मोती जैसे हैं तो आपकी मुद्रा मोहिनी है। आप में हस्ती जैसी शक्ति है। आचार्य देव हमारे स्वामी हैं। जब तक हमारे जीवन में स्वामी हैं तब तक हमारे लिए चिन्ता की बात नहीं। मुझे बहुत कहना था, शब्द-अक्षर-वाक्य सीमित हैं गुरु हीरा के गुण असीमित हैं।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने परम इष्ट परमेश्वर भगवन्तों को वन्दन नमन करके गुरु-भक्ति में कहा कि जिनके श्वांस में आगम का विश्वास है, जिनकी हर प्रवृत्ति में संघ-दीप्ति का भाव है और जो गुरु हस्ती की प्रतिकृति है, उनको मेरा नमन। आज का दिवस अनन्त आस्था अर्पण करने का दिन है तो समर्पण का दिन भी है। आज का दिन कहना होगा संयम की सुरक्षा की साधना का दिन भी है। आज का दिन देने का है तो लेने का भी है। आज का दिन छंदं निरोहेणं उवेइ मोक्खं' का है तो आज का दिन 'आणाए धम्मो' का दिन भी है। आज का दिन 'समयं गोयम मा पमायए' का दिन भी है।

आचार्य देव आत्म-साधक हैं, निष्प्रिय साधक हैं। आपके दीक्षा-दिवस पर मैं क्या अर्पण करूँ ?

क्या नजर करूँ इन चरणन में,
झोली तो मेरी खाली है।
श्रद्धा के दो मुट्ठी चावल ये ले लो,
भेंट सुदामा वाली है।।

हम कितने ही गुणगान कर लें, गुणगान करना कभी पूरा नहीं हो सकता। आचार्य भगवन्त अभी प्रवचन-सभा में नहीं पधारे हैं और प्रवचन के चलते पधारेंगे, ऐसा भी नहीं लगता। क्यों तो गुरुदेव अपने गुणगान सुनना नहीं चाहते। हां, गुरुदेव यहां पधारेंगे तो जरुर, क्योंकि आपश्री व्रत-प्रत्याख्यान करवाते हैं, मांगलिक देते हैं। आप-सब गुरुदेव के पधारने का इन्तजार कर रहे हैं, मैं कुछ मांगनी करता हूँ, मेरी भावना का वेग गुरुदेव तक पहुँच जायेगा। गुरुदेव से याचना है जब तक मेरे कर्मों का अन्त न हो जाय आपकी चरण शरण मिलती रहे। मुझे न पद चाहिए, न प्रतिष्ठा, जब तक यह जीव शिव न बन जाय गुरु चरणों में मेरा वास रहे तो मेरा बेड़ा पार हो जायेगा।

आज आचार्य भगवन्त का 55वां दीक्षा-दिवस है। आज हर व्यक्ति गुरु के गुणगान करना चाहता है। विद्ववर्य प्रमोद मुनि जी महाराज ने जोधपुरवासियों का आह्वान किया-हम न तो जाने का कहते हैं, न आने

का, पर आप गुरु चरण वन्दन के लिए जा रहे हैं तो कम से कम तीन सामायिक करें। आप-सब प्राय: प्राय: सामायिक-साधना में बैठे हैं यह गुरु भक्ति है। हमने भी यहां पर 55वें दीक्षा-दिवस के निमित्त 55 तेले करने का आह्वान किया, 80 के लगभग तेले हो गए हैं। आचार्य श्री 36 गुणों के धारक हैं बहिन सुमन जी लूंकड़ ने छत्तीस की तपश्चर्या करके गुरु-भक्ति प्रदर्शित की है, वह प्रमोदकारी है। आप आज दीक्षा-दिवस पर उपस्थित हैं, मैं गुरु गुणगान भले ही कम करूँ पर आप-सब त्याग-तप के साथ आराध्य आचार्य प्रवर का दीक्षा-दिवस पर कम से कम पांच-पांच सामायिक तो करें ही, कुछ-न-कुछ गुरुदेव से व्रत-नियम लेकर जायें, खाली हाथ कोई न जाये।

जय-जयकारों के गगनभेदी जननाद श्रवण कर जन समुदाय ने अपने स्थान पर खड़े होकर आचार्य भगवन्त का हृदय से अभिनन्दन-अभिवादन किया। संत-सतीवृन्द के वन्दन के अनन्तर कार्यक्रम संचालक श्री नेमीचंद जी कर्नावट ने जन समुदाय से अपील की कि आप अपने स्थान पर विराजें और पच्चखाणों के प्रति अनुमोदना व्यक्त करें।

सर्वप्रथम श्रीमती सुमन जी धर्मपत्नी सुश्रावक श्री रविन्द्र लूंकड़ ने 36 दिन की तपश्चर्या के प्रत्याख्यान अंगीकार किए तो जन समुदाय ने हर्ष-हर्ष जय-जय के नाद के साथ अनुमोदना..., अनुमोदना भजन की एवं केशरिया-केशरिया भजन की पंक्ति में उच्चारित कर तप-साधिका का स्वागत किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़ की ओर से अभिनन्दन-पत्र के वाचन पश्चात् संघ-सेवी सुज्ञ श्राविकाओं ने तपस्वी बहिन का माल्यार्पण से स्वागत, चूंदड़ी ओढ़ाकर सत्कार, धार्मिक साहित्य भेंट कर बहुमान और अभिनन्दन-पत्र भेंट कर तप-साधिका का अभिनन्दन किया।

तप-साधिका के तप की अनुमोदना में लूंकड़ परिवार के श्रीमती व श्री ओमप्रकाशजी ने शीलव्रत अंगीकार करके गुरु भक्ति का परिचय दिया तो श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्रजी कांकरिया ने भी शीलव्रत का खंद किया।

उपवास, सामूहिक बेले, तेले, आयंबिल-एकासन के अलावा कतिपय बड़ी तपस्याओं 5-7-10 के प्रत्याख्यान भी हुए।

कार्यक्रम संचालक ने जोधपुर महानगर के अलावा पीपाड़-बिलाड़ा-गोटन-डांवरा-बुचेटी-रतकुड़िया और अन्य-अन्य स्थानों से जो भी संघ विनति करना चाहते हैं वे स्थानक में पहुंचकर अपनी विनति गुरु चरणों में रख सकते हैं। एक अन्य महत्वपूर्ण सूचना प्रसारित करते कर्नावट जी ने कहा कि आज जिन-जिन संत-सतियों ने प्रवचन के माध्यम से गुरु गुणगान किए हैं उनके आधार पर प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता का आयोजन भी स्थानक में रखा गया है जिसमें आप सभी भाग लेकर अपनी गुरु भक्ति प्रदर्शित करें।

कार्यक्रम संचालक महोदय ने यह भी स्पष्ट किया कि जोधपुर महानगर के सैकड़ों श्रद्धालु दीक्षा-दिवस पर 36 वन्दना गुरु चरणों में रखने की भावना रखते हैं, गुरु चरण वन्दन का कार्यक्रम भी स्थानक में होगा, जोधपुर सहित सभी श्रद्धालु वन्दन-नमन का लाभ ले सकते हैं।

भोपालगढ़ संघाध्यक्ष-संघ मंत्री की ओर से कार्यक्रम संचालक ने क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ पधारे समीपवर्ती-सुदूरवर्ती क्षेत्रों के श्री संघों व श्रद्धालुओं के दीक्षा-दिवस पर संघ की ओर से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करते हुए कहा कि आप-सबकी भोजन व्यवस्था स्कूल परिसर में है, कृपया संघ को सेवा का सुअवसर प्रदान कर अनुगृहीत करें।

कार्यक्रम संचालक महोदय ने जनभावना के परिप्रेक्ष्य में पूज्य आचार्य भगवन्त के श्रीचरणों में प्रार्थना रखी कि भगवन्! आप भले ही धूप में विराज रहे हो तब भी जनसमुदाय जो आपश्री के मुखारविन्द से दो शब्द सुनने को आतुर हैं, आप अपने हृदयोद्गार व्यक्त करने की कृपा करें।

पूज्य आचार्य भगवन्त ने अपनी अन्तर्मन

की अभिव्यक्ति करते फरमाया कि सूरोदए पासति चक्खुणेव। आंख में सूक्ष्म से सूक्ष्म चीज को देखने की शक्ति है, पर अंधकार में देखने की वह शक्ति भी काम नहीं आती, उसके लिए प्रकाश चाहिए। तीर्थंकर भगवन्त जन्म से तीन ज्ञान के धणी हैं, अतिशय पुण्यवानी के बल पर मेरु उठाने की उनमें शक्ति है तब भी जन्म के साथ वे दौड़ नहीं सकते। माता-पिता के सहकार के साथ समय चाहिए। वट-वृक्ष का बीज राई से छोटा होता है, पर जब तक यह बीज कोठे में पड़ा है तब तक वह उग नहीं सकता। बीज के उगने में माली का सहकार चाहिए तो पृथ्वी-पानी-हवा का योगदान होगा तभी वह बीज वट वृक्ष बन सकेगा। ठीक इसी तरह आपकी-हमारी-सबकी आत्मा सिद्ध-स्वरूपी है, अनन्त ज्ञान-अनन्त दर्शन गुण से युक्त है, पर जब तक उसे गुरु की सन्निधि नहीं मिलती वह सिद्ध स्वरूपी आत्मा विकास नहीं कर सकती।

पूज्य गुरुदेव ने फरमाया-जन्म देने वाले माता-पिता उपकारी हैं, माता-पिता के संस्कार गुरु चरण सान्निध्य में पनपते हैं-बढ़ते हैं इसलिए गुरु भी उपकारी हैं। भटकते जीव को गुरु का समागम आगे बढ़ाता है। आज आप वर्तमान में जो भी देख रहे हैं, वह सब गुरुदेव की घड़ाई है। आप जानते हैं व्यापार में किसी को कोई सहयोगी मिलता है तो उसका व्यापार-व्यवसाय बढ़ता है ऐसे ही गुरु के सहयोग से जीवन का निर्माण होता है। आप अपने आपको आत्मा से परमात्मा और महात्मा से परमात्मा बनाना चाहते हैं तो गुरु-सेवा, गुरु-सन्निधि, गुरु-आज्ञा का पालन करें, इसी शुभ-भावना के साथ....।

आचार्य भगवंत के संक्षिप्त उद्बोधन के पश्चात् पूज्य गुरुदेव ने मंगल पाठ सुनाया। आचार्य भगवंत अपने मुनि मण्डल के साथ स्थानक की ओर प्रस्थान कर गए। उसके कुछ अन्तराल पश्चात् महासती मण्डल का भी विद्यालय से प्रस्थान हुआ।

विभिन्न ग्राम-नगरों और महानगरों के सैकड़ों-हजारों भक्तों ने परस्पर मिलने, बातचीत करने के साथ विशाल काउन्टर पर स्व-रुचि भोज में भाग लिया। भोपालगढ़ संघ की आवास-भोजन-चाय-नाश्ते की सुन्दर व्यवस्था की हर व्यक्ति के मुंह से प्रशंसा सुनने को मिली। एक-एक काउन्टर पर कई संघ-सेवी श्रावक-श्राविकाओं ने भोजन व्यवस्था में पूरा सहयोग किया।

विद्यालय परिसर से पूज्य गुरुदेव के विहार पश्चात् कई श्रद्धालु स्थानक पहुंच कर गुरु चरण स्पर्श करने का मानस लिए स्थानक तो पहुंचे पर देखा गुरुदेव तो ध्यान में विराजे हैं। दूर से वंदन करके वहां उपस्थित संत-मुनिराजों को वन्दन-नमन कर कई भाई-बहिन पुन: विद्यालय परिसर पहुंचे और भोजन किया। मध्याह्न 1.30 बजे पश्चात् अधिकांश लोग स्थानक पहुंच गए तब तक संत-सतीवृन्द भी नीचे के हॉल में पधार गए। प्रश्नोत्तर कार्यक्रम का संचालन श्री तरुण जी जैन राष्ट्रीय मंत्री ने किया। प्रवचन में अपूर्व शांति थी इसलिए सबको सहजता से सुनने में आने के कारण जन समुदाय में से कइयों ने प्रश्नोत्तर कार्यक्रम में प्रत्यक्ष भागीदारी तो की ही अपनी प्रज्ञा भी प्रदर्शित की।

आचार्य भगवन्त प्रतिदिन की तरह ध्यान-मौन की साधना में सीढ़ियों पर बने छोटे-से स्थान पर विराजमान थे अत: दूर से वन्दन करके लोग 2 बजे का इन्तजार करने लगे। पूज्य आचार्य भगवन्त ने ऊपर के हॉल में पहुंच ऊपर और नीचे खड़े श्रावक-श्राविकाओं को मंगल-पाठ सुनाया।

गुरु चरण सेवा में वन्दना का कार्यक्रम भी बराबर बना रहा। छत्तीस गुणधारी आचार्यप्रवर को 36 वन्दना की श्रद्धा अर्पित कर जन-जन को संतोष का आभास हुआ। तीन बजे पश्चात् अधिकांश लोग पुन: जहां से आए थे, प्रस्थान कर गए।

पूरा दिन गुरु-भक्ति में उत्साह पूर्वक व्यतीत होने की व्यक्ति-व्यक्ति के चेहरे पर प्रसन्नता स्वयं संतोषानुभूति करा रही थी।

-सह-सम्पादक, जिनवाणी मासिक पत्रिका

गीत

दीक्षा का स्तवन

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा.

(तर्जः मेरे सिर पर रख दो गुरुवर........।)

बढ़ते हो संयम पथ पर, पर रखना सदा खयाल।
यह पथ है अंगारों का, रखना कदम संभाल।।
सफल आराधना हो, सफल ये साधना हो।।
संयम मंगल, संयम शरणा, संयम नंदनवन अपना।
समाधान का मार्ग है संयम, संयम आनन्द का झरना।
संयममय हो यह जीवन, संयम से चमके भाल...
यह पथ है अंगारों का...।।1।।
पल-पल होगी यहां परीक्षा, सुख-दुःख दोनों के क्षण में।
परिणामों पर कड़ी नजर हो, संयम के समरांगण में।
इस हर्ष शोक से बचना, लेकर समता ढ़ाल...
यह पथ है अंगारों का...।।2।।
बने अनंती बार संयमी, पर नहीं मंजिल साध सके।
मत चूको यह दुर्लभ मौका, पाना मंजिल बिना रुके।
मुझे बनना है अजन्मा, यह याद रखो हर हाल...
यह पथ है अंगारों का...।।3।।
चौथे आरे के सन्तों की, हर चर्या में झलक मिले।
देख तुम्हारी साधकता को, हर आतम के भाव खिले।
इतिहास रचो वीरों का, तुम चलना सिंह की चाल...
यह पथ है अंगारों का...।।4।।
भौतिकता की अंधी दौड़ में, दौड़ रही दुनिया सारी
सुख सुविधा से बचकर रहना, तेरी राहे हैं न्यारी
तुम जीना सच्चा जीवन, सब चले तुम्हारी चाल...
यह पथ है अंगारों का...।।5।।
दृढ़ संयम हो, सम्यक् यतना, आत्मार्थी पहचान बने।
वीतरागता के हो दर्शन, आगम आज्ञा प्राण बने।
प्रभु कहते हैं गौतम से, देना दोषों का प्रायश्चित्त...
यह पथ है अंगारों का...।।7।।
जय जिनशासन रत्न संघ, जय गुरु हस्ती की फुलवारी
गुरु हीरा के शासन में ये, कीर्तिमान बना भारी
गुरु मान के आशीषों से, विकसे संयम त्रिकाल...
यह पथ है अंगारों का...।।8।।

-सांसारिक बहन सुश्री मधुजी, धन्यबाला संदीप कोठारी (कवाड़), नीतूः समरजीत कोठारी (कवाड)

भगवान तुम हमारे.....!

महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा.

(तर्जः- हम यार हैं तुम्हारे....।)

भगवान तुम हमारे, हम भक्त तुम्हारे,
भक्ति तेरी करें-2
तुम पूज्य हमारे, हम पूजक तुम्हारे,
पूजा तेरी करें-2
क्या चरणों में अर्पण करें,
ये जीवन भी समर्पण करें...।।टेर।।

महावीर के जैसे, भक्तों को तिराते,
सुधर्मा के जैसे, शासन को दीपाते
गौतम सी है करणी, गौरव से भरी है
भक्ति से विनय से, आतम को निखारे
तुम अर्च्य हमारे, हम अर्चक तुम्हारे,
अर्चा तेरी करें।।1।।

समियाए ही धम्मे, अपनाते जीवन में
और गजसुकुमाल सी, बसी है छवि तुझमें
आगम के हो दर्पण, है सार तुझी में
और ज्ञान-क्रिया का, सुन्दर संगम तुझमें
तुम सेव्य हमारे, हम सेवक तुम्हारे,
सेवा तेरी करें.....।।2।।

कयवन्ना के जैसे, तुम सौभाग्यशाली
हस्ती की सी मस्ती, तुझमें तो निराली
अभय सी है प्रज्ञा, ओ भगवन्! तुम्हारी
चेहरे पर प्रसन्नता, अद्भुत नूरानी
तुम आराध्य हमारे, हम आराधक तुम्हारे,
आराधना तेरी करें.....।।3।।

कलयुग में हे हीरा! तुम भगवन् हमारे
धन्ना और जम्बू का, प्रतिरूप निहारे
लगता है धरती पे, तुम तो हो फरिश्ते
अब सामने 'सिद्धि', और सामने हैं रस्ते
तुम साध्य हमारे, हम साधक तुम्हारे,
साधना तेरी करें.....।।4।।

-संकलन :- जिनेन्द्रकुमार जैन, आध्यात्मिक शिक्षा समिति, ए-9, महावीर उद्यान पथ, बजाजनगर, जयपुर (राज.)

आत्मा की खेती

श्री हरीश 'मधुर'

भगवान् बुद्ध काशी के एक सम्पन्न किसान के पास गये और उससे भिक्षा मांगी। उसे अपनी सम्पन्नता का गर्व था। किसान ने भिक्षा पात्र लिये भिक्षुप्रवर को देखा और बड़े तिरस्कृत भाव से बोला- ''मैं परिश्रम से खेत जोतता-बोता हूँ और सर्दी-गर्मी-वर्षा सहता हूँ तब कहीं उपज प्राप्त होती है। यह सब मैंने बड़ी मेहनत से बनाया है, किन्तु आप बिना खेती किये भोजन पाना चाहते हैं, यह उचित नहीं है।''

''मैं भी तो किसान हूँ! खेती करता हूँ'' बुद्ध ने शान्त स्वर में उत्तर दिया तो किसान विस्मय से भर उठा और बोला- ''खेती!'' ''हाँ भाई! मैं आत्मा की खेती करता हूँ। ज्ञान के हल से श्रद्धा के बीज बोता हूँ। तपस्या के जल से उसे सींचता हूँ। विनय मेरे हल की हरिस, विचारशीलता फाल और मन नरेली है। सतत प्रयास का यान मुझे गंतव्य की ओर ले जा रहा है जहाँ न दुःख है न संताप। मेरी इस खेती से अमरता की फसल लहलहाती है। इसके फल केवल मेरे नहीं, वरन् जगत के आत्मकल्याण के लिए सबके हैं।''

किसान का अहं घुल गया। उसने झुककर बुद्ध के चरण पकड़ लिये।

-जिनवाणी, अगस्त 1977 से गृहीत

प्राणातिपात

आचार्य विजयरत्नसुंदरसूरिजी म.सा.

पत्नी के साथ पति का, धन के साथ व्यापारी का, वस्त्रों के साथ शरीर का, पुत्र के साथ पिता का तो संयोग संबंध है, परन्तु, शरीर के साथ आत्मा का तो तादात्म्य सम्बन्ध प्रतीत होता है।

अर्थात् पत्नी के प्रति आत्मा को 'मैं' का भाव जाग्रत नहीं होता, परन्तु शरीर के प्रति तो आत्मा को 'मैं' का ही भाव उत्पन्न होता है। इसी कारणवश पत्नी का वियोग होने पर पति, धन का वियोग होने पर व्यापारी, वस्त्रों का वियोग होने पर शरीर अथवा पुत्र का वियोग होने पर पिता न तो नष्ट होते हैं न ही अस्वस्थ होते हैं,परन्तु शरीर का वियोग होने पर तो जीवन समाप्त ही हो जाता है और शरीर पर कष्ट आने पर मन अस्वस्थ हो जाता है।

प्रश्न यह है कि जीव को इस जगत में सर्वाधिक प्रिय कौन है?

धन? नहीं....., सत्ता? नहीं....., स्वजन? नहीं....., सुंदरता? नहीं....., तो फिर?

एक मात्र जीवन ही प्रिय है और जीवन शरीर के आधार पर टिका हुआ है अतः शरीर ही प्रिय है।

एक वास्तविकता ज्ञात है? भोगी को त्यागी के त्याग का वैभव नहीं चाहिए, परन्तु त्यागी की शारीरिक स्वस्थता का वैभव तो अवश्य चाहिए। कारण, शारीरिक स्वस्थता है तो ही भोगसुखों का आनन्द वह उठा सकता है यह बात वह अच्छी तरह जानता है। उसी प्रकार, त्यागी को भोगी के भोग वैभव का भले ही कोई आकर्षण न हो, लेकिन यदि भोगी के पास शारीरिक स्वस्थता का वैभव है तो उस वैभव को पाने की इच्छा वह अवश्य करेगा।

कारण? शारीरिक स्वस्थता का वैभव होने पर ही त्याग के मार्ग पर प्रसन्नता से आगे बढ़ा जा सकता है, यह बात उसे अच्छी तरह ज्ञात है।

उसी प्रकार, योगी को भले ही भोगी के भोग वैभव का अथवा त्यागी के त्यागवैभव का कोई लोभ नहीं है, परन्तु उन दोनों की शारीरिक स्वस्थता के वैभव का आकर्षण तो उसे भी रहता है। क्योंकि, अनुकूल स्वास्थ्य होने पर योगसाधना सुन्दर हो सकती है यह बात उसे अच्छी तरह ज्ञात है। संक्षेप में, भोगी के भोग की, त्यागी के त्याग की और योगी के योग की आधारशिला यदि कुछ है तो वह है स्वस्थ शरीर और स्थानांग सूत्र में भी जिन दस प्रकार के सुखों का वर्णन किया गया है उनमें प्रथम स्थान पर है 'स्वस्थ शरीर'।

क्या कहूँ? चोरी में तो केवल धन लूटा जाता हे, जबकि प्राणातिपात में तो सीधा शरीर पर ही आक्रमण होता है। और धन के लुट जाने पर भी जीवन यथावत् रह जाता है, परन्तु जब शरीर पर आक्रमण होता है तब या तो जीवन समाप्त हो जाता है और या तो जीवन खंडित हो जाता है। कदाचित् इसी कारणवश अठारह पाप स्थानों में प्राणातिपात पापस्थानक को प्रथम स्थान दिया गया है।

एक प्रश्न का उत्तर दीजिए। हमारे बगैर जी ही न पाएँ ऐसे जीवों में किन-किन जीवों का समावेश किया जा सकता है? और जिनके बगैर हम जी ही न पाएँ ऐसे जीवों में किन-किन जीवों का समावेश किया जा सकता है?

इस प्रश्न के उत्तर में कहना पड़ेगा कि हमारे बिना जी ही न पाएँ ऐसा कदाचित् एक भी जीव नहीं है, जबकि जिनके बिना हम जी ही न पाएँ ऐसे जीव कदाचित् असंख्य है। नमक-मिट्टी-हीरे-माणक-मोती-सोना वगैरह का समावेश पृथ्वीकाय जीवों में होता है.....। पानी-बर्फ-ओले-कोहरा वगैरह का समावेश अप्काय जीवों में होता है.....। आग-

चिंगारी-दावानल वगैरह का समावेश तेउकाय जीवों में होता है.....। वायु-तेज हवा-तूफान वगैरह का समावेश वायुकाय जीवों में होता है.....। गेहूँ-ज्वार-बाजरा-फल-वस्त्र-लकड़ी वगैरह का समावेश वनस्पतिकाय जीवों में होता है.....। गाय-भैंस-बैल-घोड़े-बकरी-मनुष्य-स्त्री वगैरह का समावेश त्रसकाय में होता है.....।

जवाब दीजिए। पृथ्वीकाय, अप्काय, तेउकाय, वायुकाय, वनस्पतिकाय और त्रसकाय इन षट्काय जीवों में से एक भी काय के जीवों का सहयोग लिए बिना अथवा भोग लिए बिना एक दिन के लिए भी क्या हमारा जीवन टिक सकता है?

कदापि नहीं! धन के बिना सांसारिक जीव का जीवन नहीं चलता इसलिए वह धन को संभालता ही रहता है, पेट्रोल के बिना गाड़ी नहीं चलती इसलिए ड्राइवर पेट्रोल बचाता ही रहता है, ग्राहक के बिना व्यापार नहीं चल सकता, इसलिए व्यापारी ग्राहक को संभालता ही रहता है।

प्रश्न यह है कि जिन षट्काय के जीवों के बिना हमारा जीवन जीना असंभव है उन जीवों को संभालने के लिए क्या हम तैयार हैं भला?

उन जीवों को जीवित रखने के लिए क्या हम सतत् जाग्रत हैं भला? उन जीवों की निरर्थक हिंसा से वास्तव में क्या हम बचना चाहते हैं भला? कदाचित् दुःख के साथ कहना पड़ेगा कि 'नहीं'! विस्तार के नशे ने, विलास की भूख ने, विकारों की अधीनता ने और व्यसनों की गुलामी ने हमारे हृदय को कठोर व निष्ठुर-निर्दय बना दिया है। और इस निर्दयता ने हमें जीवों के प्रति क्रूर-घातक और हिंसक बना दिया है।

परिणाम? पूज्यपाद उपाध्याय श्री यशोविजय जी महाराज ने हिंसा नामक प्रथम पापस्थान की सज्झाय में स्पष्ट शब्दों में लिख दिया है कि-"पापस्थानक पहिलुं कह्युं रे, हिंसा नामे दुरंत, मारे जे जग जीवन रे, ते लहे मरण अनंत रे।" 'जगत के जीवों को जो मारता है वह अनन्त मृत्यु को प्राप्त करता है।' वर्तमान में आने वाली एक ही मृत्यु की कल्पनामात्र से यदि हम भयभीत हो जाते हैं तो भविष्य में आने वाली अनन्त मृत्यु के समय हमारी स्थिति क्या होगी?

अलबत्ता, प्रश्न मन में यह उठता है कि सांसारिक मनुष्य का जीवन क्या बिना हिंसा के संभव हो सकता है भला? षट्काय का सहयोग लिए बिना अथवा भोग लिए बिना सांसारिक मनुष्य अपना जीवन चलाने में अथवा टिकाने में सफल हो जाए यह संभव है भला? इस प्रश्न का उत्तर है, 'नहीं'!

बिना हिंसा किए सांसारिक मनुष्य अपना जीवन कभी नहीं टिका सकता, यह वास्तविकता है। फिर भी, एक बात समझ लेने की आवश्यकता है कि हिंसा का प्रसन्नता के साथ स्वीकार तो कदापि नहीं होना चाहिए। वैसे तो प्रतिदिन शौचालय गए बिना भी शरीर को स्वस्थ कैसे रखा जा सकता है? फिर भी मनुष्य बार-बार शौचालय का उपयोग न करना पड़े इस प्रकार अपनी भोजन व्यवस्था का आयोजन करता है।

अरे, दिन में एक बार भी शौचालय जाना पड़े तो भी वहाँ अधिक समय तक बैठा नहीं रहता।

उत्तर दीजिए। जो रुख आप शौचालय के लिए अपनाते हैं क्या आप वहीं रुख हिंसा के लिए अपनाते हैं भला?

शौचालय जाना पड़े तो ही जाना, उसी प्रकार हिंसा करनी पड़े तो ही करना यह निश्चित है भला?

शौचालय बार-बार न जाना पड़े इस प्रकार भोजन व्यवस्था का आयोजन करना। उसी प्रकार हिंसा अधिक न करनी पड़े वैसी जीवन व्यवस्था को अपनाना यह निश्चित है।

शौचक्रिया की प्रशंसा कभी नहीं करना, वैसे ही हिंसा की प्रशंसा भी कदापि न करना, यह निश्चित है भला।

मन की खतरनाक चालबाजी को अच्छी तरह समझ लीजिए। जीवन में पाप का प्रवेश वह सकारण करता है परन्तु, तत्पश्चात् कारण समाप्त होने पर भी जीवन में उस पाप को स्थिर कर देता है। इस विधान में

संदेह होता हो तो जीवन में हिंसा के जो भी पाप स्थिर हो गए हैं उन पर एक दृष्टिपात करके देखिए।

आपको विश्वास हो जाएगा कि पाप का प्रवेश जीवन में सकारण हुआ था, परन्तु आज कारण समाप्त हो जाने पर भी पाप तो ज्यों के त्यों स्थिर ही हो गए हैं।

घर में अंधेरा था। लाइट चालू की थी। आज प्रकाश है, फिर भी लाइट चालू है। गर्मी लग रही थी। इसलिए पंखा चालू किया था। आज गर्मी नहीं लग रही है, फिर भी पंखा चालू है। रात में अचानक स्वास्थ्य खराब हो गया था इसलिए रात्रिभोजन किया था। आज स्वास्थ्य बिल्कुल अच्छा है फिर भी रात्रिभोजन जारी है।

बाजार जाते समय रास्ते पर हरियाली थी इसलिए उस पर चलना जरूरी था। आज बंगले में 'लोन' उगा दी है और उस पर कूदना जारी है। रास्ते से गुजरते समय कुत्ता पीछे पड़ गया था, उसे भगाने के लिए हाथ में पत्थर उठाया था। आज पेड़ के नीचे कुत्ता शांति से सो रहा है, फिर भी उस पर पत्थर फैंकना जारी है।

क्या है यह! एक समय की अकारण हिंसा आज आदत बन गई है।

याद रखिए। कठोर पत्थर में से प्रभु नयनाभिराम प्रतिमा प्रकट की जा सकती है, परन्तु कठोर हृदय में प्रभु की प्रतिमा तो क्या बल्कि सज्जनता की प्रतिष्ठा भी नहीं की जा सकती।

भूलिए मत यह बात कि मिठाई कोई भी हो उसमें जैसे शक्कर तो होती ही है। नमकीन कोई भी हो उसमें नमक तो होता ही है। उद्यान कोई भी हो उसमें जैसे पेड़-पौधे तो होते ही हैं, वैसे ही धर्म कोई भी हो अथवा धर्मी कोई भी हो उसमें कोमलता तो होती ही है।

क्या कहूँ? परमात्मा महावीर की माता का नाम त्रिशला है और पार्श्वप्रभु की माता का नाम भले ही वामादेवी है, परन्तु प्रत्येक तीर्थंकर भगवन्त की माता का नाम 'करुणा' है।

साधु भगवन्त की माता का नाम 'पाँच समिति -तीन गुप्ति' है। श्रावक की माता का नाम 'यतना' है। सज्जन की माता का नाम 'कोमलता' है। धर्म की माता का नाम 'अहिंसा' है। इन सभी प्रकार की माताओं में एक सामान्य तत्त्व कोई हो तो उस तत्त्व का नाम है 'प्रेम'। बछड़ा जैसे गाय के पीछे चला आता है, परछाई जैसे प्रकाश के पीछे चली आती है। वैसे ही, अहिंसा प्रेम के पीछे खींची चली आती है।

प्राणातिपात नामक पापस्थानक की शक्ति को नष्ट कर देना है तो हृदय को प्रेमभाव से भर लीजिए। आप किसी भी जीव की हिंसा तो नहीं ही कर पाएंगे, परन्तु पाँचों इन्द्रियों को, मन-वचन-काया के बल को और श्वासोच्छ्वास को- जिन्हें 'प्राण' में समाविष्ट किया जाता है उन्हें आहत नहीं कर पाएंगे।

यह चमत्कार!

फ्रांस की सरकार ने किसी भी कारण से लगभग 400 श्वानों को मौत के घाट उतार देने के निर्णय की घोषणा कर तो दी, परन्तु उस निर्णय की जानकारी एक युवक को प्राप्त हुई और वह सीधा सरकारी अधिकारी के पास पहुँच गया। 'मुझे केवल एक घण्टा दीजिए। उसके बाद आपको कुत्ते के साथ जो करना है कीजिएगा।' सरकारी अधिकारी ने उस युवक की बात मान ली। उस युवक ने 20 ट्रक किराये से लिए। एक-एक ट्रक में 20-20 कुत्तों को रखा और हर कुत्ते के गले में एक पटिया लटका दिया, जिसमें लिखा था-'आप मुझे बचा लीजिए, मैं जीवन भर आपका वफादार रहूँगा।' और उस युवक ने शहर की 20 गलियों में एक-एक ट्रक को रवाना कर दिया और मात्र पन्द्रह मिनट में ही वे कुत्ते किसी के घर के मेहमान बन गए।

हाँ, धन सामग्री खरीदने का चमत्कार कर सकता है, परन्तु प्रेम तो जीवों को बचाकर आत्मा को परमात्मा बनाने का चमत्कार कर देता है।

इस व्रत को केन्द्रस्थान में रखकर कम-से-कम यह प्रतिज्ञा तो अवश्य कीजिए। जीवन में कभी भी मांस या अण्डे नहीं खाऊँगा। गर्भपात करूँगी नहीं और किसी को भी करने की सलाह नहीं देंगे।

-'मेरे जागने की ही देर है' पुस्तक से साभार

मुक्ति-प्राप्ति का सरलतम उपाय

श्री कन्हैयालाल लोढ़ा

मुक्ति है बंधन-रहित होना
बंधन वहीं है जहाँ पराश्रय है,
पराश्रय वहीं है-
जहाँ अपना सुख पर के आश्रित है,
पर वही है-
जो अपने से अलग हो जावे,
जिसका वियोग हो जावे,
सदा साथ न रहे,
इस दृष्टि से-
शरीर, संसार, परिवार आदि
समस्त दृश्यमान वस्तुएँ पर हैं,
इनमें से किसी पर भी-
अपने सुख का निर्भर होना
पराश्रय है, पराधीनता है, बंधन है
और बंधन को तोड़ना ही
मुक्त होना है।
प्रश्न उठता है-
बंधन क्यों व कैसे होता है?
उत्तर में कहना होगा
पर से सुख भोगने से
पर के प्रति आकर्षण उत्पन्न होता है,
इसे ही राग कहते हैं
राग से ही पर से
संबंध स्थापित होता है,
संबंध स्थापित होना ही बंधन है।
संबंध शब्द बना ही बंधन से है,
अतः संबंध शब्द का अर्थ है
सब प्रकार से बंध जाना
अतः जहाँ आकर्षण है राग है,
पराश्रय है, पराधीनता है,
वहाँ ही बंधन है।
आकर्षण, राग, पराश्रय,
पराधीनता, बंधन
इन सब में जातीय एकता है।
ये सभी बंध के ही रूप हैं।
इन सब में घनिष्ठ संबंध है।
इसमें से जहाँ कोई भी एक है-
वहाँ अन्य सब भी है।
इन सबका संबंध पर से
सुख लेने की प्रवृत्ति से है।
पर से सुख लेना भोग है।
भोग ही समस्त बंधनों की जड़ है।
भोग के तीन रूप हैं-
1. कामना, 2. ममता और 3. अहंभाव
भविष्य में विषय सुख पाने के लिए-
अप्राप्त वस्तु आदि की इच्छा करना,
इसे काम या कामना कहा जाता है।
प्राप्त भोग्य सामग्री को अपना मानना
और उसे सदा बनाये रखने की
अभिलाषा होना,
इसे ममता कहा जाता है।
शरीर आदि वस्तुओं से
तादात्म्य स्थापित करना-
उन्हें अपने रूप मानना, या
अपने को वस्तुओं के रूप मानना
उनमें अहंभाव स्थापित करना,

इसे अहंकार कहा जाता है।
कामना वस्तुओं के प्रति भविष्यकाल
के रोग की द्योतक है।
ममता वस्तुओं के प्रति वर्तमानकाल में
उदयमान राग की द्योतक है।
अहंभाव वस्तुओं के प्रति सदा काल
राग बनाये रखने का द्योतक है।
राग ही बंधन है।
राग का तोड़ना ही बंधन का तोड़ना है।
अतः कामना के त्याग से
नवीन बंध होना रुक जाता है।
ममता का त्याग करने से
विद्यमान वस्तुओं के प्रति रहा हुआ
उदयमान राग मिट जाता है,
जिससे विद्यमान वस्तुओं के बंधन से
मुक्ति मिल जाती है।
अहंभाव के त्याग से
वस्तुओं के प्रति तादात्म्य मिट जाता है,
जिससे समस्त वस्तुओं से
सदा के लिए
संबंध विच्छेद हो जाता है।
इसे ही शाश्वत मुक्ति कहा जाता है।
अतः मुक्ति पाने का उपाय है-
कामना, ममता और अहंभाव का त्याग।
इनके त्याग के लिए
किसी श्रम-साध्य प्रयास की,
किसी वस्तु/व्यक्ति परिस्थिति की
किसी क्षेत्र, काल अनुष्ठान की
लेश मात्र भी आवश्यकता नहीं होती।
अतः मुक्ति-प्राप्ति के लिए
पराश्रय अपेक्षित नहीं है।
मुक्ति के लिए
निज ज्ञान के आदर करने
की आवश्यकता है।
यह सभी को ज्ञान है कि-
पर वस्तुओं से मिलने वाला सुख
क्षण भर भी नहीं रहता है, न रहा है,
और न आगे कभी रहने वाला है।
अतः जो सुख किसी भी प्रकार
रहता ही नहीं है
केवल प्रतीत होता है,
जिसका अस्तित्व ही नहीं है
उस सबको पाने या बनाये रखने का
प्रयास करना भयंकर भूल है।
यही ज्ञान का अनादर है।
इस भूल को भूल जानकर,
यह निर्णय करना कि-
हम भूल की पुनरावृत्ति कभी नहीं करेंगे,
इससे भूल मिट जाती है,
अर्थात् कामना, ममता, अहंभाव,
राग, द्वेष आदि
समस्त दोष मिट जाते हैं।
जिनके मिटते ही समस्त बंधनों से,
समस्त दुःखों से, मुक्ति मिल जाती है।
अतः मुक्ति पाने के लिए
विषय-सुखों का
त्याग करना है।
त्याग के लिए किसी प्रवृत्ति की,
क्रिया की,
श्रमसाध्य उपाय की
आवश्यकता नहीं होती है।
अर्थात् मुक्ति पाने में,
पराधीनता से, बंधन से मुक्त होने में
लेश मात्र भी पराधीनता व
असमर्थता नहीं है।
अथवा यों कहें कि

विषय सुख को त्याग दें
तो मुक्त ही हैं।
अतः मुक्ति की प्राप्ति अत्यन्त सरल,
सहज व स्वाभाविक है।
इसके लिए हम जो दोष कर रहे हैं,
भोग-भोग रहे हैं
उन दोषों को करना बंद कर देने के
अतिरिक्त कुछ नहीं करना है।
हमने इस जीवन में
अगणित बार भोग भोगे,
उनसे मिलने वाला सुख नहीं रहा,
अर्थात् भोग भोगने से कुछ नहीं मिला,
आगे भी कुछ नहीं मिलने वाला है।
अतः भोग भोगना व्यर्थ है,
जो व्यर्थ है,
उसे त्याग देने मात्र से मुक्ति
मिलती है।
ऐसी सहज स्वाभाविक
मुक्ति-प्राप्ति से निराश होना,
उसे असंभव व कठिन मानना,
उसे भविष्य पर टाल देना,
उसकी उपेक्षा करना,
उसकी प्राप्ति में
अपने को असमर्थ मानना,
उसकी प्राप्ति के लिए उत्कंठा न जगना,
भयंकर भूल है,
अपना सर्वनाश करना है।
मानव मात्र जिस क्षण चाहे उसी क्षण
इस भूल को त्याग कर दुःखों से
मुक्ति प्राप्त कर सकता है।
इसी में अमूल्य मानव जीवन की सार्थकता है।
अतः मुक्ति-प्राप्ति के अमूल्य अवसर
का एक क्षण भी प्रमाद में न जाने दें।

यह सदैव स्मरण रखना चाहिए कि-
कामना, ममता, अहंकार से जब तक
हम मुक्त नहीं होंगे,
तब तक हमें पराधीनता, जड़ता,
खिन्नता, हीनता, दीनता, अभाव,
तनाव, हीन भाव, द्वंद्व
आदि भयंकर दुःखों को न चाहते हुए
भी सहन करना पड़ेगा।
संसार की कोई भी वस्तु
आवश्यकता अनुभव होने पर
मिले अथवा न भी मिले,
परन्तु मुक्ति तो उसकी
तीव्र आवश्यकता अनुभव होने पर
तत्क्षण मिल जाती है।
परन्तु यह आवश्यकता या माँग,
पूर्ण रूप से होनी चाहिए, अधूरी नहीं।
भोग की इच्छा के साथ मुक्ति की मांग,
अधूरी मांग है।
भोग को बंधन व दुःख रूप अनुभव कर
उसे पूर्ण रूप से त्यागने का पुरुषार्थ करने से
मुक्ति की अनुभूति हो जाती है।
सच तो यह है कि
हम स्वभाव से सदैव ही मुक्त हैं।
अपनी भूल से
संसार से संबंध स्थापित करने से
बंधन का अनुभव कर रहे हैं।
अतः शरीर और संसार आदि
नश्वर पदार्थों से संबंध तोड़ दें
तो अविनाशी जीवन से
अभिन्नता हो जायेगी।
इसे ही अध्यात्म भाषा में
मुक्ति कहते हैं।
दोष और उनके फल से मिलने वाले

दुःखों से छुटकारा पाना ही मुक्ति है।
पर स्मरण रहे कि-
मुक्ति के लिए
दोष व दुष्प्रवृत्तियों का त्याग करना है,
सद्गुणों एवं सद्प्रवृत्तियों का त्याग नहीं करना है।
दोष रहित होना ही मुक्ति है।
मुक्ति के नाम पर सद्प्रवृत्तियों का त्याग करना
अकर्मण्यता है, अकर्तव्य है, अधर्म है,
एवं दुष्प्रवृत्तियों का आह्वान करना है।
प्रवृत्ति बंध का कारण नहीं है,
प्रवृत्ति के साथ रही हुई
फल की आकांक्षा
सुख पाने की अभिलाषा ही,
कर्म बंध का कारण है।
फल की आकांक्षा से रहित
दूसरों के हित व प्रसन्नता के लिए
की गयी दया, दान, सेवा, करुणा आदि
सद्प्रवृत्तियाँ, सद्व्यवहार
कर्म बंध के हेतु नहीं हैं
अपितु ये सब कर्म क्षय के हेतु हैं, तथा
ये सद्गुण हैं, धर्म हैं, मुक्ति प्रदायक हैं।
आशय है कि मुक्ति पाने के लिए
केवल दोषों का दुष्प्रवृत्तियों का
त्याग ही अपेक्षित है।
अतः वर्तमान में ही
मुक्ति की अनुभूति करने में
मानव मात्र समर्थ एवं स्वाधीन है।

-मानसरोवर, जयपुर (राज.)
(जिनवाणी, नवम्बर 1997 से गृहीत)

अनोखा भोजन

श्री हरिश्चन्द्र अरोड़ा 'सौभाग्य'

इतिहास प्रसिद्ध महमूद गजनवी भारत के नगरों को लूटता उजाड़ता दीपलपुर पहुँचा। उसका विचार था कि वहाँ का राजा चक्रधरसिंह उसका डटकर मुकाबला करेगा और तब ही उसे विजय लक्ष्मी प्राप्त होगी, परन्तु वहाँ का राजा नीति निपुण एवं चतुर था। उसे रक्तपात करना अप्रिय था। भगवान् महावीर स्वामी के 'अहिंसा परमो धर्मः' में उसे दृढ़ आस्था थी। उसने महमूद गजनवी की अधीनता स्वीकार कर ली और सन्धि-पत्र लिखने में कोई आनाकानी नहीं की।

सन्धि-पत्र लिखकर उसने महमूद के सम्मान में एक विशाल भोज का आयोजन किया। समस्त सम्मानित अतिथियों को नाना प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन परोसे गये थे, परन्तु महमूद की थाली में हीरे, मोती, जवाहरात और स्वर्ण आभूषण परोसवा दिये। भोजन की थाली देखकर महमूद क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने दाँत पीसते हुए कहा- "ये कौनसा खाना है जो तूने मुझे परोसा है?" राजा ने विनम्रता से उत्तर दिया- "गजनीपति! क्षमा करें। ये सामान्य भोजन आपको अच्छे नहीं लगते। आपको तो धन और स्वर्ण की ही भूख है। इसीलिए आपकी प्रिय वस्तु ही मैंने आपकी थाली में परोसवाई है। सोने और चाँदी के लिए ही आपने हमारे राज्य पर आक्रमण किया है। अतः आप इसे खाकर ही अपनी भूख शान्त करें।

राजा का यह उत्तर सुनकर महमूद गजनबी बड़ा शर्मिन्दा हुआ और उसे अपनी भूल ज्ञात हुई। उसने न केवल राजा से कर लेना ही छोड़ दिया, वरन् प्रसन्न होकर उसका संधि-पत्र भी उसे वापिस लौटाकर अभयदान दे दिया।

-जिनवाणी, मई 1979 से गृहीत

रोगाणु और स्वास्थ्य

श्री पी. शिखरमल सुराणा

1. प्रकृति का नियम है कि जो जीवन मिट्टी से पेड़-पौधों के रूप में उगता है वह प्राणियों के पेट से होता हुआ वापस मिट्टी में ही जाए, मल-मूत्र के रूप में।
2. मिट्टी में ऐसे असंख्य जीवाणु बैठे रहते हैं जो बड़े जीवों के मल-मूत्र को वापस पौधों का भोजन बना देते हैं। सीवर की नालियाँ इस जीवनदायी उर्वरता को मिट्टी से दूर, मैले पानी को साफ करने के कारखानों की ओर ले जाती हैं।
3. एंटीबायोटिक का चलन दूसरे विश्व युद्ध के दौरान हुआ। जिन सैनिकों को यह दी जाती थी उनका मूत्र इकट्ठा किया जाता था, ताकि उसे सुखा कर उससे दवा निकाली जा सके, किसी दूसरे घायल सैनिक को देने के लिए। आज एंटीबायोटिक दवाएँ मनो-टनों के हिसाब से बनती हैं। पेशाब से निकलने पर इन्हें संजोया नहीं जाता।
4. लुधियाना और दिल्ली के अस्पतालों में एक फोड़े के इलाज के लिए एक व्यक्ति भर्ती हुआ था। एक छोटे-से ऑपरेशन के बाद वह ठीक हो गया और स्वीडन चला गया। वहाँ उसे पेशाब की नली में संक्रमण की शिकायत हुई। चिकित्सकों को पता लगा कि उस पर किसी दवा का असर नहीं हो रहा था। उसके पेशाब की जाँच में एक ऐसा रोगाणु मिला जो कई एंटीबायोटिक दवाओं के प्रतिरोध की क्षमता रखता था।
5. रोगाणु ताकतवर वही बनते हैं जहाँ उन्हें कई तरह की एंटीबायोटिक दवाओं से लड़ना पड़ता है।
6. अस्पताल में कई तरह के रोगाणु मरीजों के साथ आते हैं। यहाँ कई मरीजों को एंटीबायोटिक दवाएँ एहतियात के तौर पर दी जाती हैं, चाहे उन्हें वह रोग हो या न हो। अस्पतालों की सफाई के लिए भी कई तरह के रोगाणुनाशक इस्तेमाल होते हैं।
7. कुछ समृद्ध घरों के शौचालयों में उड़ेल-उड़ेल कर रोगाणुनाशक डाले जाते हैं ताकि अस्पताल या होटल जैसी सफाई घर भी दिखे। कुछ लोग जेब में रोगाणुनाशक द्रव्यों की शीशी रखते हैं और बार-बार उनमें हाथ मल-मल कर साफ करते हैं। इन उत्पादों को बेचने वाले इनका विज्ञापन भी ऐसे करते हैं, जैसे स्वच्छता का यही एक ठीक साधन है।
8. शौच जाने के बाद साबुन से हाथ धोना स्वास्थ्य के लिए बहुत अच्छा है। लेकिन बाजारू एंटी-बायोटिक साबुनों की असलियत अलग है।
9. सफाई का हमारा आधुनिक विचार सूक्ष्म जीवों का घोर अनादर करता है। उससे हम कुछ नए तरह के रोगों में भी फँस रहे हैं।
10. विज्ञान में अब एक भरा-पूरा सिद्धान्त है जो कहता है कि हमारी कुछ बीमारियों का कारण अत्यधिक स्वच्छता है। अंग्रेजी में इसे 'हाइजीन हाएपोथेसिस' कहते हैं।
11. हम उस वातावरण से दूर चले आए हैं, जिसमें हजारों सालों में हमारा क्रमिक विकास हुआ है। हम उप परजीवियों से दूर हो गए हैं, जिनका हमारे रोगप्रतिरोध तंत्र से गहरा सम्बन्ध रहा है। जैसे-जैसे इन विषयों की परतें खुल रही हैं, वैसे-वैसे अध्यात्म के कुछ पुराने संदेश नए प्रकाश में दिखने लगे हैं। जो पहले श्रद्धा की आँख से समझा जाता था इसकी झलक आज शोध की दृष्टि से भी दिख रही है।

(सोपान जोशी कृत 'जल,थल,मल' पुस्तक से साभार)

-राष्ट्रीय अध्यक्ष, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर (राज.)

छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन

डॉ. दिलीप धींग

उठो साथियों लो अंगड़ाई,
क्रांति का आह्वान हुआ है।
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।टेर।।

सामाजिक हिंसा है अपव्यय,
अनर्थदण्ड का कारण है,
कुरीतियाँ, होड़ा-होड़ी,
ये आधुनिक रावण हैं।
जो हराए इस रावण को,
वो जन-जन का राम हुआ है।
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।1।।

चकाचौंध में लोग उमड़ते,
मस्ती के गुलछर्रे उड़ते,
पलभर की उस वाहवाही में,
कितने ही आदर्श उजड़ते।
ऐसी महफिलों से मित्रों,
बस मिथ्या अभिमान हुआ है,
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।2।।

फिजूल खर्ची देखादेखी,
भेड़चाल को छोड़ दीजिये,
सद्गुरु के संकेत समझकर,
अपना जीवन मोड़ दीजिये।
जिसने सद्व्यय, मितव्यय
समझा, वो सच्चा धनवान हुआ है,
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।3।।

सादगी की राह सुहानी,
अपरिग्रह-व्रत का आधार,
आओ! इस सुपथ पर चलकर,
देश-धर्म से कर लें प्यार।
मर्यादा के साथ सभी के,
जीवन का उत्थान हुआ है,
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।4।।

अंधविश्वासों की अटवी,
मानव को भटकाती है।
सच्चे विश्वासों की प्राची,
नई रोशनी लाती है।
आडम्बर जिसने भी छोड़ा,
उसका महिमागान हुआ है,
छोड़ो अपव्यय और प्रदर्शन,
सन्तों का फरमान हुआ है।।5।।

-अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र,
सुगन हाउस, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट,
साहुकारपेट, चेन्नई-600001 (तमि.)

सुई बनाम कैंची

दर्जी से पूछा गया- क्या कारण है कि काम करते समय तुम सुई को अपनी पगड़ी या टोपी या कमीज में खोस लेते हो और कैंची को यों ही पैरों में छोड़ देते हो, जबकि तुम्हारे काम में दोनों उपकरण अत्यन्त आवश्यक है।

दर्जी ने उत्तर दिया- ''कैंची का काम काटने का है। यह एक को अनेक टुकड़ों में विभक्त कर देती है। सुई का काम जोड़ने का है। वह कटे और फटे टुकड़ों को जोड़कर एक कर देती है। काटना या टुकड़े करना महत्त्व की बात नहीं है। महत्त्व की बात अलग-टुकड़ों को जोड़ने में है। *-जिनवाणी, सितम्बर 1976 से गृहीत*

धर्म और नैतिकता

प्रो. सुमेरचन्द जैन

यह मान्यता सनातन सत्य रूप है कि धर्म 'चरित्र' है और चरित्र 'धर्म'। धर्म कर्त्तव्यों की रूपरेखा बताता है। कर्त्तव्य पालन से नैतिकता का आविर्भाव होता है जो दिन प्रतिदिन व्यवहार में स्थान पा लेती है। इसी नैतिकता का आचरण रूप बनता है 'चरित्र', जो विकास पाता हुआ सदाचार रूप बनता है। चरित्र जो विकास पाता हुआ सदाचार के मार्ग पर अग्रगामी बनता है। ऐसे चरित्र की परिपक्वता ही धर्म का प्रत्यक्ष रूप बन जाती है। यही कारण है कि धर्म और नैतिकता को समरूपी बताया गया है।

धर्म क्या है– धर्म मोक्ष का साधन है। धर्म मानवता का मेरुदण्ड है। धर्म विघटन नहीं, संघटन की चेतना है। शत्रुता नहीं, प्रीति का उजास है। युद्ध नहीं, शांति का साम्राज्य है। जीवन शैली की तेजस्विता का आदर्श है।

विभिन्न विचारकों, मनीषियों ने अपनी लेखनी का बहुचर्चित विषय धर्म को बनाया है। धर्म का अर्थ है– धारण करने वाला मोक्ष का साधन। वह धर्म है जो आत्मा के स्वभाव को धारण करे, दशवैकालिक सूत्र में धर्म की महत्ता का प्रतिपादन करते हुए कहा गया है–

'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति, जस्स धम्मे सयामणो।।'

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण है। जिसका मन धर्म में रमा रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं।

उत्तराध्ययन सूत्र में कहा गया है– 'जन्म-मरण के प्रवाह में बहते हुए प्राणियों के लिए धर्म द्वीप, प्रतिष्ठा, शरण और गति है।'

मनुस्मृति में बताया गया है कि वेद, स्मृतिशास्त्र, सदाचार तथा अपनी आत्मा को प्रिय लगना– ये चारों धर्म के प्रत्यक्ष लक्षण हैं। आचार को सर्वोत्कृष्ट धर्म माना गया है। जो धर्म का अतिक्रमण करता है, उसका समूल नाश हो जाता है। जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसके लिए सहायक बनता है।

धर्म नीति की रक्षा के लिए राजा हरिश्चन्द्र ने राज्य सिंहासन, पत्नी एवं पुत्र का परित्याग किया। राजा पृथु, महाराज मनु तथा कुबेर आदि ने सत्य धर्म का अनुष्ठान कर अतुल वैभव, राज सिंहासन को प्राप्त किया। धर्म का अर्थ है– कल्पनाओं, इच्छाओं का संयम। जो कीर्ति, यश, ख्याति के लिए धर्म करते हैं, वे धर्म के व्यापारी हैं।

धर्म की एक परिभाषा यह भी है–'धारयति इति धर्मः।' अर्थात् जो धारण करता है वह धर्म है। इसका तात्पर्य यह है कि जब मनुष्य व्यापकता के आधार पर धारण करता है, तभी धर्म की सार्थकता व्यक्त होती है। मनुष्य कर्म करता है, किन्तु उसकी परख धर्म की कसौटी पर की जाती है। कर्म की श्रेष्ठता उसके शुभत्व से आंकी जाती है जो धर्म और चरित्र दोनों के लिए वांछनीय है। निःस्वार्थ कर्म ही सदा शुभ होता है और जो शुभ है, वही धर्म है, वही चरित्र है।

नैतिकता क्या है– सभी मनीषियों ने नैतिकता को अपनी दृष्टि से परिभाषित करने का प्रयास किया है। पाश्चात्य विचारकों की तरह भारतीय दार्शनिकों ने भी मानव के आचरण एवं चरित्र से सम्बद्ध समस्याओं पर गम्भीरता पूर्वक चिन्तन किया। गीता में ज्ञान योग, भक्तियोग, कर्म-योग एवं कर्त्तव्य पालन, जैन दर्शन में सदाचार, त्याग, वैराग्य, संयम, तप, अहिंसा तथा बौद्ध दर्शन में अष्टांग पथ को नैतिकता की सीमा रेखा में परिगणित किया गया है। महात्मा गाँधी ने पाँच महाव्रतों के साथ सर्व धर्म समभाव, स्वदेशी, स्वावलम्बन, अभय, अस्वाद, अस्पृश्यता निवारण को नैतिकता के अन्तर्गत स्वीकार किया।

कुछ विद्वानों ने नैतिकता को व्यवहार की शुद्धि कहा है। समाज में जो व्यवहार चलता है, उस व्यवहार में प्रामाणिकता रखना ही नैतिकता है। दूसरों के अधिकार हड़पने की चेष्टा न करना नैतिकता का मूल है। सत्य, अहिंसा का नैतिक पहलू है। अपरिग्रह उसका आर्थिक पहलू है। अचौर्य ब्रह्मचर्य उसके सामाजिक पहलू है। नैतिकता सामाजिक जीवन का अपरिहार्य अंग है। किसी भी युग और किसी भी समाज में उसकी अनिवार्यता को नकारा नहीं जा सकता। नीति से बिना लोक व्यवहार असम्भव है। धर्म और अध्यात्म की फलश्रुति नैतिकता है। नैतिकता हृदय की पवित्रता है, आन्तरिक स्थिति है।

नैतिकता का स्रोत आध्यात्मिकता है। अकेलेपन में अध्यात्म योग है, वही दो में नैतिकता बन जाती है। नैतिकता के फलन हैं- उदारवादी विचार, निष्कपट-व्यवहार, किसी को धोखा न देने की मनोवृत्ति, दूसरों को सहने की क्षमता।

नैतिक मूल्य सापेक्ष भी है और निरपेक्ष भी। देशकाल और परिस्थितियाँ नैतिक व्यवहार की मित्रता का हेतु बनती है। परिवर्तनशील नैतिक व्यवहार की पृष्ठभूमि में अपरिवर्तनीय अध्यात्म रहता है। वह सत्य और प्रामाणिकता के प्रति आन्तरिक निष्ठा के रूप में प्रकट होता है।

धर्म और नैतिकता– नैतिकताविहीन धर्म का कोई अर्थ नहीं। आज बिना नैतिकता का धर्म चल रहा है, इसलिए बुराइयाँ नहीं मिट रही हैं। प्राणविहीन धर्म, मुर्दा धर्म चल रहा है। यह बड़ी कटु बात है, किन्तु है सच्ची बात। नैतिकताविहीन धर्म अनास्था भी पैदा कर रहा है। समाज में कोई परिवर्तन भी नहीं ला रहा है और प्रवंचना भी पैदा कर रहा है। जहाँ नैतिकता हो, वहाँ धर्म की बात समझ में आती है। इस सन्दर्भ में नैतिकता को बहुत गहराई से समझ लें तो फिर धर्म को समझने में कोई कठिनाई नहीं होगी। धर्म पवित्र आत्मा में रहता है। मगर आत्मा की पवित्रता नहीं है तो फिर कितनी ही धार्मिक-क्रियाएँ करते जाओ, बहुत उपासना कर लो, वन्दन कर लो, सूत्र रट लो, कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। किसी कवि की पंक्तियाँ हैं-

जो मन्दिर में रोज गया, उपकार करना न सीखा,
पूजा पाठ किया, निश्छल व्यवहार करना न सीखा।
बहुत दूर है स्वर्ग, धरा भी उसे नहीं झेलेगी।
जिसने ठगा पड़ौसी को, पर प्यार न करना सीखा।

आज धर्म को ठीक से न समझने के कारण धर्म सम्बन्धी अनेक भ्रमणाएँ उत्पन्न हो रही हैं। धर्म को नैतिकता के साथ न जोड़कर दूसरी चीजों के साथ जोड़ दिया गया है। जीवन व्यवहार से धर्म पूरी तरह से कट गया है। आदमी ने मान लिया है कि धर्म धर्मस्थान की चीज़ है। दुकान का धर्म अलग, मकान का धर्म अलग और तीर्थ का स्थान का धर्म अलग है। यही कारण है कि मन्दिर में बैठा व्यक्ति दुकान, कार्यालय में वैसा नहीं रह पाता। मन्दिर में घंटा-घड़ियाल बजाते समय, पूजा करते समय जो हावभाव उसका होता है, तराजू हाथ में लेते ही सब बदल जाता है। किसी कवि ने ठीक ही लिखा है-

तरस आ रहा धार्मिक जन, कैसा जीवन जीता है,
मन में कपट योजनाएँ, हाथों में गीता है।
जीव दया के लिए छानकर जो पानी पीता है,
खून अनछाना लोगों का, वह कैसे पीता है।।

-10, इण्डस्ट्रियल एरिया, रानी बाजार, बीकानेर (राज.)

बुरे का भला

श्री सुन्दरलाल छल्लाणी

सुकरात बड़े सत्यभक्त और स्पष्ट वक्ता थे। सत्य अप्रिय होता है और अप्रिय सत्य को कहने वाले और सुनने वाले दुर्लभ होते हैं। एक बार सुकरात की साफगोई पर किसी ने उन्हें पीट दिया। मगर सुकरात की पेशानी पर शिकन तक न आयी। एक मित्र चकित होकर बोला- "आप मार खाकर भी चुप रह गये?"

"अगर मुझे गधा लात मारे तो क्या मैं उसे लात मारूँ?" सुकरात ने सहज भाव से जवाब दिया।

-जिनवाणी, नवम्बर 1978 से गृहीत

श्रीमद् वर्धमान-वन्दना

श्री अरुणमुनिजी म.

सतत तपोमय जीवन राजे,
नित्य सजग तुम अन्तर साजे।
नियमितता से रवि-शशि लाजे,
सचमुच में तुम श्रमण महान्।।1।।
सब जीवों को निज समलेखा।
स्व-उपयोग में साधन पेखा।।
तुम-सा नहीं समताधर देखा।
'समन' हमारे हे गुणखान!।।2।।
आग कषायों की कर शीतल।
किये भाव शम-सीकर-शीतल।।
शांत किया झुलसा धरती तल।
'शमन' पियारे हे सुखखान!।।3।।
विभूतियों की तुझमें क्रीड़ा।
डुई भुलाकर भव की पीड़ा।।
हरने मन की दारिद्र पीड़ा।
प्रकटे धन्य 'समण भगवान्'।।4।।
दत्तागत विपदा को झेला।
तन-मन को न किया कुछ मैला।।
तब सुर के अधरों पर खेला।
'महावीर'! तेरा जय-गान।।5।।
तू श्रुतधर्म आदिकर स्वामी।
तू तीर्थंकर अन्तरयामी।।
स्वयम्बुद्ध! नहीं तुझमें खामी।
हे पुरुषोत्तम! हे बलवान्!।।6।।
सिंह-सा एकाकी तू निर्भय।
कोमल मधुर कमल-सा हिरदय।।
गन्धहस्ति सा तू शत्रुञ्जय।
हे लोकोत्तम! महिमावान्।।7।।
लोकदीप! जो तू प्रकटाया।
नवल ज्योति-सागर लहराया।।
लोकनाथ! जन-हित दरसाया।
अभयंकर कर अभय प्रदान।।8।।
सत्य परखने दी नव आँखें।
पथ-भूलों को सत्पथ राखे।।
शरण दिया, दी जीवन-पांखे।
दानी अनुपम हे धनवान।।9।।
दिया तुम्हीं ने धर्म हितंकर।
हे उपदेशक! पाप-पुरन्दर।।
तुम हो अगुआ धर्म-धुरन्धर।
धर्मरथ तुम्हीं से गतिमान्।।10।।
दान हिमाचल है सीमन्धर।
शील, तपस औ भाव समुंदर।।
चातुरन्त धर्मधरा सुन्दर।
जिसके तुम ही न्याय-विधान।।11।।
भव-सागर में द्वीप सुखकर।
दुःखियों पर तू परम कृपाकर।।
टूटे के विश्वास सुधाधर।
गति तू, तू आधार महान्।।12।।
स्व-में लीन उपयोग तुम्हारा।
जिसे न कोई रोकनहारा।।
कहीं न जिसका अ-गम विहारा।
हुआ छद्मका चिर अवसान।।13।।
खुद पर खुद ही तुम जय पाये।
तब गुण-गायक भी जय पाये।।
भव-तैर, कई जन तैराये।
बोधक हो तुम बुद्ध महान्।।14।।
अघ-मोचक! मुक्ति मधुर पेखे।

बिना नयन तू सब कुछ देखे।।
बिना विचारे सब कुछ लेखे।
आकृति, पर नहिं रूप-विधान।।15।।
जो अचल अरुज अनन्त अक्षय।
परम सत्य वह शिव सिद्धालय।।
नहीं जहाँ से फिरने का भय।
पाये 'अलमस्तु' भगवान।।16।।
नमो नमो हे प्रभु! अविकारी!
नमो नमो है आत्म-बिहारी!
नमो नमो है भय संहारी!
पाप अस्त हो ज्योति विहान!

-जिनवाणी, अप्रेल 1962 से गृहीत

महावीर की प्यारी वाणी

श्रीमती सूरज कुंवर मेहता

सुनो सुनो ए दुनिया वालों, महावीर की प्यारी वाणी।
जिसने जग के लिए सुखों की, हँसते-हँसते दी कुर्बानी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।
धर्म 'अहिंसा' मुख्य बताया, सब धर्मों का राजा।
नहीं मारना किसी जीव को, सब पर दया दिखाजा।।
चींटी से हाथी तक जितने, दिखते तुम्हें जिनावर।
सभी चाहते सुख से रहना, आतम एक बराबर।।
पेड़ वनस्पति पानी आदि, इनमें जीव निशानी।
इसीलिये तो बतलाया है, पीओ छान कर पानी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।
झूठ बराबर पाप न कोई, झूठा ठोकर खाता।
घर-बाहर और राज सभा में, कहीं न आदर पाता।।
घरवाली, माता, पुत्रादि भी विश्वास न लावें।
सत्य कभी ना छोड़ो, चाहे प्राण भले ही जावें।।
बड़े-बड़े मुनि-ऋषियों ने है, इसकी महिमा जानी।
गांधीजी ने इसकी रक्षा हित, त्यागी जिन्दगानी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।
चोरी करने वाले डाकू, लुच्चे जो चोर कहाते।
नाम न लेता इनका कोई, सुनकर सब घबराते।।
बहुत चोर तो चोरी करते, ऊँचे से गिर जाते।
पकड़े जाने पर, जेलों में डण्डे-जूते खाते।।
बड़े-बड़े डाकू चोरों ने हार अन्त में मानी।
धर्म अचौर्य से निज जीवन, सफल बनाओ प्राणी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।
पर की स्त्री माता पुत्री, बहन को ना घूरो।
अपनी बहन सुता सम जानो, काम वासना चूरो।।
वेश्या सेवन से हो जाती, बड़ी-बड़ी बीमारी।
धन दौलत और मान प्रतिष्ठा सबकी होत ख्वारी।।
रावण की क्या सुनी, नहीं है, तुमने नीच कहानी।
कष्ट सहे और प्राण गँवाये, नर्क पड़ा अभिमानी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।
लोभ पाप का बाप बताया, तृष्णा डाकन भाई।
इसके वश में लाखों ने, मणि सी अपनी जान गँवाई।।
जो सुख चाहो इस जीवन में, सन्तोषी बन जाओ।
आवश्यकता से ज्यादा धन, तुम अपने घर मत लाओ।।
जिओ और जीने दो सबको कहते आतम ज्ञानी।
स्याद्वाद पर चलकर 'प्रेम' ने महिमा पहिचानी।।
सुनो सुनो ए दुनिया वालों.....।।

-जिनवाणी, अप्रेल 1976 से गृहीत

मुक्तक

श्री चम्पालाल चोरडिया

महावीर मानव थे, महा मानव थे
पर हमने उनको भगवान बना दिया,
उनके उपदेशों को जीवन में उतारना था
पर हमने उन्हें शास्त्रों में सजा दिया
उनकी मूर्ति मन-मंदिर में बसानी थी
पर हमने उसे पाषाणी मंदिरों में बसा दिया,
उनका जीवन आदरणीय था, अनुकरणीय था
पर हमने उसे केवल वंदनीय बना दिया।

-जिनवाणी, मार्च 1976 से गृहीत

गन्दा कौन?

श्री तरुण बोहरा 'तीर्थ'

2 अक्टूबर को सुबह निर्मलकुमारजी सूट-बूट में दुबई से दिल्ली के लिए विमान में बैठ चुके हैं। गाँधी जयन्ती पर उन्हें दिल्ली स्थित "स्वच्छता अभियान संस्था" द्वारा आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि का आमंत्रण जो मिला है। निर्मलजी ने आकर्षक डब्बे से महंगा पान मसाला खाया और आँखें मूंद कर सोचने लगे। लगभग 3 घण्टे के हवाई सफ़र में निर्मलजी 30 साल पुरानी यादों में खो चुके थे। छोटे से गाँव के गरीब परिवार में जन्मे निमू की पढ़ाई बहुत कठिन परिस्थतियों में हुई। माता-पिता ने तो बहुत नैतिकता और सरलता के संस्कार दिए, पर अक्सर लोगों को कहते सुना कि पेट सिद्धान्तों से नहीं पैसों से भरता है। आखिर लोगों के ताने सहन नहीं कर पाया तो दिल्ली आकर मेहनत की रोटी से पेट भरने लगा। दो महीने बाद ही भाग्य दिल्ली से दुबई लेकर आ गया। कड़ी मेहनत से 16 साल का निमू 30 साल पहले दुबई में एक भारतीय व्यापारी के यहाँ सफाई कर्मी की नौकरी करने लगा। पाँच हजार रुपये मासिक से नौकरी पर लगे निमू की सिद्धान्तवादिता ने मालिक का दिल जीत लिया। बीस साल के बाद निसंतान मालिक ने निमू को व्यापार में भागीदार बना दिया। पाँच हजार की नौकरी से 50 करोड़ का मालिक बना कल का निमू आज "निर्मल सर" के नाम से जाना जाता है। पैसा हुआ तो शादी भी हो गयी और एकल परिवार बस गया। आज तो आलीशान बंगला, चमचमाती गाड़ियाँ और इनके आने से आया "रौब, अहंकार" सब कुछ है। समय-समय पर लाख-दो लाख रुपया कुछ संस्थाओं को दान भी देते रहते हैं, जिससे अखबारों में भी फोटो छपती रहती है। कुल मिलाकर हर महीने लाखों का दान देने वाले नामी समाजसेवी के रूप में पहचान भी बन चुकी है। दिल्ली में भी 'स्वच्छता अभियान संस्था' को देने के लिए बिना नाम भरे पूरी चेक बुक साथ लाये हैं और उसके बदले तत्कालीन विदेश मंत्री के साथ फोटो और टी.वी. पर सीधे प्रसारण की मांग रखी है "समाजसेवी निर्मल सर" ने।

"हमारा विमान अब दिल्ली के अन्तरर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे पर उतर चुका है।" विमानकर्मी द्वारा घोषणा सुनकर निर्मल सर यादों से जागे। दिल्ली विमानतल के बाहर स्वच्छता अभियान संस्था के पदाधिकारियों ने अपने मोटे दानदाता 'निर्मल सर' का खूब जोरों से स्वागत किया और महंगी होटल के एकदम बड़े साफ सुथरे कमरे में रुकाया। 2 से 4 बजे तक का कार्यक्रम है। 5 से 9 बजे तक दिल्ली के कनाट पैलेस में खरीदारी करनी है, बीवी, बच्चों और व्यापारिक मित्रों के लिए महंगे उपहार जो लेने हैं। रात दस बजे का समय दिया है, विदेश मंत्री महोदय ने घर पर भोजन के लिए। बहुत देर हो जायेगी, खेर विदेश मंत्री के साथ फोटो खिंचवाने के लिए सब मंजूर है। अगले दिन सुबह 12 बजे किसी मित्र के साथ व्यापारिक मीटिंग तथा भोजन और उसके बाद दोपहर 3 बजे दुबई प्रस्थान। पूरे प्रवास में दिल्ली से 90 किलोमीटर दूर गाँव में रहने वाले माता-पिता से मिलने का इरादा भी नहीं है। वैसे भी हर महीने पाँच हजार रुपए का मनीआर्डर उनको भेज ही तो रहे हैं। पिछले तीन सालों से तो होली-दिवाली भी फोन नहीं लगाया है। सब ठीक ही होगा वहाँ, नहीं तो पड़ोस वाले मास्टरजी का फोन ही आ जाता। जन्मदाता माँ बाप की याद तो यदा कदा आती ही है... एक बार तो सोचा कि गाँव जाकर आ जाऊँ, लेकिन अगले ही पल विचार आया कि सभी गणमान्य मेजबान पूछेंगे कि गाँव क्यों जा रहे हो? वहाँ कौन रहते हैं? क्या जवाब देंगे वो.. कि...छोटा सा गाँव, इतनी गन्दगी, गंदे लोग.. इत्यादि-इत्यादि शादी के बाद गया था तब गंदे लोगों ने गले मिल-मिलकर पूरे कपड़े गंदे कर दिए थे। फिर मीडिया वाले भी तो होंगे कार्यक्रम में... पूरा इतिहास निकाल देंगे- निमू से निर्मल सर बनने की यात्रा का। आखिर 'मन' में बना गाँव

जाने का कार्यक्रम 'मन' में ही समाप्त हो गया।

भोजन के बाद वापिस पान मसाला मुँह में डाला और तैयार होने लगे। हालाँकि दुबई से खरीदे महंगे सफेद कपड़े नए ही है लेकिन फिर भी होटल के कर्मचारी को भेजकर वापस प्रेस करवाकर मंगवाए हैं। ऐसे मुख्य अतिथि बनने के मौके बार-बार थोड़े आते हैं। दो बजने वाले हैं... हालाँकि कार्यक्रम का समय दो बजे का ही है, लेकिन समय पर जाना तो 'पुराने लोगों' की आदत है। आधुनिक जमाने में तो 'अति विशिष्ट लोग' कम से कम आधा घण्टा लेट पहुँचते हैं तो सभा में कुर्सियाँ भी भरी मिलती है और मुख्य अतिथि के अतिव्यस्त होने का भ्रम भी लोगों पर पड़ता है। ''स्वच्छता अभियान'' के कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के कपड़े भी तो स्वच्छ होने चाहिए। पर यह क्या सफेद कुर्ते पर तेल का निशान? अच्छा....विदेशी काँच की महंगी टेबल पर निर्मलजी के महंगे केशतेल की शीशी से कुछ बूँदे गिर गयी थी और अनजान होटल कर्मचारी ने प्रेस किये कपड़े उसी टेबल पर रख दिए। अब निर्मलजी पूरी ताकत से दहाड़े.... कार से मुख्य अतिथि को लिवाने आये गणमान्य लोगों ने देखा कि होटल का मैनेजर, सभी कर्मचारी सिर झुकाए निर्मल सर की डांट सुन रहे हैं। कुर्ता पहनते हुए निर्मल सर चिल्ला रहे थे। तुम लोग सारे गंदे हो, तुम्हारा होटल गंदा, तुम्हारा सब कुछ गन्दा और भी न जाने क्या-क्या। गुस्सा खतम नहीं हुआ तो कमरे से बाहर निकलते हुए सीढ़ियों के कांच पर भी मुँह में भरे गुटखे को थूकते हुए फिर बोले-'कैसे गंदे लोग हैं।' अचानक आवाज आई-'गंदा कौन है सर?' निर्मलजी ने देखा कि एक करीब 16 साल का युवा कर्मचारी उनकी थूकी गयी गुटखे की पीक को कांच से साफ करते हुए उनसे ही पूछ रहा था। रोबीली आवाज में पूछा-'क्या बोला?' युवक ने निर्भयता से जवाब दिया-'गन्दा कौन है सर?' शीशे पर थूके गए गुटखे को साफ करते हुए बोला-'आप गन्दगी कर रहे हैं और हम लोग सफाई। आपके गंदे काम को हम साफ कर रहे हैं। अब आप ही बताओ कि गंदा कौन? ऐसा लग रहा है कि ठीक 30 साल पहले का 16 साल का निमू किसी घमण्डी सेठ को सिद्धान्त की बात सीखा रहा है।

निर्मल सर और उन्हें लिवाने आये गणमान्य लोगों ने देखा कि सिद्धान्तवादी युवक का चेहरा चमक रहा था। ठीक उसके द्वारा साफ किये शीशे की तरह। होटल का मैनेजर और बाकी लोग फुसफुसा रहे थे। आज तो इस छोकरे की नौकरी गई। दिवाली के 15 दिन पहले ही खूब बड़ा इनाम मिलेगा इस विक्रमसिंह को.... बोनस के साथ....इतने बड़े सेठजी से भिड़ा है.... जो कि चाहे तो यह पूरी होटल खरीद सकते हैं। दो मिनट तक युवक को देखने के बाद निर्मल सर मैनेजर की तरफ मुड़े और बोले हाँ मैनेजर साहब सही कहा ... इस गलती का खूब बड़ा इनाम मिलेगा इसे। जेब से 10 लाख के चेक पर युवक का नाम लिखकर उसे देते हुए कहा कि जिंदगी में पहली बार कोई सिद्धान्तवादी युवक मिला है, जिसने अपनी निर्भयता और स्पष्टवादिता से मुझ 'गंदे' आदमी और 'मेरी गंदी सोच' को खरीद लिया है।

जेब से महंगे पान मसाले का डिब्बा कूडेदान में डालकर निर्मल सर मुड़े और 'स्वच्छता अभियान संस्था' के पदाधिकारीगण को दूसरा चेक देते हुए कहा कि माफ कीजियेगा एक बहुत जरूरी काम आ गया है....मैं आपके कार्यक्रम में नहीं चल पाऊँगा। चेक लेते हुए पदाधिकारीगण पूछने लगे कि साहब ऐसा भी क्या जरूरी काम आ गया है? गाड़ी में बैठते हुए निर्मल सर की जुबान से शब्द तो बाहर नहीं आये, पर हाँ उनकी आँखों से आये दो आँसू लोगों की नजरों से नहीं छिप सके। लोग देख रहे थे...निर्मल सर की गाड़ी धूल उड़ाते हुए ग्रामीण इलाके की तरफ जा रही थी। धूल उड़ाती गाड़ी में बैठे निर्मल सर के मानस पर पड़ी घमण्ड की धूल भी तो धीरे-धीरे उड़ रही है, मन हल्का होता ही जा रहा है और आज निर्मल सर नहीं निमू जा रहा है, सबसे जरूरी काम के लिए... अपने भगवान के मंदिर में.... अपने माता-पिता की पूजा करने के लिए...उनके चरणों में सिद्धान्तों का प्रसाद पाकर फिर से ''निर्मल'' बन अपने ''भगवान'' द्वारा दिए गए ''निर्मल'' नाम को सार्थक करने के लिए।

-राष्ट्रीय मंत्री, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, 504, सिद्धी विनायक अपार्टमेन्ट, दिग्विजयनगर, खेमे का कुआ, पालरोड़, जोधपुर (राज.)

बंटवारा

आचार्य विजयरत्नसुन्दरसूरिजी म.

"**पप्पा!** आपने आज सुबह सम्पत्ति का बँटवारा करने का जो निर्णय किया है उसके बारे में मुझे आपसे इतना ही कहना है कि हम तीन भाइयों के बीच बँटवारा किस प्रकार हो, यदि इसका निर्णय आपको ही करना हो तो मुझे मान्य नहीं होगा।"

बालकेश्वर के एक विशाल फ्लेट में, मात्र 24 वर्ष के छोटे बेटे ने रात के समय अपने पिताजी को साफ तौर पर कह दिया।

"तो यह निर्णय कौन करेगा?"

"मैं करूँगा।" "तू?"

"हाँ" "पर सम्पत्ति तो मेरी स्वयं की है। किस बेटे को कितनी सम्पत्ति दी जाये, यह अधिकार मेरा है। मेरे इस अधिकार को अमान्य करने के पीछे कारण क्या है?"

"मुझे आपकी निष्पक्षतावृत्ति के बाबत शंका है।"- अपने ही बेटे के मुँह से यह बात सुनकर बाप स्तब्ध रह गया। वर्षों से प्रेम, स्नेह और वात्सल्य से 17-17 सदस्यों के परिवार को एक ही रसोई में खाना खिलाते रहने में जिस बाप ने सफलता पाई थी, उसी बाप को अपने बेटे के मुँह से अब ऐसा आक्षेप सुनने को मिले तब उसे जो आघात लगा होगा उसे वही समझ सकता है जो बाप के स्थान पर हो। फिर भी बाप ने स्वस्थता बनाए रखते हुए पूछा-"मेरी वृत्ति पक्षपाती होने का तुम्हारे पास क्या आधार है?"

"देखो पप्पा! मुझे आपके साथ किसी बहस में नहीं पड़ना है। परन्तु, मैंने आपसे जो बात कह दी है उसमें मुझे कोई फेर-बदल नहीं करना है। यदि सम्पत्ति का बँटवारा करना ही हो तो इसका निर्णय इस घर में मेरे सिवाय और कोई नहीं कर सकता।" इतना कहकर बेटा अपने कमरे में चला गया।

घर का शांत वातावरण भंग हो गया। बाप ने बड़े बेटे से बात की। बड़े बेटे ने पल भर का विलम्ब किये बगैर कह दिया 'पप्पा! इसमें कौनसी बड़ी बात है? तुम छोटे से कह दो कि वह जिस प्रकार भी बँटवारा करेगा वह हम सबको मान्य होगा। आखिर वह है तो हमारा भाई ही न? आपके निर्णय के बारे में अपने लिये भले ही उसके मन में शक हो, परन्तु उसके निर्णय के बारे में इस घर में मुझे तो कोई शंका नहीं है।"

बड़े बेटे की यह बात सुनकर बाप की आँखों में आँसू आ गये। कहाँ बड़े के हृदय की यह उत्तमता और कहाँ छोटे के हृदय की वह अधमता। अन्ततः दुःखी मन से बाप ने छोटे बेटे की बात स्वीकार ली।

रात के करीब नौ बजे तीनों बेटे बाप के पास आ गये। औपचारिक बातचीत के पश्चात् उसने तीनों बेटों से कहा-"मुझे (अपनी) एक करोड़ की सम्पत्ति तुम तीनों के बीच बाँटनी है और यह बँटवारा किस प्रकार हो इस बारे में निर्णय तुम्हारा यह छोटा भाई अभी करेगा।"

पलभर की भी देर किये बगैर छोटे ने अपना निर्णय जाहिर कर दिया-"जिस भाई की जितनी उम्र है उसे पप्पा उतने लाख रुपये दे दें।"

इस निर्णय को सुनकर सब स्तब्ध हो गये। पिता की आँखों से गंगा-जमुना बरसने लगी। 'तुम यह क्या कह रहे हो?'- वे इतना ही बोल पाये।

"पप्पा! यदि सम्पत्ति के बँटवारे का अधिकार आपके हाथ में रखा होता तो आप हम तीनों भाइयों को बराबर-बराबर रकम दे देते। जो धंधा आपने शुरु किया है, उसे बड़े भाई ने फैलाया है और मँझले ने संभाला है। इस धंधे में प्रविष्ट हुए बगैर मुझे इसमें हुई कमाई का

समान हिस्सा मिल जाये, यह बात मुझे मंजूर नहीं थी और इस दृष्टि से ही मैंने सम्पत्ति के बँटवारे के आपके अधिकार को चुनौती दी थी। पप्पा! मेरे इस बर्ताव से आपको पहुँचे दुःख के लिये मैं क्षमाप्रार्थी हूँ। परन्तु आप मेरे इस निर्णय पर सहमति की मोहर लगा दो ताकि घर के वातावरण में पूर्ववत् प्रसन्नता छा जाये।'' बेटे के इन शब्दों से बाप की आँखें हर्षाश्रुओं से छलक उठीं।

बड़े बेटे की उम्र 40 वर्ष की थी, उसे 40 लाख, मंझले बेटे की उम्र 34 वर्ष की थी, उसे 34 लाख और छोटे बेटे की उम्र 24 वर्ष की थी उसे 24 लाख। बाप को लगा कि-''दिल का बँटवारा हुए बिना सम्पत्ति का बँटवारा करने में छोटे ने जो सफलता पायी है वह मुझे न मिलती, यदि बँटवारा करने का अधिकार मैंने अपने ही पास रखा होता। यह मेरा सद्भाग्य है कि मैं ऐसे गुणवान बेटों का बाप हूँ।''

-हिन्दी अनुवादक: श्री नन्दावल्लभ लोहनी 'नन्दन भाई'

(जिनवाणी, अगस्त 2000 से गृहीत)

जड़ को सींचों

कुमारी सन्तोष डागा

एक अच्छे परिवार की लड़की पढ़-लिखकर होशियार हुई। विवाह होने के बाद ससुराल गई और कुछ समय वहाँ रहकर वापस अपने माँ-बाप के घर आई। घर पर उसे माँ, बहनें और सखियाँ, ससुराल के हाल पूछने लगीं।

'तुम्हारी सास कैसी है?'

'मैं अच्छी हूँ।'

'तुम्हारे ससुर कैसे हैं?' सब ने खीझ कर पूछा।

उत्तर मिला- 'मैं अच्छी हूँ।'

सब तंग आ गई। कहने लगीं- ''हम यह तो अच्छी तरह जानती हैं कि तुम अच्छी हो। पर हम तो तुम्हारे ससुराल के हाल जानना चाहती हैं।' लड़की ने कहा-'जो स्वयं अच्छा है, उसके लिए सारा संसार अच्छा है और जो स्वयं बुरा है, उसके लिए सारा संसार बुरा है। इसलिए मेरे ससुराल के सभी लोग बहुत अच्छे हैं।' संसार तो एक दर्पण है। उसके सामने जैसा मुँह आयेगा वैसे ही दर्शन होंगे। यदि इधर कोई घूसा तानेगा तो, दर्पण में भी घूसा तनेगा और यदि कोई इधर मुँह काला कर लेगा तो उधर भी मुँह काला ही दीख पड़ेगा। इसी तरह से इस संसार में हमारे ही मन का प्रतिबिम्ब पड़ता है। इसलिए उस लड़की ने बड़े पते की बात कही। यदि वह स्वयं अच्छी है तो उसके लिए झोंपड़ी भी महल है और यदि वह स्वयं बुरी है तो, महल भी झोपड़ी की तरह वीरान हो जायेगी।

उक्त कथन का सार इतना ही है कि दुनिया में जो कुछ है, मनुष्य स्वयं है। इसलिए स्वयं को पहचानना और ठीक रखना बहुत आवश्यक है। यही जीवन वृक्ष की जड़ है। जड़ को सींचना चाहिए, पत्तों को सींचने से काम नहीं चलेगा, पत्तों को सींचने से वृक्ष नहीं पनपेगा। जड़ को पानी मिलने से सारा वृक्ष पल्लवित हो जायेगा। इसी प्रकार यदि मनुष्य और मनुष्यता सुरक्षित रही तो सारे धर्म और सारी जातियाँ हरी-भरी रहेंगी। यदि मनुष्यता का मूल ही सूख गया तो सब कुछ सूख जायेगा, स्वाह हो जायेगा। आज मन्दिर, चर्च, स्थानक, आश्रम आदि को खूब सींचा जा रहा है, फिर भी जीवन दुःखी है। इसका कारण यही है कि पत्तों को सींचने का काम ही हो रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम पत्तों की ओर नहीं, वृक्ष के मूल की ओर जायें, उसे सींचें। मनुष्य और मनुष्यता की रक्षा करें। अपने आत्म-स्वरूप को पहचानें। यदि आत्म-विस्मृति हो गई तो हमारी आस्था लड़खड़ा जायेगी, हमारा विश्वास डिग जायेगा। हम आत्म-स्वरूप में रमण करते हुए विश्वात्मा की अनुभूति करें। यही सुख, शांति और प्रसन्नता का मार्ग है। *-जिनवाणी, मई 1979 से गृहीत*

ये इष्ट सुमंगलकारी हैं

डॉ. इन्दरराज बैद

अरिहंत, सिद्ध, प्रभु, साधु, धरम,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।।
मंगलप्रद जितने भी मंगल,
उनमें अनुपम चार हैं मंगल,
अरिहंत मंगल, सिद्ध प्रभु मंगल,
साधुजन मंगल, जिनधर्म मंगल,
मंगल ये हितकारी हैं नित,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु,
धरम ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।
मिथ्यात्व भरम में भटकों के
सम्यक्त्व दीप उद्धारी हैं।।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।।1।।

लोकोत्तम जितने भी उत्तम,
परमोत्तम हैं चार ही उत्तम,
अरिहंत उत्तम, सिद्ध प्रभु उत्तम,
साधुजन उत्तम, जिनधर्म उत्तम,
उत्तम ये हितकारी हैं नित,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु,
धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।
जय-जय करते, इन पर जाते,
हम नित्य विनत बलिहारी हैं।।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।।2।।

जग में जितने भी हैं शरणं,
उनमें अद्‌भुत चार ही शरणं,
अरिहंत शरणं, सिद्ध प्रभु शरणं,
साधुजन शरणं, जिनधर्म शरणं,
शरणं ये हितकारी हैं नित,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु,
धरम, ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।
ये चार लगाते पार नाव,
भव-भव में संकटहारी हैं।।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।।3।।

चार ही मंगल, चार ही उत्तम,
चार ही शरणं, परमोत्तम,
चार ही लोकोत्तर सुख उत्तम,
मुक्तिप्रदायक मंत्रोत्तम,
मंत्रम् ये हितकारी हैं नित,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं,
अरिहंत, सिद्ध प्रभु, साधु, धरम,
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।
छाँह तले जिनकी सुख पाते,
दग्ध विकल संसारी हैं।।
ये इष्ट सुमंगलकारी हैं।।4।।

-जिनवाणी, जनवरी 1984 से गृहीत

सबसे बुरी बात

श्री मोतीलाल सुराना

राजा भोज ने तोता खरीद लिया। एक सौ मोहरों में उस बहेलिये से जो कहता था कि वह आदमी की जबान में एक बात बोलता है, जो लाख मोहरों की है। बहेलिया चला गया तो तोता बोला- संसार में एक बात बहुत बुरी है। राजा ने पूछा क्या? तोते ने कुछ जवाब नहीं दिया तथा यही रट लगाई संसार में एक बात बहुत बुरी है।

राजा ने विद्वानों को बुलाकर पूछा कि संसार में सबसे बुरी बात क्या है? कोई जवाब नहीं दे सका तो बतलाने वाले के लिये एक लाख मोहरों का इनाम रखा। सभा का प्रमुख विद्वान प्रश्न का हल खोजने जंगल में गया तो वहाँ एक लकड़ी काटकर बेचने वाला मिला। उससे प्रश्न का जवाब पूछा तो वह सहज बुद्धि से बोला कि यह तो बहुत आसान प्रश्न है। जब जवाब पूछा तो वह बोला- चाहे इनाम तुम ले लेना पर जवाब मैं राजा भोज को दूँगा। विद्वान् ने मंजूर कर लिया। घर जाकर लकड़ी की भारी डाली तथा अपने कुत्ते को बुलाया। विद्वान् से बोला मैं कुत्ते को छोड़कर नहीं चल सकता। मैं कमजोर हूँ, अतः इसे उठा नहीं सकता। आप इसे उठाकर चलें तो मैं चल सकता हूँ। विद्वान को तो इनाम की पड़ी थी। मंजूर कर लिया कुत्ता उठाना। जब विद्वान् को कुत्ता उठा कर राज्य सभा में आते देखा तो सभी सभाजन आश्चर्य चकित हो गये। लकड़ी काटने वाले ने राजा भोज से कहा- संसार में लोभ सबसे बुरी वस्तु है। देखिये विद्वान् भी लालच के वश इनाम की खातिर कुत्ता उठाकर राज्यसभा में आ गया।

-जिनवाणी, जुलाई 1978 से गृहीत

भौतिकवादी मृगतृष्णा

डॉ. नरपतचन्द्र सिंघवी

काश! सब नैतिक होते
विश्व का नक्शा बदल जाता
सबका गन्तव्य-मन्तव्य
जन-कल्याण ही होता
तो संसद में ''बहिर्गमन'' क्यों होते?
संयुक्त राष्ट्र संघ की
सुरक्षा परिषद् में
''वीटो'' का प्रयोग क्यों होता?
यदि हम भौतिक संपत्ति की
मृग-तृष्णा में फंसकर
संतोष की समस्त सीमाएँ तोड़कर
परिग्रह का ग्रास न बनते
तो महानगरों में घुड़दौड़ क्यों होती
''डरबी'' में करोड़ों डालर के
दाँव क्यों लगाते?
'आस्कर' पुरस्कारों की घोषणा पूर्व
ऊँची बोलियाँ क्यों लगतीं
एंडे 500 कार रेस की खौफनाक प्रतिद्वंद्वता पर
सट्टोरियों की आकाश छूने या
धूल चाटने की पेशकश क्यों रहती
विश्व कप फुटबाल या वर्ल्ड कप
क्रिकेट मैच की जीत हार पर
सट्टेबाजी का बाजार गर्म क्यों होता?
सबका एक ही दृष्टिकोण,
एक ही अदम्य लालसा
धन बटोरो, धन बटोरो!!
सबकी धारणाएँ बस एक बिन्दु पर केन्द्रित
विजय हमारी ही हो
भूल गए हम सब तीर्थंकर महावीर का अपरिग्रह,
सहिष्णुता का महत्त्व
'भी' वाद छोड़कर अपना बैठे 'ही' वाद,
मैं की कीर्ति पुरुष, मेरे दाँव का हो जयघोष!!

-1, मोतीलाल बिल्डिंग, रातानाडा, जोधपुर (राज.)
जिनवाणी, जनवरी 1999 से गृहीत

श्रम का महत्त्व

श्री पूरन 'सरमा'

वह राजा की रानी थी, असीम सौंदर्य की प्रतिमा थी, उसे रानी होने और रूपवती होने का घमण्ड था। एक दिन उसकी इच्छा गंगा स्नान करने की हुई, हेमन्त ऋतु थी, उसने अपनी पाँच-छह सहेलियों को इकट्ठा किया, पालकी तैयार करवाई और तड़के ही स्नान करने चल दी।

भगवान भास्कर अभी उदित नहीं हुए थे, मौसम में भी अभी काफी सर्दी थी, वे सब गंगा में अपने वस्त्र उतार कर स्नान करने लगीं। सर्दी होने के बाद भी वे गंगा में अंगों को मल-मल कर खूब नहायीं। कुछ देर पश्चात् वे नहाकर वस्त्र पहनने लगीं। नहाने को तो वे खूब नहाली थीं पर वे अब सबकी सब ठिठुर रही थीं।

रानी को एक झोंपड़ी दिखाई दी, रानी ने झोंपड़ी के पास जाकर अन्दर की ओर देखा- मिट्टी का पानी का घड़ा और फटा हुआ एक कम्बल यह बता रहा था कि यह किसी गरीब का घर है।

सखियाँ परस्पर बतियाने लगीं। एक सखी बोली- 'काश! इस समय यदि यहीं कहीं हमें लकड़ियाँ मिल जातीं तो अपने शरीर को सेंक लेतीं।

रानी बोली- 'बात तो सही है। लकड़ी न सही तो न सही, इस झोंपड़ी को ही आग लगा दी जाय तो हमारी ठिठुरन मिट सकती है।'

रानी के इस कथन पर एक सहेली ने आपत्ति की- 'नहीं रानी! ऐसा न करिये, पता नहीं किसी गरीब की झोंपड़ी है, शाम को जब इसका मालिक आएगा और जब वह अपनी झोंपड़ी नहीं पायेगा तो सच! वह बेहद उदास होगा।'

'नहीं, होगा तो होगा! मैं एक राजा की रानी हूँ। मैं किसी का भी घर उजाड़ सकती हूँ। मेरा आदेश है कि झोंपड़ी को आग लगा दी जाये' रानी सगर्व नथुने फुलाकर बोली।

रानी का आदेश होते ही झोंपड़ी को आग लगा दी गई। झोंपड़ी धू... कर जल उठी और कुछ पल में राख का ढेर हो गई। वे सब की सब लोट आईं।

शाम होने पर झोंपड़ी वाला लौटकर आया। अपनी झोंपड़ी को जला देखकर उसका दिल बेहद बैठ गया। रोता-रोता वह राजा के पास फरियाद लेकर गया। राजा ने उसकी सारी बातें बड़े ध्यान से सुनीं और उसे न्याय देने का वचन देकर लौटा दिया।

राजा ने अपने कर्मचारियों को झोंपड़ी को जलाने वाले का पता चलाने का आदेश दिया। शीघ्र ही कर्मचारियों ने राजा को सूचित किया कि झोंपड़ी तो रानी द्वारा ही जलाई गई है।

शाम को राजा रानी के महलों में पहुँचा। रानी ने बाहें फैलाकर राजा को अंक में भरते हुए स्वागत करना चाहा, पर राजा ने उसे परे कर दिया और उससे झोंपड़ी जला देने वाली बात पूछी। रानी झोंपड़ी जला देने वाली बात स्वीकार करके मुस्कान बिखरते हुए बोली- 'क्यों क्या हो गया, अगर मैंने एक दस-बीस रुपये की झोंपड़ी जलवा भी दी तो! मैं एक राजा की रानी हूँ। मैं किसी का भी घर उजाड़ सकती हूँ।'

रानी के मुँह से यह बात सुनकर राजा तिलमिला गया। उसने रानी से कहा- 'रानी! तुम जब तक झोंपड़ी बनाकर उस गरीब को नहीं दे देती हो तब तक तुम इन महलों में रहने की अधिकारिणी नहीं हो, न ही तुम रानी रहोगी।'

राजा का आदेश सुनकर रानी सकते में आ गई। उसे आशा नहीं थी कि कभी ऐसा भी हो जाएगा। वह राजा से, पैरों में गिरकर क्षमायाचना करने लगी। राजा उसे दूर धकेल कर बोला-'सेवकों! तत्काल रानी

को महलों से दूर निकाल दो।' डरते-डरते सेवकों ने रानी को महलों के बाहर कर दिया।

रानी अब रोज जंगलों में जाती, लकड़ी बीनकर लाती और पास के गांवों में बेच आती। उसी से वह अपनी जीविका चलाती और झोंपड़ी बनाने के लिए पैसे जोड़ती। इस प्रकार रानी ने एक साल में झोंपड़ी लायक पैसे जोड़ लिये और एक बहुत ही सुन्दर झोंपड़ी बनवा दी। झोंपड़ी तैयार होते ही उसने इसकी सूचना राजा के पास भेजी। स्वयं राजा अपने सेवकों सहित झोंपड़ी देखने आया। झोपड़ी बहुत सुन्दर थी, अतः राजा बोला- 'रानी झोंपड़ी वाकई सुन्दर है। फिर राजा गंभीर होकर बोला- 'सेवकों, झोंपड़ी को आग लगा दो।'

रानी भीतर बहुत गहरे तक कांप गई। वह राजा के चरणों में गिरकर बोली- 'नाथ! ऐसा न कीजिए, यह मेरे कठिन परिश्रम का फल है। इसमें मेरा खून लगा है।'

रानी की बात सुनकर राजा ने सेवकों को रोका और रानी से कहा-'रानी, अब तुम समझी कि मेहनत से बनाई गई चीज के नष्ट होने पर दिल पर क्या गुजरती है। यही हालत उस समय उस गरीब की हुई थी जब तुमने उसकी झोंपड़ी को आग लगाई थी। अब तुमने श्रम के महत्त्व को जान लिया है न। आओ, आज से तुम मेरी फिर रानी हो गई हो।' फिर से रानी महलों में सुखी रहने लगी। *-जिनवाणी, अक्टूबर 1976 से गृहीत*

समकित जीवन

श्री राजमल पवैया

समकित का सावन आया,
समरस की लगी झड़ी रे।
अंतस् की रीती सरिता,
भर आई उमड़ पड़ी रे।।1।।
करुणा की लहरावलियाँ,
ऊँची-ऊँची लहरातीं।
समता की अलकावलियाँ,
अंतर नभ में फहरातीं।।2।।
माया की सारी मिट्टी,
गल-गल कर है बह जाती।
मिथ्यात्व पाप प्राचीरें,
क्षण भर में हैं ढ़ह जातीं।।3।।
जिन श्रुत की मेघ गर्जना,
निज-पर का भेद बतातीं।
निज दामिनी चमक-चमक कर,
निज का स्वरूप दमकाती।।4।।
शुद्धोपयोग की वंशी,
ध्वनि गूंजी निज पनघट से।
इठलाती पिया मिलन को,
सज चली सुमति पर तट से।।5।।
मन का मयूर नाचा है,
सुनकर निज का धन गर्जन।
अन्तर विवेक से करता,
परिणाम शुद्ध का अर्चन।।6।।
शुभ-अशुभ त्याग निज उर में,
भ्रमरावलि करती नर्त्तन।
निज कोकिल तन्मय गाती,
करती चेतन का अर्चन।।7।।
संवर का बांध बनाया,
आस्रव का पूरा भय हर।
निर्जरा नहर निर्मित कर,
भव जल करता है बाहर।।8।।
भव जल जब सब चुक जाता,
तब शुद्ध अवस्था पाता।
समकित सावन अंतस् में,
अति शुद्ध व्यवस्था लाता।।9।।
समरस की सरस फुहारें,
संताप ताप भव हरतीं।
आनन्द सुधा की बूंदें,
उर में अखंड सुख भरतीं।।10।।

-जिनवाणी, अगस्त 1976 से गृहीत

तीन पैसे

श्री प्रीतपाल विरात

रूपा गाँव-गाँव में घूम-घूम कर कपड़ा बेचा करता था। कई बार उसे सघन झाड़ियों और पेड़ों के झुरमुटों वाले जंगलों से होकर गुजरना पड़ता। एक दिन उसे फेरी लगाते हुए बड़ी देर हो गई। जब वह लौटने लगा तो रात घिर आई। उसके गाँव का रास्ता घने जंगल से होकर जाता था। जब वह जंगल से होकर गुजर रहा था तो एक बूढ़े ने उसका रास्ता रोक लिया।

बूढ़े ने पूछा- 'तुम कौन हो?'

'मैं कपड़ा बेचने वाला हूँ।' रूपा ने बताया और फिर पूछा; लेकिन तुम कौन हो?'

बूढ़ा बोला- 'क्या करोगे मेरा परिचय जानकर?'

जरा रुक कर फिर बोला- 'मुझे कुछ कपड़ा चाहिए। तुम्हारे पास जो कुछ हो दिखा दो।'

रूपा पहले तो भयभीत हो गया। पर फिर उसने सोचा, इसे कपड़ा दे ही देना चाहिए। पता नहीं यह कौन है, कौन नहीं। कपड़ा न देने पर यह मुझे मार भी सकता है।

बूढ़ा रूपा के मन की बात भांप गया। बोला- 'मैं तुमसे मुफ्त में कपड़ा नहीं लूँगा।'

बूढ़े ने जितना कपड़ा मांगा, रूपा ने दे दिया।

बूढ़े ने रूपा की तरफ सिर्फ तीन पैसे बढ़ाए।

तीस रुपये का कपड़ा लेकर बूढ़ा सिर्फ तीन पैसे ही दे रहा था। रूपा के मन में एक बार आया कि वह बूढ़े को सही दाम देने के लिए कहे। पर वह बूढ़े से इतना भयभीत हो चुका था कि उसके मुँह से एक शब्द भी न निकला। आवाज जैसे गले में फंस कर रह गई।

उसने चुपचाप तीनों पैसे ले लिए और अपने गांव की राह ली।

अभी वह थोड़ी ही दूर गया था कि उसे अपनी जेब भारी-भारी लगी। उसने जेब में हाथ डाला। मुँह तक पैसों से भरी हुई थी। रूपा पहले तो बड़ा हैरान हुआ। पर फिर उसने आधे पैसे दूसरी तरफ की जेब में डाल लिए और तेजी से आगे बढ़ने लगा। हांफता-हांफता जब वह घर पहुँचा तो उसकी दोनों जेबें पैसों से भरी हुई थी। रूपा ने दोनों जेबों के पैसे एक बर्तन में उलट दिये और दरवाजे के पास खड़ा होकर मन ही मन इस विचित्र घटना के बारे में सोचने लगा।

अभी वह सोच ही रहा था कि घर में पैसे खनकने की आवाज आई। उसने अन्दर जाकर देखा- पैसे बर्तन से बाहर गिर रहे थे। घर में जितने भी बर्तन थे, रूपा सबमें पैसों को भरने लगा। जब सारे बर्तन भर गए तो पैसों का बढ़ना अपने आप बन्द हो गया। रूपा यह सब देखकर आश्चर्य चकित था।

अब रूपा के पास धन की कमी नहीं रही। उसने शहर के प्रमुख बाजार में बहुत बड़ी बर्तनों की दुकान खोल ली। उसकी दुकान भी बहुत अच्छी चलने लगी। धन की बरसात होने लगी। लोग उसे 'सेठ साहब' कह कर पुकारने लगे।

धन के नशे ने अपना असर दिखाया। रूपा, जो अब सेठ रूपचन्द्र के नाम से जाना जाता था, बड़ा घमण्डी हो गया। दुनिया भर के ऐब, जो अक्सर रईसों में होते हैं, उसमें घर कर गए। वह ब्याज पर रुपये भी लगाने लगा। बेचारे गरीबों से खूब कस कर सूद लेता और उन्हें सताता भी बहुत।

एक दिन उसकी दुकान पर एक गरीब बूढ़ा छोटे-मोटे बर्तन बेचने के लिए आया। बर्तन बड़े पुराने और टूटे-फूटे थे।

'क्यों रे बूढ़े, तू इन बर्तनों का क्या लेगा?' उसने बड़ी बेरुखी से पूछा। उसने बूढ़े की तरफ तीन पैसे बढ़ा दिए।

दुबला, पतला गरीब बूढ़ा पैसे लेकर चलता बना। उस दिन के बाद उसके कारोबार में घाटा ही घाटा होने लगा। अब वह भण्डार से चार पैसे निकालता तो आठ घट जाते। घटते-घटते पैसे बिल्कुल खत्म हो गए। वह लोगों का ऋणी हो गया। पैसे-पैसे का मुहताज होकर मारा-मारा फिरने लगा।

सुबह से शाम तक उसके दरवाजे पर महाजनों का ताँता लगा रहता, कोई कहता कि उसे पाँच सौ रुपये लेने हैं, कोई कहता कि पाँच हजार लेने हैं लोग तरह-तरह की बातें करते और उसे भला-बुरा कह कर चले जाते।

वह, सेठ रूपचन्द्र से फिर रूपा बन कर रह गया। उसके समझ में बड़ी देर में आया कि बूढ़ा अपने करामाती पैसे वापस ले जा चुका है। अब वह कुछ नहीं कर सकता था। उसकी बुराइयाँ ही उसे ले डूबीं।

-जिनवाणी, जून 1976 से गृहीत

नश्वर मोह

श्री हरीश 'मधुर

सम्राट् चिन्तामणि असाध्य रोगग्रस्त हो अन्तिम सांसें ले रहे थे। निष्णात चिकित्सकों ने उनके जीवन की आशा छोड़ दी थी। तभी एक साधु सम्राट् की शय्या के पास पहुँचे। महामंत्री ने साधु से कहा- ''क्या आप कोई ऐसा उपाय बतायेंगे जिससे हमारे स्वामी बच सकें।''

''उपाय अत्यन्त सरल है'' साधु ने गम्भीरता से कहा। 'सम्राट् का यह शरीर छूट जाने दीजिये। इनकी आत्मा अगला जन्म राजोद्यान में एक काष्ठ-कीट के रूप में लेगी। यदि आप उसे पकड़कर मार डालेंगे तो जीव सम्राट् की मृत देह में लौट आयेगा।''

सम्राट् की मृत्यु होते ही महामंत्री राजोद्यान में गया। वहाँ उसे विशेष लक्षणों वाला काष्ठजीव एक वृक्ष पर दिखाई दिया। महामंत्री उसे मारने हेतु फौरन पेड़ पर चढ़ गया पर कीट भागता रहा- कभी इस शाखा तो कभी उस शाखा। महामंत्री ढूंढते-ढूंढते शिथिल हो गया, पर काष्ठकीट हाथ न आया।

विफल मनोरथ महामंत्री ने साधु के पास जाकर यह समाचार दिया तो वे रहस्यपूर्ण मुस्कान के साथ बोले- ''यही है जीव की गति। जीव जिस शरीर में भी निवास करता है, उसके प्रति उसे मोह हो जाता है, चाहे वह सम्राट् का हो अथवा काष्ठकीट का। किन्तु यह मोह मिथ्या है। जीव का शरीर सदैव नश्वर है, अतएव तुम्हें सम्राट् की नश्वर काया का मोह त्याग देना चाहिये। नश्वरता ही जीव की परिणति है, जीवन का अपना नियम है। अतः तुम्हें नये सम्राट् का चुनाव करना चाहिये।

-जिनवाणी, मई 1976 से गृहीत

स्वभाव

श्री भानी राम 'अग्निमुख'

क्षमा, प्रेम, करुणा, उदारता
मानव का स्वभाव है,
इनके विपरीत कुछ भी हो वह विभाव है,
स्वभाव में शांति है,
सारी अशांति तो विभाव में ही है,
जहाँ हम अपने स्वभाव के विपरीत जीते हैं,
पाप की शुरुआत वहीं होती है,
जहाँ तक हम अपने स्वभाव के
अविरुद्ध जीते हैं,
वहाँ तक धर्म ही धर्म है।
सारे संसार के विरुद्ध जीना
स्वीकार होना चाहिए,
अपने स्वभाव के विरुद्ध कभी नहीं,
क्योंकि स्वभाव आत्मा है,
स्वभाव ही धर्म है।

-जिनवाणी, अक्टूबर 1976 से गृहीत

दाम्पत्य का शत्रु अहंकार

श्रीमती आभा जैन

अमर ड्राइंगरूम में अपने दोस्तों के साथ बैठा गपशप कर रहा था। आरती पास ही किचन में उसके दोस्तों के लिए चाय-नाश्ता तैयार कर रही थी। अचानक बबलू की स्कूल बस का हार्न सुनाई दिया। आरती ने ड्राइंग रूम में आकर अमर से कहा- ''सुनिए गैस पर चाय रखी हुई है। आप उतारकर छान लीजिएगा। मैं एक मिनट में बबलू को बस तक छोड़कर आती हूँ।''

अमर ने आरती की तरफ खा जाने वाली नज़रों से घूरा। वह स्वयं को अपने दोस्तों के सामने अपमानित महसूस कर रहा था। दोस्तों के जाने के बाद अमर ने पूरा घर सर पर उठा लिया-''आखिर तुम समझती क्या हो? चाय बनाना कोई मेरा काम है? दोस्तों के सामने मेरी सारी इज्जत धूल में मिला दी तुमने।''

आरती समझ नहीं पाई कि आखिर उससे क्या भूल हो गई। असल में अमर को चाय सम्हालने का काम करने को कहकर उसके पुरुष होने के खोखले दम्भ को आरती ने आहत कर दिया था। वस्तुतः हमारी सामाजिक जीवन-शैली में अभी भी घर के सारे कार्यों के लिए पत्नी को ही जवाबदार माना जाता है। यदि कोई पुरुष अपनी पत्नी के कार्य में सहयोग करे, तो उसे जोरू का गुलाम जैसे विशेषणों से विभूषित किया जाता है।

पति और पत्नी के व्यक्तिगत असंतुलित अहं और विकृत जीवन-मूल्य समूचे दाम्पत्य सम्बन्धों पर प्रश्न चिह्न लगा रहे हैं? लगता है इससे दोनों किनारे टूट रहे हैं? खोखले दम्भ के कारण वैवाहिक जीवन का माधुर्य और सरसता समाप्ति पर है। समय के साथ सरलता कहीं खोती जा रही है। महिलाओं को आज अपने अधिकारों की चेतना से तो सरोकार है, किन्तु दाम्पत्य जीवन की सुदृढ़ता के लिए वे अपने प्राथमिक कर्त्तव्यों के निर्वहन से कतराती है। इसी प्रकार पति-वर्ग पत्नी से अपेक्षाएँ तो बड़ी-बड़ी करता है, किन्तु अपने व्यक्तिगत कर्त्तव्य का पालन उस ढंग से नहीं करता जो वैवाहिक-जीवन में एक सहयोगपूर्ण शृंखला की शुरूआत कर सके।

वस्तुतः इन विसंगतियों की पृष्ठभूमि में असंतुलित अहं की बड़ी भूमिका है। गृहस्थी की विविध जिम्मेदारियाँ निभाने में पत्नी के व्यक्तित्व में अपने महत्त्व के प्रति एक गर्व का भाव पनपने लगता है। उसे लगता है कि उसके बिना यह घर एक पल भी नहीं चल सकता। पत्नी मानती है कि उसकी जरा-सी उदासीनता घर की समूची व्यवस्थाओं को अस्त-व्यस्त कर देगी। अक्सर महिलाएँ अपने घर के प्रति किए गए सामान्य से त्याग को भी प्रचारित करती हैं। घर को चलाने का श्रेय लेने के चक्कर में पुरुषों के योगदान को हरदम कम आंकती हैं। ऐसी स्थितियों में जाहिर है पुरुष के अहं को चोट लगती है और फिर दाम्पत्य-जीवन में एक अनचाही कडवाहट घुलने लगती है। यह स्थिति दोनों पक्षों के लिए ही अप्रिय होती है।

यदि कोई पत्नी अथवा पति अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों की उपेक्षा करते हैं, घर की समस्याओं के प्रति लापरवाह हैं तो निश्चित रूप से दूसरे पक्ष को उनकी चारित्रिक कमजोरियों को इंगित करने का अधिकार है। किन्तु अपने जीवन साथी की मामूली-सी कमजोरी अथवा बात को तिल का ताड़ बनाकर 'इगो' का प्रश्न बना लेना सचमुच दुर्भाग्यपूर्ण है। दाम्पत्य-जीवन की समस्याओं को आपसी सामंजस्य, सहयोग और तालमेल से हल करना अधिक कारगर और रचनात्मक

तरीका है।

अहं की भावना वैवाहिक सम्बन्धों को दीमक की तरह खोखला कर देती है। सम्बन्धों में दरारे पड़ने की शुरूआत किसी एक पक्ष के अहं से शुरु होती है। हालांकि हमारे सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य वैवाहिक सम्बन्धों को इन दरारों के बावजूद बिखरने से रोके रखते हैं। किन्तु जीवन के माधुर्य का रस-स्रोत तो सूख ही जाता है।

सुखी दाम्पत्य-जीवन का मूल आधार है परस्पर विश्वास और निःस्वार्थ प्रेम की भावना। अपने झूठे अहंकार की तुष्टि के वास्ते पति या पत्नी को परस्पर विश्वास की बलि नहीं देना चाहिए। प्रेम व्यक्ति को निःस्वार्थ होना सिखाता है जबकि अहंकार आदमी को स्वार्थी बनाता है।

स्वाभिमान और अहंकार में बड़ा फर्क है। पति-पत्नी अपने स्वाभिमान को सुरक्षित रखते हुए प्रेमपूर्वक वैवाहिक जीवन का निर्वाह कर सकते हैं, किन्तु अहंकारी होकर अपने जीवन-साथी का विश्वास तो खोते ही हैं, साथ ही अपने भावी जीवन के लिए अकेलेपन और तनावों को भी आमन्त्रित करते हैं। सुमधुर दाम्पत्य-जीवन की अनिवार्य शर्त है कि अपने अहं को कभी भी दीवार न बनने दें।

-34, बन्दा रोड़, भवानी मण्डी (राज.)

(जिनवाणी, जुलाई 1995 से गृहीत)

नेहरुपार्क, जोधपुर में बर्तन साफ करने हेतु श्रेष्ठ व्यवस्था

जोधपुर के नेहरूपार्क स्थानक में हम लोग व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन करने हेतु उपस्थित हुए तो यहाँ भोजन शाला में बर्तन साफ करने की व्यवस्था हमें अच्छी लगी। लकड़ी के बुरादे से बर्तन साफ करते हुए देखकर मन से अनुमोदना हुई की इस विधि से बर्तन साफ करने पर अप्काय के जीवों की रक्षा तो होती ही है, पानी की बचत भी होती है। उस बुरादे को बार-बार भी बर्तन साफ करने में प्रयोग किया जा सकता है। यह एक निरवद्य विधि है। हमारे घरों में पहले राख से एवं बुरादे से बर्तन साफ होते थे, जो वास्तव में आज की विधि विम बार एवं लिक्विड आदि की अपेक्षा बहुत अच्छी थी। कांचीगुडा स्थानक में भी बुरादे का प्रयोग पाया, जो मन को भाया। छोटा-छोटा विवेक भी आत्मसाधना के साथ राष्ट्रीय साधनों की बचत में सहायक होता है। असंख्य-असंख्य जीवों की रक्षा का भी हेतु है।

-मदनलाल-मैनाबाई, डी. विमलचन्द बोहरा-आवड़ी-चेन्नई (तमिलनाडु)

सौन्दर्य का केन्द्र - संघ

कविरत्न श्री अमरचन्दजी महाराज

आकाश में सघन बादलों से धरती पर उतरने वाली अकेली बूंद हवा में सूख जाती है या मिट्टी में मिलकर विलीन हो जाती है। न वह स्वयं बह सकती है और न किसी दूसरे को ही बहा सकती है। बहने और बहाने की शक्ति एक मात्र जल प्रवाह में है, जो एक के पीछे एक लगे रहने वाली कोटि-कोटि बूंदों का संघ है। कोई भी विचारक इस तथ्य से निर्णय कर सकता है कि शक्ति का केन्द्र व्यक्ति नहीं संघ है।

हजारों मील के लम्बे-चौड़े रेतीले मैदान में एक ही वृक्ष हो, उसकी एक ही शाखा हो, शाखा पर पत्ता हो, तो कैसा लगेगा? सर्वथा अभद्र! और हजारों प्रकार के वृक्षों का एक उपवन हो, प्रत्येक वृक्ष हरा-भरा और फूला-फला हो, तो कैसा लगेगा? सर्वथा सुन्दर! कोई भी विचारक इस से निर्णय कर सकता है कि सौंदर्य का केन्द्र व्यक्ति नहीं, संघ है। *-जिनवाणी, मार्च 1956 से गृहीत*

दान का फल

श्री नवलसिंह डूंगरवाल

संदीप अपनी माँ के साथ अकेला रहता था। उसके पिता का स्वर्गवास तब हो गया जब वह छोटा था। उसकी माँ सिलाई करके घर चलाती थी।

संदीप की माँ एक सच्ची श्राविका थी। सामायिक करना, संत-सतियों के दर्शन एवं व्याख्यान सुनने जाना उसकी दिनचर्या के अंग थे। संदीप भी संस्कारवान् सुशील लड़का था। जैन धर्म के प्रति उसकी दृढ़ श्रद्धा थी।

संदीप को एक शौक है चित्रकारी करना। उसके दिवंगत पिता के घनिष्ठ मित्र एक प्रसिद्ध पेंटर हैं। संदीप यदा-कदा उनके स्टूडियों में चला जाता है। वहाँ बैठकर वह पेंटर अंकल के काम को निहारता रहता है।

संदीप ने अखबार में पढ़ा कि जिलास्तर पर एक चित्रकला प्रतियोगिता हो रही है, जिसमें वह भी भाग ले सकता है। संदीप यह पढ़कर खुश हो गया। उसे अपनी कला को प्रदर्शित करने का अवसर मिल रहा था। परन्तु एकाएक वह उदास हो गया, क्योंकि उसके पास ब्रश और कलर नहीं थे। माँ शायद ही इतने पैसे देने को राजी हो। पेंटर अंकल से भी रंग और ब्रश मांगे जा सकते हैं, पर माँ ऐसा नहीं करने देगी। दूसरों के आगे हाथ पसारना माँ को पसंद नहीं है। वह स्वाभिमानिनी महिला है।

घर आकर सारी बात माँ को बताता है तो मुश्किल से बचाये कुछ पैसे माँ उसके हाथ में थमा देती है। वह खुश होकर बाजार की ओर निकल पड़ता है। रास्ते में ही पेंटर अंकल का स्टूडियो भी पड़ता है। संदीप ने सोचा कि क्यों न पेंटर अंकल से पूछ लिया जाये कि प्रतियोगिता के लिए ब्रश और कलर किस प्रकार के लाऊँ?

वह शीघ्रता के साथ स्टूडियों में प्रविष्ट हुआ। वहाँ पेंटर अंकल अपने काम में तल्लीन थे। उनके सामने स्टेज पर एक भिखारी कटोरा लिए खड़ा था, जिसका चित्र वे बना रहे थे। वे अपने कार्य में इतने मग्न थे कि संदीप कब भीतर आया उन्हें पता ही नहीं चला। संदीप ने भी सोचा कि पेंटर अंकल के काम में दखल करना ठीक नहीं है। वह भी वहीं बैठ कर उनके काम को देखने लगा। कुछ देर बाद पेंटर अंकल की नजर उस पर पड़ी। 'अरे! संदीप तुम कब आये? पता ही नहीं चला, अच्छा तुम बैठो, मैं एक मिनट में आता हूँ, यह कहकर वे बाहर चले गये।'

वह स्टेज पर खड़े भिखारी को देख रहा था जो फटे कपड़े पहने हाथ में कटोरा लिए खड़ा था। संदीप के मन में उसे देखकर दया आ रही थी। यह भिखारी अत्यधिक कृश शरीर वाला है, लगता है बहुत दिनों से भूखा ही है। पेंटर अंकल मेहनताने के तौर पर इसे कुछ ही रुपये देंगे, जिससे एक समय का खाना भी नहीं जुटा पायेगा।

क्यों नहीं मैं सारे पैसे इसे दे दूँ पर मेरी प्रतियोगिता का क्या होगा...नहीं...नहीं मैं ये पैसे इसे नहीं दूँगा...माँ और पैसे भी तो मुझे नहीं देगी। सारे पैसे उसने मुझे दे दिये हैं। अब तो उसके पास पैसे भी नहीं है।

पर, क्या इन पैसों की मुझसे अधिक आवश्यकता इसे नहीं है? मैं तो बिना प्रतियोगिता में भाग लिए जिन्दा रह सकता हूँ। आज मुनिवर ने भी व्याख्यान में कहा था- दीन-दुःखी की सेवा करना सच्चे जैनी का कर्त्तव्य है। मैं सारे पैसे इसे दे दूँगा। संदीप सारे पैसे भिखारी के कटोरे में डाल देता है, और इससे पहले कि पेंटर अंकल वहाँ आये वह उठकर घर की ओर निकल पड़ता है।

खाली हाथ लौटा देखकर माँ झट से पूछती है- क्या हुआ बेटा, पैसे कम पड़ गए?

नहीं माँ....।

अरे तू रो क्यों रहा है...गुमा आया न पैसे।

नहीं माँ....।

तो किसी ने छीन लिये, किसने छीने बता?

अरे, तू बोलता क्यों नहीं....।

माँ, मैंने सारे पैसे एक बूढ़े भिखारी.....वह सारी बात माँ को बताता है।

अरे पगले! अब रोता क्यों है? दान देकर पछताते थोड़े ही हैं। माँ ने सांत्वना देते हुए कहा।

पर, माँ मेरी प्रतियोगिता का क्या होगा?

देख बेटा, मैंने सारे पैसे तो तुझे दे दिए, पर मैं कोशिश करूँगी, शायद तेरे लिए कुछ कर सकूँ।

प्रतियोगिता में सिर्फ एक दिन बचा है। आज संदीप की माँ दुकान पर सिले हुए कपड़े देने गयी है, और संदीप इन्तजार कर रहा है उसकी माँ का....।

तभी माँ लौटती है उदास चेहरे के साथ... वह समझ जाता है माँ पैसों का इंतजाम नहीं कर पायी है।

बेटा! सेठजी ने एडवांस देने से मना कर दिया, मैं तेरे लिए पैसे नहीं जुटा पायी, माँ ने दुःख पूर्वक कहा। संदीप मन ही मन सोच रहा है, तेरी भी मति भ्रष्ट हो गयी थी जो सारे पैसे भिखारी को दे दिये, अब मैं प्रतियोगिता में भाग नहीं ले सकूँगा। मुनिवर तो कहते हैं दान देने से धन कम नहीं होता उसमें और वृद्धि होती है।

नहीं...नहीं... मुझे ऐसा नहीं सोचना चाहिए। मैंने जो पैसे किसी फल-प्राप्ति की इच्छा से नहीं दिये थे वह तो मेरा कर्त्तव्य था...मैं एक सच्चा जैनी हूँ.... संदीप यह सोच ही रहा था कि पोस्टमेन ने आवाज लगा दी।

रजिस्टर्ड पत्र को खोलकर देखता है तो उसमें उसे ही संबोधित कर पत्र लिखा था-

प्रिय संदीप,

खुश रहो, तुमने कुछ दिन पहले स्टूडियो में एक भिखारी को पैसे दिये थे। दरअसल मैं भिखारी नहीं इस नगर का सबसे बड़ा सेठ करोडीमल हूँ।

चित्रकला से मुझे बचपन से लगाव है। विभिन्न पोशाकों में अपने चित्र बनवाना मेरा शोक है और साथ ही इससे चित्रकारों को प्रोत्साहन भी कर पाता हूँ।

तुम्हारे पेंटर अंकल से सारी जानकारी प्राप्त हुई। तुम्हारी दानवीरता से मैं प्रभावित हूँ, समाज को तुम जैसे बच्चों की आवश्यकता है।

तुम्हारे सारे पैसे मैंने अपने व्यापार में लगा दिये हैं, उससे होने वाला लाभ हर माह प्रेषित करूँगा...यह चैक बैंक जाकर भुनवा लेना।

तुम्हारा हितैषी

भिखारी

उसके मुँह से निकल पड़ा-"माँ मुनिवर ने सत्य ही कहा था कि-'दान का फल अवश्य ही मिलता है।" *(जिनवाणी, फरवरी 1997 से गृहीत)*

-24, जैन कॉलोनी, लक्ष्मीनगर,
पावटा बी रोड़, जोधपुर (राज.)
वर्तमान पता: प्राचार्य श्री प्राज्ञ महाविद्यालय,
विजयनगर, जिला-अजमेर (राज.)

जिनवाणी

श्री नन्दलाल मारू

महावीर निर्वाण प्राप्ति को सदियाँ बीत गई पच्चीस।
जिनवाणी उपलब्ध हमें है गुंफित आगम में बत्तीस।।

ग्यारह गणधर हुए आपके शास्त्र-विशारद श्रेष्ठ।
सभी जाति के ब्राह्मण थे, थे गौतम जिनमें ज्येष्ठ।।

यह विशाल परिवार आपका, श्रमण-श्रमणियों वाला।
छत्तीस सहस्र थीं सतियाँ, जिनकी नेत्री चन्दनबाला।।

चौदह सहस्र श्रमण थे जिनके, मुखिया गौतम स्वामी।
श्रमणोपासक तो लाखों थे, श्रेणिक, आनन्द से नामी।।

कहा आपने इन्द्रिय सुख तो मृग-मरीचिका सा है।
आत्मा कर्ममुक्त होने पर शाश्वत सुख मिलता है।।

प्रलयोन्मुख जग की पीड़ा का रामबाण उपचार यही।
सत्य, अहिंसा, अनेकांत, व्रत, अपरिग्रह धारें सब ही।।

धार हृदय में इन्हें बना लें तब्दील हम अपना जीवन।
निश्चित है उद्धार हमारा, यदि पालें हम आजीवन।।

-जिनवाणी, मार्च 1976 से गृहीत

कृति की 2 प्रतियाँ अपेक्षित हैं

नूतन साहित्य

डॉ. श्वेता जैन

पुष्पदंत क्रिया-कोश- निर्देशन-डॉ. कमलचन्द सोगाणी, ***संकलन***- श्रीमती शशिप्रभा जैन, प्रकाशक- अपभ्रंश साहित्य अकादमी, जैन विद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, श्री महावीरजी (राज.), ***प्राप्ति स्थान***- जैन साहित्य उपलब्धि केन्द्र, दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी, सवाई रामसिंह रोड, जयपुर-302004 (राज.), ***पृष्ठ***-74+6, ***मूल्य***-200 रुपये, ***सन्***-2017

लोक भाषा कालचक्र के साथ परिवर्तित होने से अस्थायी होती है, किन्तु साहित्य में निबद्ध होने पर उसमें कुछ स्थायित्व सा आ जाता है। ऐसी ही तत्कालीन लोकभाषा 'प्राकृत' धर्मप्रचार का साधन बनी। समय के साथ वह साहित्य में प्रयुक्त होने लगी। प्राकृत जब साहित्यिक भाषा बन गई तब एक नई लोक भाषा अपभ्रंश का जन्म हुआ। सम्पूर्ण उत्तर भारत में लम्बे समय तक अपभ्रंश लोक व्यवहार की भाषा बनी रही। आठवीं शताब्दी में स्वयंभू ने अपभ्रंश में साहित्य रचना कर इसे साहित्य के क्षेत्र में सर्वोच्च स्थान दिलाया। अपभ्रंश साहित्य को समझने के लिए 1988 में स्थापित 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' द्वारा पाठ्यक्रम के अतिरिक्त 'कोश' भी तैयार किए जा रहे हैं। जैसे- पउमचरिउ क्रिया-कोश, मयणपराजयचरिउ-शब्द कोश। इसी क्रम में 'पुष्पदंत क्रिया कोश' प्रकाशित हुआ है, जिसमें 10 वीं शती के महाकवि पुष्पदंत द्वारा रचित महापुराण, णायकुमारचरिउ एवं जसहरचरिउ में प्रयुक्त क्रियाओं का संकलन किया गया है। इसमें अकारादि क्रम से क्रियाओं के हिन्दी अर्थ सन्दर्भ सहित दिए गए हैं। कुछ क्रियाओं का प्रयोग एक से अधिक अर्थों में हुआ है, उनके अर्थ संदर्भ वाक्यों सहित दिए गए हैं। पूर्व में 'संकेत सूची' दी गई है ताकि पाठकों को समझने में असुविधा न हो। भाषाविद् और शोधार्थियों के लिए यह पुस्तक उपादेय है।

जैन धर्म-एक झलक- डॉ. अनेकान्त कुमार जैन, ***प्रकाशक***- श्रुत संवर्द्धन संस्थान, प्रथम तल, 247, दिल्ली रोड़, मेरठ-250002 (उत्तरप्रदेश), फोनः 98113-52054, 93122-43845, ***पृष्ठ***-66+14, ***मूल्य***-40 रुपये मात्र, षष्ठ संस्करण, सन् 2015

जैन धर्म और दर्शन के सामान्य बोध के लिए लिखी गई यह पुस्तक जैन सिद्धान्तों को सरल एवं सहज तरीके से प्रतिपादित करती है। इसमें 17 विषयों के अन्तर्गत जैन धर्म-दर्शन को प्रस्तुत किया गया है। जिसमें जैन धर्म के प्राचीन इतिहास से लेकर वर्तमान तक की संक्षिप्त स्थिति का वर्णन है। दिगम्बर और श्वेताम्बर सम्प्रदाय कैसे बनी; आगम साहित्य का इतिहास क्या है; षड्द्रव्य, रत्नत्रय, सप्ततत्त्व, अणुव्रत, अनेकान्त, स्याद्वाद, स्वर्ग-नरक, दश लक्षण धर्म, मंत्र, बारह भावनाएँ, कर्म विज्ञान, गुणस्थान, पर्व, मरने की कला विषयों को रेखांकित किया गया है।

मूकमाटी : चेतना के स्वर- प्रोफेसर भागचन्द्र जैन, ***प्रकाशक***- सन्मति प्राच्य शोध संस्थान, नागपुर, ***प्राप्ति-स्थान***- कला प्रकाशन, बी 33/33ए, ए-1, न्यू साकेत कॉलोनी, बी.एच.यू., वाराणसी-5, ***पृष्ठ***-337+4, ***मूल्य***-250/-रुपये, द्वितीय संस्करण, सन् 2015

दिगम्बर आचार्य विद्यासागरजी द्वारा प्रणीत 'मूकमाटी' हिन्दी साहित्य की एक अनुपम दार्शनिक कृति है। इसी काव्य पर लिखी यह पुस्तक एक शोध प्रबन्ध है, जिस पर प्रो. जैन को डी.लिट् की उपाधि प्राप्त हुई है। इसमें आठ परिवर्त हैं- 1. आचार्य श्री विद्यासागर : व्यक्तित्व और कृतित्व, 2. आधुनिक

हिन्दी काव्य के परिप्रेक्ष्य में 'मूकमाटी', 3. कथ्य और तथ्य, 4. आधुनिक चेतना, 5. दार्शनिक चेतना, 6. सांस्कृतिक और सामुदायिक चेतना, 7. अभिव्यञ्जना शिल्प चेतना, 8. कलात्मक सौन्दर्य चेतना। 'मूकमाटी' महाकाव्य व्यक्ति की उपादान शक्ति पर विश्वास करता है और उसको उन्मेषित करने के लिए निमित्तों की आवश्यकता स्वीकार करता है। इसमें निमित्त-उपादान की सुन्दर मीमांसा की गई है। कवि ने न निमित्त पर बल दिया है और न उपादान को प्रमुखता दी है; बल्कि उन्होंने आगमिक आधार पर उसका सापेक्षिक कथन किया है, जो एक ओर दार्शनिक बोध का विस्तार करता है तो दूसरी ओर व्यावहारिक क्षेत्र में उतरकर वस्तु स्थिति को समझने का संकेत करता है। लेखक 'मूकमाटी' को एक महावृक्ष के रूप में प्रतिपादित करते हुए लिखता है कि 'मूकमाटी' एक ऐसा महावृक्ष है, जिसके नीचे खड़े होकर पथिक अध्यात्म के प्रति आस्था और जागरूकता पैदा कर लेता है, चेतना के विभिन्न स्वरों में अपना स्वर मिलाकर नयी क्रान्ति उत्पन्न कर लेता है और उपशमन के उस साधन को पा लेता है, जो विवेक-चेतना को जाग्रत कर स्वस्थ दृष्टिकोण को गहरा देता है।

मूकमाटी का सृजन उदात्त चेतना पर आधारित है। श्रमण विचारधारा में ओतप्रोत यह कदाचित् प्रथम कृति है जो मिट्टी, कुम्भ और कुम्भकार के व्याज से एक ओर ईश्वर के सृष्टिकर्तृत्व का सयुक्तिक खण्डन करती है, तो दूसरी ओर प्रकृति, जीव और ईश्वर के यथार्थ स्वरूप पर प्रकाश डालती है। अन्त में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची दी गई है। यह पुस्तक 'मूकमाटी' महाकाव्य के सभी पक्षों को विस्तार से प्रस्तुत करती है। जिज्ञासु, लेखक, शोधार्थी के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

शीलव्रतधारियों की सूची का शेषांश-

50. श्रीमती जसारामजी जाट पारासरिया-बारणी खुर्द, 51. श्रीमती एवं श्री भंवरलालजी हरीजन-नाड़सर, 52. श्रीमती एवं श्री झूमररामजी मेघवाल-नाडसर, 53. श्रीमती एवं श्री खेराजराम जी मेघवाल-नाड़सर, 54. श्रीमती एवं श्री मांगीलालजी मेघवाल-नाड़सर, 55. श्रीमती एवं श्री बागारामजी देवासी-नाड़सर, 56. श्रीमती एवं श्री दुर्गारामजी मेघवाल-नाड़सर, 57. श्रीमती एवं श्री शांतिलालजी लोढ़ा-नाड़सर, 58. श्रीमती एवं श्री कालूरामजी जाट-नाड़सर, 59. श्रीमती एवं श्री शिरूरामजी मेघवाल-नाड़सर, 60. श्रीमती एवं श्री मांगीलालजी जाट-नाड़सर, 61. श्रीमती एवं श्री मंगारामजी मेघवाल-नाड़सर, 62. श्रीमती एवं श्री भेरुरामजी मेघवाल-नाड़सर, 63. श्रीमती एवं श्री मदनसिंहजी राजपूत-नाड़सर, 64. श्रीमती एवं श्री लक्ष्मणरामजी देवड़ामाली-नाड़सर, 65. श्रीमती एवं श्री नत्थुरामजी माली, 66. श्रीमती एवं श्री सुखारामजी माली-भोपालगढ़, 67. श्रीमती एवं श्री किशनारामजी सुथार, 68. श्रीमती एवं श्री उत्तमचन्दजी धारीवाल-बैंगलोर, 69. श्रीमती एवं श्री सुरेशचन्दजी बाफणा-(भोपालगढ़)-चेन्नई, 70. श्रीमती एवं श्री उम्मेदराजजी हुण्डीवाल-भोपालगढ़, 71. श्रीमती एवं श्री नेमीचन्दजी खींवसरा-भोपालगढ़-चेन्नई, 72. श्रीमती एवं श्री किशनरूपजी चौधरी-जोधपुर, 73. श्रीमती एवं श्री पारसमलजी कांकरिया-(भोपालगढ़)-जलगांव, 74. श्रीमती एवं श्री ज्ञानचन्दजी मेहता-किशनगढ़ शहर, 75. श्रीमती एवं श्री भौमराजजी कोठारी-भोपालगढ़, 76. श्रीमती एवं श्री चंचलमलजी कांकरिया-भोपालगढ़, 77. श्रीमती एवं श्री प्रवीणकुमारजी सिंघवी-बारणी-जोधपुर, 78. श्रीमती एवं श्री राजेन्द्रकुमारजी बाघमार-कोसाणा-चेन्नई, 79. श्रीमती एवं श्री सुरेशजी कोचर-कोम्यबटूर, 80. श्रीमती एवं श्री सुभाषकुमारजी बरड़िया, 81. श्रीमती एवं श्री दुर्गारामजी भाटी-भाटियों की ढाणी-बागोरिया, 82. श्रीमती एवं श्री ज्ञानेशकुमारजी मुणोत-नवसारी, 83. श्रीमती एवं श्री अमरचन्दजी सिसोदिया-अयनावरम्, 84. श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाशजी लुंकड़-जोधपुर, 85. श्रीमती एवं श्री सुरेन्द्रकुमारजी कांकरिया-भोपालगढ़।

निमाज चातुर्मास के पश्चात् से भोपालगढ़ चातुर्मास तक शीलव्रतधारकों की सूची

उत्कृष्ट साधक पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का भी अपने गुरुदेव पूज्य आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. की भांति यह संकल्प है कि वे जितने वर्षों के होंगे, उतने आजीवन शीलव्रती तैयार करेंगे। उन्हें अपने संकल्प में आशातीत सफलता प्राप्त हुई है। 78 वर्ष की वय में चार गुणे से भी अधिक 322 सदार आजीवन शीलव्रती बने हैं।

शीलव्रतधारियों के नाम (15 नवम्बर 2016 से 31 अक्टूबर 2017 तक)

1. श्रीमती एवं श्री देवराजजी चुतर-निमाज, 2. श्रीमती एवं श्री ब्रजरतनजी ब्राह्मण-करमावास, 3. श्रीमती एवं श्री भंवरलालजी गुन्देचा-सोजतरोड़, 4. श्रीमती एवं श्री कुशालचन्दजी गुन्देचा-, 5. श्रीमती एवं श्री भंवरसिंहजी राजपुरोहित-सिरवियों का बेरा(मंडला), 6. श्रीमती एवं श्री जयसिंहजी चारण-बिलाड़ा, 7. श्रीमती एवं श्री धनेश कुमारजी बागरेचा-पालडी (अहमदाबाद), 8. श्रीमती एवं श्री नेमीचन्दजी कटारिया-बिलाड़ा, 9. श्रीमती एवं श्री मदनसिंहजी उदावत-उदलियावास, 10. श्रीमती एवं श्री रामशरणजी दाधीच-रणसीगाँव, 11. श्रीमती एवं श्री अभय कुमारजी डागा-जयपुर, 12. श्रीमती एवं श्री प्रेमचन्दजी कवाड़-पीपाड़सिटी, 13. श्रीमती एवं श्री माणकचन्दजी श्रीश्रीमाल 'केकड़ी वाले'-चेन्नई, 14. श्रीमती एवं श्री सुमतिचन्दजी मुथा-पीपाड़शहर, 15. श्रीमती एवं श्री बादलचन्दजी समदड़िया-पीपाड़शहर, 16. श्रीमती एवं श्री सुरेशचन्दजी कवाड़ 'पीपाड़ वाले'-चेन्नई, 17. श्रीमती एवं श्री कंवरलालजी कटारिया 'रुणवाले'-चेन्नई, 18. श्रीमती एवं श्री रवीन्द्रकुमारजी कवाड़ 'पीपाड़ वाले'-पुन्नमल्लै (चेन्नई), 19. श्रीमती एवं श्री पारसमलजी मुथा 'पीपाड़वाले'-जोधपुर, 20. श्रीमती एवं श्री प्रेमचन्दजी भंसाली-भद्रावती, 21. श्रीमती एवं श्री ओमप्रकाशजी सोनी-पीपाड़शहर, 22. श्रीमती एवं श्री धनपतजी मेहता-पीपाड़शहर, 23. श्रीमती एवं श्री सूरजमलजी सोनी-पीपाड़शहर, 24. श्रीमती एवं श्री पृथ्वीराजजी भण्डारी-पीपाड़शहर, 25. श्रीमती एवं श्री रतनराजजी लोढ़ा-पीपाड़शहर, 26. श्रीमती एवं श्री आनन्दकुमारजी बाघमार-हैदराबाद, 27. श्रीमती एवं श्री अभयकुमारजी चौहान-इन्दौर, 28. श्रीमती एवं श्री भंवरलालजी चौधरी-मादलिया, 29. श्रीमती एवं श्री भंवरलालजी सुनार-मादलिया, 30. श्रीमती एवं श्री मेवारामजी जाट-फड़ाको की ढ़ाणी, 31. श्रीमती एवं श्री पन्नालालजी सुथार-रणसीगाँव, 32. श्रीमती एवं श्री हनुमान चौधरी-रणसीगाँव, 33. श्रीमती एवं श्री सत्यनारायणजी सैन-रणसीगाँव, 34. श्रीमती एवं श्री गटारामजी माली-, 35. श्रीमती एवं श्री शंकररामजी माली-मालियों की ढ़ाणी, 36. श्रीमती एवं श्री चम्पालालजी माली-मालियों की ढ़ाणी, 37. श्रीमती एवं श्री चन्दारामजी चौधरी-मातामगरी, 38. श्रीमती एवं श्री भगारामजी प्रजापत-टालनपुर, 39. श्रीमती एवं श्री बालकिशनजी सोमाणी-गोटन, 40. श्रीमती एवं श्री रामकरणजी नाई-गोटन, 41. श्रीमती एवं श्री सुनीलकुमारजी डागा-जयपुर, 42. श्रीमती एवं श्री छोगालालजी जोशी-टालनपुर, 43. श्रीमती एवं श्री हरिरामजी चौधरी-गोटन, 44. श्रीमती एवं श्री हरसुखलालजी प्रजापत-असावरी, 45. श्रीमती एवं श्री हनुमानजी राजपूत (करमसोत)-असावरी, 46. श्रीमती एवं श्री मुरलीधरजी सोनी-असावरी, 47. श्रीमती एवं श्री मांगीलालजी प्रजापत-असावरी, 48. श्रीमती एवं श्री भरतसिंहजी राठौड़-गारासनी, 49. श्रीमती एवं श्री रामपालजी जाट-बारणी खुर्द। **(शेषांश पृष्ठ संख्या 54 पर)**

समाचार विविधा

क्रियोद्धारक भूमि भोपालगढ़ में श्रद्धा, भक्ति का अपूर्व सैलाब एवं तप-त्याग की सुन्दर सरिता

क्रियोद्धारक धरा में ज्ञान-क्रिया सम्पन्न, आगमज्ञ, दिव्य दिवाकर, प्रवचन प्रभाकर, ज्ञान सुधाकर, गुणरत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग- व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर **परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.** आदि ठाणा 9 तथा व्याख्यात्री **महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** आदि ठाणा 8 के पावन वर्षावास के उत्तरार्द्ध समय में भी तप-त्याग-व्रत प्रत्याख्यान का वृहद् स्तर पर साधना-आराधना का सुन्दर प्रसंग परिलक्षित हुआ, वह श्लाघनीय व अनुमोदनीय है।

29 सितम्बर को धनोप संघ के सदस्य गणों एवं पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराज जी चौपड़ा ने पूज्य आचार्य भगवन्त की चरण सन्निधि का लाभ लिया। 30 सितम्बर को जयपुर महानगर से अच्छी संख्या में पावन चरणों में भाई/बहिनों ने पधारकर, सेवाकर धन्यता का अनुभव किया। आचार्य श्री भूधरजी म.सा. की पुण्यतिथि पर उनका गुणानुवाद किया गया।

01 अक्टूबर को सोरापुर संघ, कुम्भकोणम संघ के सदस्य चातुर्मास की विनति लेकर एवं अहमदाबाद संघ, नागौर संघ दर्शन-वंदन की भावना से, 02 अक्टूबर को सवाईमाधोपुर शहर संघ चातुर्मास की भावना से, 04 अक्टूबर को बीजापुर संघ अपनी भावना एवं विनति पूज्य गुरु भगवन्त के चरणों में निवेदन करने तथा रतकूड़िया गाँव से फरसने की विनति लेकर सांसद, विधायक आदि पूज्य गुरुदेव की पावन सेवा में उपस्थित हुए। 05 अक्टूबर को आयम्बिल ओली की साधना पूर्ण हुई। सूरत संघ व गंगापुर सिटी संघ क्षेत्र खाली न रहे, ऐसे पुरजोर भाव निवेदन करने दोनों संघ पूज्यप्रवर की सेवा में पधारे। 06 अक्टूबर को आचार्य श्री हमीरमलजी म.सा. की पुण्यतिथि पर उनके उपकारों पर महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने प्रवचनामृत फरमाया। 07 अक्टूबर को भाजपा सांसद श्री बद्रीरामजी जाखड़ ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। 08 अक्टूबर को शक्तिनगर संघ-जोधपुर, पाली संघ, मेड़ता संघ, अंकलेश्वर संघ चातुर्मास की विनति लेकर पूज्य गुरुदेव की पावन सेवा में उपस्थित हुए। 10 अक्टूबर को धनारी संघ ने अपनी भावना गुरुप्रवर के चरणों में रखी। 12 अक्टूबर को आचार्य श्री गुमानचन्द्रजी की पुण्यतिथि पर 21 बोलों की मर्यादा निर्धारण पर प्रवचनामृत फरमाया गया। 13 अक्टूबर को बालोतरा के अनन्य गुरुभक्त श्री माणकलालजी चौपड़ा अपनी सुपौत्री कुमारी तनिषाजी सुपुत्री श्री नरेशकुमारजी के असामयिक स्वर्गवास पर परिवारजनों, संघ सदस्यों के साथ मांगलिक श्रवण करने पधारे। 18 से 20 अक्टूबर तक भगवान महावीर स्वामी की अंतिम वाणी उत्तराध्ययन सूत्र के मूल का वाचन श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने प्रवचन के अन्तर्गत 8.30 से 9.25 तक किया। तदनन्तर प्रत्येक अध्ययन का संक्षिप्त सार प्रभावशाली शैली में फरमाकर भावों व प्रसंगों की अद्वितीय प्रस्तुति से उपस्थित श्रद्धालु गुरुभक्तों को प्रभावित किया। अनेक भाई/बहिनों ने भगवान महावीर के निर्वाण कल्याणक प्रसंग पर तेले का अर्घ्य अर्पित करने की भावना से 18 अक्टूबर से ही तपस्या प्रारम्भ कर दी थी। 19 अक्टूबर को भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण दिवस पर एवं 20 को गौतम प्रतिपदा पर तप-त्याग का विशेष प्रसंग होने से प्रवचन

फरमाया गया। इस दिन 24 तेले व एक अठाई तप की आराधना हुई। 20 अक्टूबर को ही पीपाड़ संघ पौष शुक्ला चतुर्दशी, दीक्षा-प्रसंग व चातुर्मास की विनति लेकर तथा गोटन संघ शेखेकाल फरसकर उपकृत करने की भावना से पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में उपस्थित हुआ। 21 अक्टूबर को आगोलाई संघ एवं 22 अक्टूबर को रतकूड़िया संघ जैनेतर बन्धुओं सहित शेषकाल में फरसने की भावना से उपस्थित हुए। उनकी विनति में राज्यसभा के सदस्य (भाजपा) श्री रामनारायणजी डूडी, राजस्थान सरकार की जन-जाति विकास राज्यमंत्री श्रीमती कमसाजी मेघवाल, सरपंच श्री वल्लारामजी देवर, देवरी प्रतिष्ठित धाम के महंत श्री रामदासजी महाराज शास्त्री व क्षेत्र के सभी समाजों के प्रतिष्ठित भाइयों का बोहरा परिवार सहित उत्साह से पुरजोर भावों के साथ प्रबल निवेदन रहा। लगभग पूरे गांव से हर परिवार से गुरुभगवन्त की सेवा में विनति लेकर जैनेतर बन्धुओं का आना, अभूतपूर्व परिदृश्य था। आज ही जोधपुर के समर्पित गुरु भक्त श्री नरेशकुमारजी संकलेचा समस्त परिवारजनों, सगे-सम्बन्धियों व गुरुभक्तों को साथ लेकर पूज्य गुरुदेव की सेवा में आये एवं प्रवचन श्रवण के साथ सेवा सन्निधि का लाभ लिया। महामंदिर संघ जोधपुर एवं बीकानेर संघ भी पावन सन्निधि का लाभ लेने उपस्थित हुआ।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि की प्रेरणा से 24 से 26 अक्टूबर तक रत्नत्रय आराधना की साधना का क्रम प्रवाहमान रहा। 24 अक्टूबर को दर्शन आराधना, 25 को ज्ञान पंचमी होने से ज्ञान आराधना का कार्यक्रम रहा। 26 अक्टूबर कार्तिक शुक्ला षष्ठी को पूज्य आचार्यप्रवर के चारित्र में आरोहण का 55 वां वर्ष था, अतः उस दिन चारित्र आराधना के रूप में साधना रही। इस रत्नत्रय आराधना में 55 भाई/बहिनों ने भाग लेकर आराधना का लक्ष्य रखा। प्रातः प्रवचन से पूर्व श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. सुखविपाक सूत्र की आराधनामय स्वाध्याय एवं दोपहर 1.30 से 2 बजे तक नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्रीजी म.सा. ने शुद्धीकरण के लिये आलोचना पर ओजपूर्ण शैली में भावाभिव्यक्ति की। आराधना में लोगस्स, वंदना, माला फेरना, नमोत्थुणं देना आदि ये सब प्रवृत्तियाँ यथासमय सम्पादित हुईं।

24 अक्टूबर को ही मुम्बई से सुश्रावक श्री निर्मलजी साण्ड पूज्य गुरुदेव की पावन सेवा में पधारे। आपने 60 गाँवों में सम्पर्क कर वहाँ के निवासियों को दया-अहिंसा के विषय में समझाने का दुरुह कार्य किया है। आपके प्रयास से कई अहिंसक बने हैं तथा परस्पर प्रेम में वृद्धि हो, ऐसे विचार ग्रामवासियों के मध्य रखकर संस्कार सृजन का कार्य कर रहे हैं।

25 अक्टूबर को ज्ञानपंचमी व 26 अक्टूबर को पूज्य **आचार्यप्रवर के दीक्षा प्रसंग पर** महान् अध्यवसायी मुनिश्री ने बेले तप की आराधना की प्रेरणा की थी। फलस्वरूप हर घर के सभी सदस्यों ने तप अनुष्ठान में अपूर्व सहकार किया। उस दिन कई एकासन, कई उपवास, 81 बेले, 11 तेले, 1 पाँच व 2 दस/ग्यारह की तपस्याएँ हुईं। बहिन श्रीमती सुमनजी/श्री रविन्द्रकुमारजी लूंकड़ ने पूज्य आचार्यप्रवर में निहित गुणों के समकक्ष 36 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान लेकर दीक्षा दिवस की दीप्ति को वर्धित करने का जो पुरुषार्थ किया, वह श्लाघनीय है। समस्त चारित्रात्माएँ भी अपने आराध्य के प्रति तप साधना का अर्घ्य अर्पित करने के लिये इस दिवस की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे थे। सभी ने यथाशक्य उपवास, बेले व तेले की तपस्या की। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने 9 दिवसीय तप की कृश काय होते हुए भी आराधना की। महासतीजी म.सा. का चातुर्मास अवधि में ही 108 नींवी की साधना का लक्ष्य स्वास्थ्य समाधि के साथ फलित हुआ। अधिकतर चारित्रात्माओं ने आज 108 बार वन्दना कर भाग्यशालिता का अनुभव किया। 26 अक्टूबर को सूर्य की प्रथम प्रभा के साथ अपने परमाराध्य के प्रति 55 वें दीक्षा दिवस पर हृदय की असीम आस्था के साथ शुभमंगल भावनाओं/ कामनाओं को पावन पुनीत चरणों में

अर्पित करने वालों की बहुलता थी। प्रार्थना के बाद प्रातः 7.20 से 8 बजे के मध्य 108 भाई/बहिनों ने तिक्खुत्तो के पाठ से सामूहिक रूप से 108 बार सविधि सादर वन्दना कर धन्यता का अनुभव किया। समीपस्थ व दूरस्थ अनेक स्थानों से पावन प्रसंग पर प्रातः से ही पधारना प्रारम्भ हो गया था। रत्नसंघ की राजधानी जोधपुर से ही सुनिश्चित हो गया था कि सामूहिक गुरु चरण वंदन के लिये 26 अक्टूबर को भोपालगढ़ में विराजमान पूज्य आचार्यप्रवर की पावन सन्निधि के लिये उद्यत रहना है। जोधपुर के अतीत के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो शायद ही ऐसा उदाहरण मिल पाये। एक साथ 700 से अधिक भाई/बहिनों का चरण वंदन के अतिरिक्त आगामी पौषसुदि चतुर्दशी, दीक्षा प्रसंग व चातुर्मास की विनति लेकर आना, अपने आपमें विशिष्ट है, अनुपम है। सभी ने तीन-तीन सामायिक का लक्ष्य रखा एवं प्रवचन सभा में विराज गये। 55 वें दीक्षा दिवस पर श्रद्धा का अपूर्व सैलाब था। प्रवचन श्री जैन रत्न उच्च माध्यमिक विद्यालय के परिसर में रखा गया। जिधर देखो उधर दूर तक सामायिक साधना में विराजे हुए श्रावक/श्राविकाएँ दृग्गोचर हो रहे थे। हजारों की संख्या के बावजूद प्रवचन सभा में अपूर्व शांति रही।

नवदीक्षित श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. ने सर्वप्रथम प्रवचन प्रारम्भ करते हुए फरमाया कि पूज्य आचार्य भगवन्त के समक्ष चाहे कोई प्रशंसा करे, जय-जयकार करे, निंदा करे, पर ऐसे कोलाहल में भी हलचल नहीं मचती। **नवदीक्षिता महासती श्री मधुश्रीजी म.सा.** 'आगे-आगे सुन गुरु जीवन को, जीवन को हाँ जीवन को......' के अन्तर्गत बालक हीरा के जन्म से लेकर माता-पिता द्वारा प्रदत्त संस्कारों से शिक्षा लेते हुए उन्हें जीवन में आचरित किया, उसका दिग्दर्शन कराया। सौम्य आकृति वाला हीरा सभी का प्रिय रहा। बहिन के वियोग से वैराग्य भावों का वपन हुआ।

महासती श्री महिमाश्रीजी म.सा. ने 11 से 20 वर्षीय त्यागमय जीवन पर अभिव्यक्ति कर कहा कि गुरु की साधना से आकर्षित हो पापों से निवृत्ति रखते हुए, सामायिक किये बिना पानी नहीं, रात्रि चौविहार त्याग, 12 बजे ध्यान आदि का दृढ़ता से पालन किया, आप प्रियधर्मी हैं।

महासती श्री अरिहाश्रीजी म.सा. ने फरमाया कि 21 से 30 वर्ष का समय नये जोश नये जुनून वाला युवाकाल रहता है। आपने वरिष्ठ अधिकारी को व्यसन सेवन से रोक दिया। आप निर्भयता से कर्त्तव्य पालन करते। गुरुचरणों में दीक्षित हो, चरणों में रहकर ही ज्ञानाभ्यास किया।

महासती श्री सरोजश्रीजी म.सा. ने फरमाया- आचार्यप्रवर ने 31 से 40 वर्ष विनय समर्पण से गुरु आज्ञा का पालन किया। कभी तर्क नहीं किया। इन गुरु का जीवन अपने आराध्य के लिये था। अतः गुरु ने भी अपनी योग्यता व गुण इस शिष्य में उंडेल दिये।

महासती श्री नव्यप्रभाजी म.सा. ने फरमाया- आचार्यप्रवर 41 से 50 वर्ष प्रौढ़ावस्था पर गुरुचरणों में रहते हुए संयम के रस में रमते गये। गुरु आज्ञा से नागौर में अलग चातुर्मास किया। गुरु को योग्य शिष्य की कमी खली। गुरु के साथ रत्नाधिकों का विनय किया।

महासती श्री प्रतिष्ठाप्रभाजी म.सा. ने फरमाया- 51 से 60 वर्ष बुद्धिमान किसान बीज की सुरक्षा करता है उसी तरह हमारे आचार्य भगवन्त भौतिक आकर्षण से हटकर आध्यात्मिकता में रम गये। आचार्य पद पर आरोहण होते ही परीक्षा प्रारम्भ हो गई। एक संत गर्मी के कारण काल कर गये। पर गुरुदेव ने धैर्य रखा। अन्य व्याकुल संतों की सेवा में लगे रहे।

महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. ने आचार्यप्रवर के 61 से 70 वर्ष तक के जीवन का उल्लेख करते हुए कहा- आप श्री के जीवन की सफलता को गाया गया। आपश्री जवाबदारी निभाने की योग्यता में कुशल हैं। संत

अपने दुःख से कभी दुःखी नहीं होता। पर आपश्री प्रायः संत-सती की पीड़ा/वेदना वाले समाचारों के श्रवण से दुःखी रहते ही होंगे। सब अपना ब्राण्ड चाहते हैं, पर गुरु हीरा ने अपने गुरु के पौधों में पानी डाल सिंचित किया। आप दयासागर हैं आपकी गौशाला में यह लूली-लंगड़ी-अपंग-अयोग्य गाय है, इस अनाथ गाय का भी पोषण करें।

व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. ने 71 वर्ष से वर्तमान तक के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इस लोक में संत अनेक, पर आचार्य तो एक ही होते हैं। तीर्थ अनेक पर तीर्थंकर तो एक ही होते हैं। संघ संचालन की सारी योग्यता गुरु हस्ती ने हीरा में देखी और आचार्य के लिये चयन कर ही दिया। आपके गुणों का हम कहाँ से वर्णन करें। आपश्री का समूचा जीवन गुण-गरिमामय रहा है। हर जगह चाहे बीजापुर की घटना हो या मुम्बई का समागम। दूरदर्शिता से सब समाधान दिया। आज के युग में सुविधाएँ खोलने की मांग चल रही है, पर गुरुदेव ने मर्यादा के 21 बोलों को 100 तक पहुँचा दिया। अतिशयधारी गुरुदेव मुझे भी आपके चरणों में ऐसे ही पहुँचाये।

श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने संस्कृत भाषा में स्वरचित 5 छंदों के माध्यम से गुरु के विपुल गुणों का गुणानुवाद किया। मोद प्रदान करने वाले ऐसे मेरे महान् गुरु सर्वश्रेष्ठ हैं।

श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.-''मेरी एक ही तमन्ना, हस्ती के पट्टधर, रहना न दूर हमसे, लेना खबर हमारी।'' गुरु एक व्यक्ति नहीं अपितु एक शक्ति है। आप यथानाम तथा गुण के धारक हैं। भगवान महावीर के शासन का अक्षरशः संरक्षण कर रहे हैं। सहज, नम्र व तपस्वी ऐसे गुणपुंज सद्गुरु हमको साक्षात् मिले हैं। संसर्ग पाकर जीवन सुन्दर बनाया।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा.- गुरुदेव के 55 वें दीक्षा दिवस पर समवसरण जैसा जो अभूतपूर्व दृश्य दिखाई दे रहा है वह गुरुदेव के प्रति भक्ति, समर्पण व श्रद्धा का परिचायक है। पूज्य श्री आप 'छंद निरोध' की साधना कर श्रेष्ठ साधक बन गये। गुरुदेव से जब धर्म सभा में पधारने के लिये निवेदन करते हैं तब यही फरमाते हैं कि आपकी भावना है कि मैं मेरे गुण सुनने के लिये धर्म सभा में आऊँ। ''भाई! गुण सुनने के लिये नहीं, जीवन में आचरण करने के लिये हैं। आप सभी 3-3 की अपेक्षा दिन भर में 5-5 सामायिक करने का लक्ष्य रखें। आज अभिव्यक्ति का नहीं अनुभूति का दिन है।''

पूज्य आचार्य भगवन्त श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का पदार्पण, प्रत्याख्यानों के पश्चात् मंगल उद्बोधन- सूरोदए पासति चक्खुना । आँख में सूक्ष्म से सूक्ष्म देखने की शक्ति है, पर घोर अंधकार में आँख क्या काम करेगी, आँख से देखने के लिये प्रकाश का अवलम्बन चाहिये। ठीक इसी तरह यह आत्माज्ञान दर्शन चारित्र से परिपूर्ण है, पर गुरु के ज्ञान का अवलम्बन चाहिये। माता-पिता, बहिन व गुरु का इस जीव पर उपकार है। गलियों में घूमने वाले इस जीव को गुरु का सान्निध्य मिला। आप भी ऐसा सान्निध्य पाकर आगे बढ़ने का लक्ष्य रखेंगे, ऐसी मंगल भावना है। तत्पश्चात् पूज्य आचार्य भगवन्त ने मांगलिक फरमाने की कृपा की। संचालन श्री नेमीचन्दजी कर्णावट ने प्रभावी शैली में किया।

26 अक्टूबर को दोपहर 1.45 से 2.20 तक गुरु चरण वंदन की भावना से जोधपुर से पधारे भाई/बहिनों ने एक साथ एक स्तर से प्रशिक्षित भावों से 108 बार सविधि वंदन का कार्य सम्पादित किया। समवेत स्वर में सविधि वंदन की विधि व मुद्रा वाला आकर्षक दृश्य भव्यातिशयता लिये हुए मनमोहक व श्लाघनीय रहा। जोधपुर, पीपाड़, गोटन, बिलाड़ा, चेन्नई आदि क्षेत्रों से पधारे संघों ने अपनी-अपनी भावना पूज्य गुरुदेव की सेवा में प्रस्तुत की।

27 को बीजापुर से युवा पीढ़ी के भाई/बहिनों ने संघ रूप में गुरु चरणों में पधारकर सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 28 अक्टूबर को नागौर संघ पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ, शेखेकाल फरसने की विनति पावन श्री

चरणों में रखी। इसी दिन अहमदाबाद से भारतीय प्रशासनिक सेवा की अधिकारी युवा बहिन प्रभाजी शाह गुरु भगवन्त की पावन सेवा में पधारीं। अपने दायित्व व कर्त्तव्यों का ईमानदारी के साथ निर्वहन कर सकूँ, इस विषयक पृच्छा का सुन्दर समाधान पाकर वे संतुष्ट हुईं। सेवाभावना का लक्ष्य रखते हुए, दीन-दुःखियों व असहायों के प्रति अनुकम्पा भाव रखने का मूल सूत्र रूपी दिशा निर्देश सुनकर वे प्रमुदित हुईं। मुझे यहाँ आने से जो शांति व दिशा बोध मिला, इसके लिए सदैव उपकृत रहूँगी, ऐसे भावों की अभिव्यक्ति की।

दर्शन-वंदन एवं चातुर्मास व शेखेकाल फरसने की विनति प्रस्तुत करने की भावना से दर्शनार्थियों के आने का क्रम अनवरत बना हुआ है। भोपालगढ़ की अतिथि-सत्कार भावना प्रमोदकारी है।

परमश्रद्धेय पूज्य आचार्य भगवन्त के पावन वर्षावास में ज्ञानाराधना, तपाराधना, धर्माराधना का अच्छा प्रसंग रहा। अब तक तपाराधना की शृंखला में अच्छी संख्या में एकासन, आयम्बिल, नींवी, उपवास, बेले, तेले के अतिरिक्त चोले की 4, पचौले की 1, छह की 1, सात की 3, अठाई 35, नौ की 24, ग्यारह की 11, तेरह की 1, चौदह की 1, पन्द्रह की 5 और 29 के 1 के प्रत्याख्यान हुए। पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से मासक्षपण व उपरान्त की अग्रांकित उग्र तपस्याएँ हुईं- 1. श्री अरुणकुमारजी दशरथमलजी भण्डारी-अहमदाबाद के 75 की, 2. श्रीमती भंवरीदेवीजी धर्मपत्नी श्री शांतिलालजी वेदमुथा-अजमेर के 36 की, 3. श्री मोहनलालजी सुपुत्र श्री मोतीलालजी जैन-सवाईमाधोपुर के 36 की, 4. श्रीमती सुमनदेवी जी धर्मपत्नी श्री रविन्द्रकुमारजी लुंकड़-भोपालगढ़ के 36 की, 5. वीरपिता श्री इन्दरचन्दजी गाँधी-जोधपुर के 31 की, 6. श्री प्रेमचन्दजी सुपुत्र श्री दलीचन्दजी कांकरिया-भोपालगढ़ के 31 की, 7. श्री मुकेशकुमारजी सुपुत्र श्री रामकिशोरजी टेलर-गोटन के 31 की, 8. श्रीमती संगीतादेवी जी धर्मपत्नी श्री रमेशचन्दजी खींवसरा-चेन्नई के 31 की एवं 9. श्रीमती मंजूदेवीजी धर्मपत्नी श्री मनोजकुमारजी बोथरा-भोपालगढ़ के 30 की तपस्या सम्पन्न हुई।

पावन वर्षावास में भाई/बहिनों ने संवर आराधना का लक्ष्य रखा। श्री भंवरलालजी लोढ़ा-चेन्नई व श्री मोतीलालजी कटारिया-पीपाड़ वालों ने समूचे चातुर्मास में धर्माराधन व संवराराधना का गुरुचरणों में रहते हुए लाभ लिया। नाडसर गांव के श्रद्धाशील भाई/बहिनों ने हर पर्व व महापुरुषों की तिथियों पर तपाराधना करने में बराबर हर समय सहकार किया। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री गौतमचन्दजी हुण्डीवाल भी पावन सन्निधि में रहे। गोचरी पानी आदि के समय श्री नवरतनजी लोढ़ा व श्री अमरचन्दजी चोरड़िया यथासमय उद्यत रहे, सेवा का पूरा लाभ लिया। भोपालगढ़ के अध्यक्ष, मंत्रीजी, संरक्षकजी व समस्त पदाधिकारी व कार्यकर्त्ताओं की सेवाएँ महनीय व प्रशंसनीय रहीं। *-जगदीश जैन*

उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का चातुर्मास ज्ञान, ध्यान एवं जिनवाणी-श्रवण से रहा आप्लावित

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 7 का चातुर्मास नये आयामों को स्पर्श करने के साथ पूर्णता को प्राप्त होने जा रहा है। सम्प्रति धर्म-ध्यान एवं तप-त्याग का क्रम बना हुआ है। संतप्रवरों की तपस्या के साथ श्रावक-श्राविकाओं द्वारा भी धर्माराधना निरन्तर चल रही है। श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने दीपावली से 15 दिन पूर्व ही उत्तराध्ययन सूत्र का क्रमशः सार सहित पारायण प्रारम्भ कर दिया था तथा चौविहार तेले के साथ दीपावली के दूसरे दिन उत्तराध्ययन सूत्र का सम्पूर्ण मूल वाचन किया। जोधपुर के श्रावक-श्राविकाओं की धर्मसभा में संवत्सरी के पश्चात् भी निरन्तर उपस्थिति रही। कार्तिक शुक्ला षष्ठी को संघनायक आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 55वें दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में जोधपुर के

विभिन्न उपनगरों के लगभग 700 श्रावक-श्राविकाओं ने भोपालगढ़ उपस्थित होकर गुरुचरण वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। श्रावक-श्राविकाओं ने पौरषी, दो पौरषी, एकाशन,उपवास आदि के साथ तीन एवं तीन से अधिक सामायिक कर गुरुभक्ति का परिचय दिया। दोपहर में पूज्य आचार्यप्रवर के 36 गुणों की महिमा को ध्यान में रखते हुए सामूहिक रूप से 36 वन्दना तिक्खुत्तो के पाठ से की। जोधपुर संघ के अध्यक्ष श्री धनपतचन्द जी सेठिया, मंत्री श्री सुभाषजी हुण्डीवाल के नेतृत्व में जोधपुर संघ की ओर से दीक्षा आयोजन, शेखेकाल विचरण एवं आगामी चातुर्मास हेतु सामूहिक विनति प्रस्तुत की गई। युवक परिषद् के सचिव श्री गजेन्द्रजी चौपड़ा ने विनति भजन प्रस्तुत किया। पूज्य आचार्यप्रवर से मंगलपाठ श्रवण करने के पश्चात् जोधपुर के लिए प्रस्थान किया। महामंदिर चातुर्मास समिति क्षेत्र के कार्यकर्त्ताओं के विशेष सहयोग के साथ संघ के सभी सदस्यों का इस व्यवस्था में सहयोग रहा।-*कनकराज कुम्भट, संयोजक-97848-03000, 98292-92939*

भीलवाड़ा चातुर्मास में ज्ञानाराधना एवं संगोष्ठी का आयोजन

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनिजी म.सा. श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 का भीलवाड़ा के शान्ति भवन में श्रावक-श्राविकाओं का उत्साह, रुचि एवं भावनाओं के साथ चातुर्मास पूर्णता की ओर है। प्रवचन में उपस्थिति एवं स्थानीय तथा बाहर से समागत दर्शनार्थियों द्वारा निरन्तर धर्मलाभ लिया जा रहा है। संतों के प्रवचनों की प्रभावना चारों ओर सुनने को मिल रही है। चातुर्मास में सभी धार्मिक कार्यक्रमों में लोगों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया है। निर्वाण-दिवस पर तेले का तप एवं पौषध अच्छी संख्या में हुए तथा उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन सात दिन पूर्व ही प्रारम्भ कर दिया गया था। लोगों ने बद्धाजंलि होकर रुचि के साथ आगम श्रवण किया। श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने उत्तराध्ययन सूत्र के घर-घर में स्वाध्याय पर बल प्रदान किया, क्योंकि यह आगम हमारा सुरक्षा कवच है, समाधान का साधन है, सुख-शान्ति का हेतु है तथा आराधना-साधना में मार्गदर्शक है। कई श्रावक-श्राविकाओं ने उत्तराध्ययन सूत्र कण्ठस्थ करने एवं स्वाध्याय करने का संकल्प लिया। निर्वाण दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिनों तक लगातार वीरत्थुई का दिन के प्रथम प्रहर एवं अंतिम प्रहर में सामूहिक रूप से 108 बार जाप का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें अनेक भाई/बहिनों ने लाभ लेकर प्रसन्नता का अनुभव किया। 22 अक्टूबर रविवार को एक विद्वत् स्वाध्याय संगोष्ठी 'कर्मसिद्धान्त : एक विश्लेषण' विषय पर आयोजित की गई, जिसमें डॉ. धर्मचन्दजी जैन प्रभृति विद्वानों ने पधारकर सम्बन्धित विषयों पर प्रभावशाली वक्तव्य देकर कर्मसिद्धान्त के मर्म को समझाया, जिसका विवरण अलग से प्रकाशित है। लोगों ने अपने शहर में प्रथम बार इस प्रकार के आयोजन पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि सादगी, स्वाध्याय एवं ज्ञान से भरपूर ऐसे कार्यक्रम होते रहने चाहिए। इस कार्यक्रम को सफल बनाने में श्री कन्हैयालालजी जैन चौधरी एवं श्री दीपकजी बोथरा ने अथक प्रयास किए। स्थानीय संघ का पुरुषार्थ प्रंशसनीय रहा। ज्ञान पंचमी के दिन संतों की प्रेरणा से अनेक बहनों ने हर श्रुत पंचमी को उपवास करने का संकल्प लिया। कार्तिक शुक्ला षष्ठी को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर श्रावक श्राविकाओं ने 5-5 सामायिक कर संघनायक के प्रति श्रद्धा का परिचय दिया। इस अवसर पर श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी एवं श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी सहित तीनों संतों ने आचार्यश्री के गौरवशाली जीवन पर प्रकाश डाला।-*दीपक बोथरा-94614-34024*

पाली चातुर्मास रत्नत्रय एवं गुरु वन्दन से बना अभिनन्दित

सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में पाली चातुर्मास में ज्ञान-दर्शन-चारित्र एवं तप के सभी उपक्रम नियमित रूप से गतिमान है। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के प्रवचन चेटक राजा, कर्मसिद्धान्त, छह काय का स्वरूप, नवपद आराधना, मेरी भावना आदि विषयों पर

सम्पन्न हुए। श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. ने नेमिनाथ चरित्र एवं श्रीपाल चरित्र पर प्रवचन फरमाये। 06 अक्टूबर कार्तिक कृष्णा 1 को आचार्य भगवन्त श्री हमीरमलजी म.सा. की पुण्यतिथि पर उनका गुणगान किया गया। प्रतिदिन दोपहर 12 से 1 बजे तक श्रावकों द्वारा नवकार मंत्र का जाप किया जा रहा है। 1008 वन्दना 176 लोग कर चुके हैं। उत्तराध्ययन सूत्र का 29 वां अध्ययन श्राविकाएँ कण्ठस्थ कर रही हैं। यहाँ 36 सजोड़े आजीवन शीलव्रती बन चुके हैं। एकासन, उपवास, आयम्बिल, नींवी एवं तेले की लड़ी निरन्तर जारी रही। श्री राजेन्द्रजी हींगड़ के विगत तीन माह से एकान्तर तप चल रहा है। श्रीमती पुष्पाजी सिंघवी वर्षीतप कर रही हैं। अनेक श्रावक-श्राविकाओं द्वारा नवपद आराधना की गई। दीपावली पर्व पर अनेक तेले सम्पन्न हुए। 25 अक्टूबर को ज्ञानपंचमी दिवस मनाया गया तथा 26 अक्टूबर को पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 55वें दीक्षा-दिवस पर 26 बेले की आराधना का लक्ष्य रखा गया। *-चैनराज मेहता-मंत्री-94130-79693*

महासती-मण्डलों के चातुर्मासों में धर्माराधन एवं तपाराधन की निरन्तर बढ़ती छटा

जयपुर- साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11 का चातुर्मास गुलाबी नगरी के लाल भवन में धर्माराधना के साथ पूर्णता की ओर बढ़ रहा है। नवपद की ओली की आराधना में अनेक आयंबिल, एकासन, उपवास आदि सम्पन्न हुए। श्रीमती किरणजी कोठारी ने अठाई तप किया। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 55वां दीक्षा-दिवस 26 अक्टूबर को अनेक व्रत-नियमों तथा तप आराधना के साथ मनाया गया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जयपुर के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत ने पूज्य आचार्यप्रवर के संदेश 'व्यसन मुक्त हो सारा देश' को जीवन में आगे बढ़ाने हेतु एक वर्ष में एक व्यक्ति को अवश्य ही निर्व्यसनी बनाने हेतु प्रेरणा की। पूज्य महासतीजी के मुखारविन्द से अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने नियम अंगीकार किया। अनेक श्रावकों ने गुरु-गुणगान कर श्रद्धा समर्पित की। महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. द्वारा पूज्य आचार्यप्रवर में विद्यमान आराधना, आकर्षण एवं आचरण आदि गुणों का विवेचन किया गया तथा उनसे गुण-ग्रहण कर जीवन को उन्नत बनाने की प्रेरणा की गई।

-सुरेशचन्द कोठारी, संयुक्त मंत्री, लाल भवन, जयपुर

नेहरूपार्क, जोधपुर- व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास में धर्म की विशेष प्रभावना निरन्तर गतिमान है। महासती मण्डल के संयम में पुरुषार्थ से सभी श्रावक-श्राविका प्रभावित हैं। पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के 55 वें दीक्षा-दिवस के अवसर पर यहाँ 25 अक्टूबर से 01 नवम्बर 2017 तक अष्टसम्पदा आराधना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें चेन्नई, सवाईमाधोपुर, हिण्डौन, गंगापुर सिटी, जयपुर, पीपाड़, पाली, जोधपुर आदि स्थानों से समागत 6 श्रावकों एवं 50 श्राविकाओं ने साधना की। साधना का प्रारम्भ प्रातःकालीन प्रतिक्रमण, भक्तामर स्तोत्र, गुरु चालीसा एवं प्रार्थना से होता था। इसके पश्चात् 36 बार आचार्यप्रवर को तिक्खुत्तो के पाठ से वन्दन एवं आत्म-चिन्तन स्वरूप ध्यान का कार्यक्रम चला। प्रवचन में अष्ट सम्पदाओं का विवेचन व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. द्वारा किया गया। प्रवचन के पश्चात् 36 लोगस्स का ध्यान एवं 36 नमोत्थुणं दिए गए। प्रतिदिन नमो आयरियाणं के नाम की 20 माला, नित्य 11 सामायिक और स्वाध्याय की साधना के साथ रात्रि संवर किया गया। साधना में चारों कषायों के स्थूल त्याग, वाणी विवेक, मौन के अभ्यास, स्त्री-पुरुष के पारस्परिक संघटे का त्याग, बड़ी स्नान का त्याग आदि के साथ अनेकविध साधनाएँ की गईं। 2.30 से 3.00 बजे तक थोकड़ों का अभ्यास कराया गया, सायंकाल 5.00 बजे कल्याण मंदिर स्तोत्र, हीराष्टक के पश्चात् सायंकालीन प्रतिक्रमण, चौबीसी, तत्त्वचर्चा आदि के साथ संवर-साधना की गई। इस प्रकार अष्टसम्पदा की आराधना-साधना

की दृष्टि से बहुत ही सफल रही। प्रतिदिन बीयासन एवं उससे अधिक की तपस्या सभी साधकों ने अनिवार्य रूप से की। महासती मण्डल के स्वास्थ्य में समाधि बनी हुई है। -*अरुण मेहता, संयोजक, चातुर्मास समिति*

सवाईमाधोपुर- व्याख्यात्री महासती श्री संगीताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 का चातुर्मास सम्पूर्ण क्षेत्र में आकर्षण का केन्द्र रहा। आपके प्रभावी प्रवचनों की प्रशंसा दूर तक पहुँची। आपके सान्निध्य में अनेकविध तप-त्याग हुए हैं। सुश्राविका श्रीमती प्रियदर्शनाजी जैन धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रजी चौधरी ने मासक्षपण तप सम्पन्न किया है।

रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष का प्रवास-कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराना-चेन्नई, कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर एवं राष्ट्रीय मंत्री श्री तरूणजी बोहरा-जोधपुर ने प्रवास कार्यक्रम के दौरान जयपुर, हिण्डौनसिटी, आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर, कोटा, भीलवाड़ा, अजमेर, हरमाड़ा विराजित संत-सतीमण्डल के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।

सर्वप्रथम 07 अक्टूबर 2017 को जयपुर विराजित साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ लेकर महासती मण्डल से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। इसी दिन संघ संरक्षक श्री सुमेरसिंहजी बोथरा-जयपुर, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री विनयचन्दजी डागा, संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री राजेन्द्रजी जैन 'राजा' एवं रत्नसंघ की जयपुर शाखा के अध्यक्ष श्री प्रमोदजी महनोत, उपाध्यक्ष श्री प्रमोदजी लोढ़ा, मंत्री श्री सुरेशजी कोठारी के साथ जयपुर शाखा में संगठन को और प्रगतिशील बनाने हेतु विचार-विमर्श किया गया।

जयपुर से प्रस्थान कर उसी दिन शाम को 7.30 बजे श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हिण्डौनसिटी के पदाधिकारियों के साथ भी आवश्यक बैठक रखी गई, जिसमें हिण्डौनसंघ द्वारा संचालित गतिविधियों के बारे में विचार-विमर्श हुआ। हिण्डौनसंघ के पदाधिकारियों ने अध्यक्ष महोदय को स्थानीय संघ में होने वाली प्रवृत्तियों के बारे में जानकारी प्रदान की तथा क्षेत्रिय सम्मेलन की पूर्व भूमिका के रूप में विचार-विमर्श हुआ। 08 अक्टूबर को पल्लीवाल क्षेत्रीय पारिवारिक सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें रत्नसंघ के सभी पदाधिकारी उपस्थित रहे। कार्यक्रम की विस्तृत रिपोर्ट अलग से दी जा रही है। हिण्डौन में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वंदन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लेने के साथ महासती मण्डल से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया।

हिण्डौन से प्रस्थान कर सायंकाल आवासन मण्डल-सवाईमाधोपुर पहुँचकर अतिथि भवन में नगर परिषद् क्षेत्र सवाईमाधोपुर के श्रावकों की आवश्यक बैठक ली गई, जिसके अन्तर्गत सवाईमाधोपुर की चारों शाखाओं के पदाधिकारियों को आमंत्रित किया गया। बैठक में चारों शाखाओं के पदाधिकारियों ने चातुर्मासकाल में हुई धर्माराधना की रिपोर्ट अध्यक्ष महोदय के समक्ष प्रस्तुत की। पोरवाल क्षेत्र के क्षेत्रिय प्रधान श्री कुशलजी जैन 'गोटेवाला' ने बैठक का सुन्दर संचालन किया। बैठक में उपस्थित सदस्यों में संघ तथा संघनायक के प्रति अटूट श्रद्धाभक्ति का प्रत्यक्ष अनुभव हुआ। 09 अक्टूबर को आवासन-मण्डल सवाईमाधोपुर में प्रातः व्याख्यात्री महासती श्री संगीताजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया। महासतीवृन्द ने 'अनुकम्पा और 18 पाप' पर गहन सुन्दर विवेचन से धर्म परिषदा को लाभान्वित किया। आवासन मण्डल सवाईमाधोपुर द्वारा चातुर्मास में धर्माराधना एवं आगत अतिथियों की सत्कार सेवा अनुकरणीय रही।

सवाईमाधोपुर से प्रस्थान कर कोटा पधारकर परम विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन का लाभ लिया तथा महासती मण्डल से आवश्यक मार्गदर्शन प्राप्त किया। कोटा संघ के श्रावक-

श्राविकाओं के साथ आवश्यक बैठक रखी गई। मंत्री महोदय ने चातुर्मास की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा उपस्थित सभी श्रावकों की भावनाओं को देखते हुए कोटा में संघ की शाखा गठन करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। शीघ्र ही सभी पदाधिकारीगण की नियुक्ति एवं कार्यकारिणी का गठन कर लिया जायेगा।

कोटा से प्रस्थान कर रात्रि को भीलवाड़ा पहुँचे। 10 अक्टूबर को प्रातःकाल शान्ति भवन में चातुर्मासार्थ विराजित मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया तथा प्रवचन पश्चात् सेवा का लाभ लिया। भीलवाडा संघ के अध्यक्ष श्री गुलाबसिंहजी लोढा से विचार-विमर्श हुआ। रत्नसंघ की ओर से भीलवाडा संघ के अध्यक्ष महोदय को चातुर्मास की सफलता के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया गया। भीलवाड़ा संघ की आतिथ्य सेवा अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रही।

भीलवाड़ा से प्रस्थान कर अजमेर पहुंचे। वहां पर व्याख्यात्री महासती श्री सरलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 के दर्शन-वंदन का लाभ लिया तथा सायंकाल स्थानीय संघ के पदाधिकारियों के साथ आवश्यक बैठक रखी गई। अजमेर संघ ने कई बडे कार्यक्रमों का गत वर्ष सफलता पूर्वक आयोजन किया जिसके लिए अजमेर संघ को राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय ने धन्यवाद दिया। महासती मण्डल के श्रमणोचित औषधोपचार में भी अजमेर संघ की सेवाएं अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय हैं। रविवार को सामूहिक सामायिक का संकल्प तथा मध्य राजस्थान के क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन अजमेर शहर में करवाने का अजमेर संघ का निर्णय अति उतम रहा।

11 अक्टूबर को प्रातःकाल अजमेर से प्रस्थान कर हरमाडा पहुंचे। वहां पर विराजित व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 3 के दर्शन-वंदन का लाभ लिया। चातुर्मास के प्रति हरमाडा संघ का उत्साह प्रशंसनीय है। महासती मण्डल की प्रभावी प्रेरणा से जैन-जैनेतर सभी भाई-बहिन धर्म-आराधना का लाभ ले रहे हैं। हरमाडा संघ की आतिथ्य सेवा भी अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय रही।

हरमाड़ा से प्रस्थान कर जयपुर पहुँच कर साध्वी प्रमुखा परम विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।

प्रवास कार्यक्रम में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय की धर्मसहायिका श्रीमती लीलावतीजी सुराणा भी साथ रहे। प्रवास के दौरान सभी स्थानों पर रत्नसंघीय श्रावक-श्राविकाओं से व्यक्तिगत परिचय हुआ। संघ द्वारा संचालित विभिन्न प्रवृत्तियों एवं गतिविधियों के बारे में विचार-विमर्श किया गया। संघ को सुसंगठित करने हेतु सभी स्थानों पर उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से सुझाव प्राप्त किए गए एवं स्थानीय समस्याओं के बारे में चिन्तन किया गया तथा सभी पदाधिकारियों ने संघ की गतिविधियों को आगे बढ़ाने हेतु अध्यक्ष महोदय को अपना आश्वासन प्रदान किया। इस प्रवास कार्यक्रम से संघ सदस्यों में आपसी स्नेह, सौहार्द एवं प्रेम की भावना का संचार हुआ। सभी स्थानों पर अध्यक्ष महोदय सहित सभी पदाधिकारियों का हृदय से स्वागत-सम्मान किया गया तथा सभी संघों के पदाधिकारियों ने समय-समय पर पधार कर सम्हालने हेतु अपनी भावना व्यक्त की। भविष्य में भी इसी प्रकार राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय का मार्गदर्शन एवं सान्निध्य हमें मिलता रहे, ऐसी मंगल कामना की।

-प्रकाश सालेचा, सहमंत्री

जैन परम्परा में ध्यान विषयक राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी सम्पन्न

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के द्वारा प्रतिवर्ष पूज्य आचार्यप्रवर की सन्निधि में विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष सप्तम राष्ट्रीय विद्वत्संगोष्ठी **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** एवं सरसव्याख्यानी **महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.** आदि सन्त-प्रवरों तथा व्याख्यात्री **महासती श्री**

ज्ञानलताजी म.सा. आदि महासतीवृन्द के पावन सान्निध्य में श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, भोपालगढ़, जिला-जोधपुर (राज.) के तत्त्वावधान में 9-10 सितम्बर को भोपालगढ़ में तथा **उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.** आदि संतप्रवरों एवं **व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवरजी म.सा.** आदि महासती मण्डल की पावन सन्निधि में महामन्दिर, जोधपुर 08 सितम्बर 2017 को **'जैन परम्परा में ध्यान'** विषय पर आयोजित हुई।

जोधपुर में आयोजित संगोष्ठी का विवरण (08 सितम्बर 2017)

उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्रद्धेय श्री मानचन्द्रजी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. के सान्निध्य में 08 सितम्बर, 2017 को प्रातः 8.30 बजे प्रवचन-स्थल पर संगोष्ठी का शुभारम्भ **श्रद्धेय श्री लोकचन्द्रजी म.सा.** के प्रवचन से हुआ। मुनिश्री ने 'व्यक्तित्व विकास में ध्यान की भूमिका' विषय पर आध्यात्मिक दृष्टि से प्रेरणादायी विवेचन किया। प्रमुख वक्ता **प्रो. श्रीयांश सिंघई,** अध्यक्ष जैन दर्शन विभाग, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, जयपुर ने शास्त्रीय संदर्भों के आधार पर ध्यान का सारपूर्ण एवं गम्भीर विवेचन किया तथा धर्मध्यान एवं शुक्लध्यान की महत्ता पर प्रकाश डाला। **श्री प्रमोदजी महनोत** (कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल) ने इस सत्र की अध्यक्षता की तथा अपने ध्यान के अनुभवों से सभा को लाभान्वित किया। **तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा.** ने दो प्रकार के ध्यान की चर्चा की- 1. ध्यान करना तथा 2. ध्यान रखना। उन्होंने ध्यान, चिन्तन, अनुप्रेक्षा एवं ध्यान में भेद करते हुए फरमाया कि एक विषय एक विकल्प अथवा निर्विकल्पता 'ध्यान' है। अनेक विषय अनेक विकल्प 'चिन्तन' है तथा एक विषय अनेक विकल्प 'अनुप्रेक्षा' है तथा एक विषय एक विकल्प की पुनरावृत्ति 'भावना' है। ध्यान करने में एकाग्रता एवं निर्विकल्पता की साधना होती है। मुक्ति का द्वार ध्यान-साधना के माध्यम से ही प्राप्त होता है। इस सत्र का संयोजन संगोष्ठी के **संयोजक प्रो. धर्मचन्द जैन** ने करते हुए कहा कि चित्त की एकाग्रता ध्यान है। ध्यान के लिए शरीर की एवं मन की स्थिरता अपेक्षित होती है। जैन परम्परा में प्रचलित प्राचीन ध्यान पद्धति विलुप्त हो गई, इसलिए आज हम ध्यान की नई पद्धतियों की ओर आकर्षित हैं। आर्त्तध्यान एवं रौद्रध्यान त्याज्य हैं, किन्तु हम धर्मध्यान की साधना कर सकते हैं।

द्वितीय सत्र अपराह्न 1.00 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसकी अध्यक्षता **प्रो. श्रीयांश सिंघई, जयपुर** ने की तथा संयोजन मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के **प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन** ने किया। इस सत्र में **श्री धर्मचन्द जैन**-रजिस्ट्रार, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर ने 'जैन परम्परा में धर्मध्यान का स्वरूप एवं उसकी पात्रता' विषय पर, **डॉ. श्वेता जैन,** सह-सम्पादक जिनवाणी, जोधपुर ने 'पातंजल योगसूत्र में समाधि एवं ध्यान' विषय पर **श्रीमती नीतू बोथरा,** निदेशक, बोधि इण्टरनेशनल स्कूल, जोधपुर ने 'बालकों के जीवन में ध्यान की महत्ता' विषय पर तथा **निर्वाणबोधिसत्त्व (महात्माजी),** अलवर ने ध्यान के सम्बन्ध में अपने अनुभवों से लाभान्वित किया।

3.00 बजे प्रारम्भ हुए तृतीय सत्र की **अध्यक्षता प्रो. जितेन्द्रभाई शाह,** निदेशक, एल.डी. इंस्टीट्यूट ऑफ इण्डोलॉजी, अहमदाबाद ने की तथा संयोजन **श्री गौतमचन्द जैन 'डीएसओ' जयपुर** ने किया। इस सत्र में डॉ. शुद्धात्मप्रकाश जैन, मुम्बई ने 'श्री गुरुदासविरचित योगसारसंग्रह में ध्यान का विवेचन' विषय पर, **डॉ. हेमलता जैन ललवाणी** ने 'आचार्य सोमदेवकृत 'योगमार्ग' में ध्यान का निरूपण' विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किया।

भोपालगढ़ में आयोजित संगोष्ठी का विवरण (09-10 सितम्बर 2017)

पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा., संतवृन्द एवं महासतीवृन्द के सान्निध्य में आयोजित संगोष्ठी का चतुर्थ सत्र प्रवचन के समय प्रातः 9.00 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसमें **श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा.** ने फरमाया कि साधना के अनेक मार्ग हैं। इन अनेक मार्गों में एक मार्ग ध्यान है। सब कुछ जान लेना 'ज्ञान' है तथा सबकुछ भूल जाना 'ध्यान' है। मोह व भय के त्याग से जीवन ध्यानमय बन जाता है। **प्रो. जितेन्द्र भाई शाह, अहमदाबाद** ने 'आचार्य हेमचन्द्र कृत योगशास्त्र में ध्यान' विषय पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए आचार्य हेमचन्द्र के योगदान एवं योगशास्त्र में प्राप्त ध्यान चर्चा से श्रोताओं को लाभान्वित किया। **पूज्य आचार्यप्रवर** ने अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि ध्यान साधना करने हेतु पहले श्रद्धा आवश्यक है। श्रद्धा एवं सदाचरण के पश्चात् ही ध्यान साधना सफल होती है। जब तक संसार से विरति न हो तब तक ध्यान साधना विशेष फलदायी नहीं होती।

पंचम सत्र अपराह्न 1.00 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसकी **अध्यक्षता श्री सम्पतराजजी चौधरी** (पूर्व कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर)-दिल्ली ने की। इस सत्र में **डॉ. अशोककुमार सिंह**, बी.एल. इंस्ट्टीयूट ऑफ इण्डोलॉजी, दिल्ली ने 'अर्द्धमागधी आगमों में ध्यान : एक विश्लेषण' विषय पर, **प्रो. जिनेन्द्रकुमार जैन, उदयपुर** ने 'आचार्य शुभचन्द्रकृत ज्ञानार्णव में ध्यान' विषय पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत किए।

षष्ठ सत्र अपराह्न 3.00 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसकी अध्यक्षता **प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी'** पूर्व अध्यक्ष, जैन दर्शन विभाग, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी ने की तथा संयोजन **डॉ. श्वेता जैन** ने किया। इस सत्र में **सुश्री नेहा चोरडिया, जलगांव** ने 'वीतराग ध्यान' विषय पर मार्मिक विवेचन प्रस्तुत किया, **श्रीमती सुशीला बोहरा,** कार्याध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर ने 'जैन साहित्य में आर्त्तध्यान का विवेचन' तथा **श्री सौभाग्यमल जैन, अलीगढ़** ने 'आगम-साहित्य में रौद्रध्यान का विवेचन' विषय पर अपने शोधपूर्ण आलेख प्रस्तुत किए।

10 सितम्बर, 2017 को सप्तम सत्र प्रवचन के समय प्रातः 9.00 बजे प्रारम्भ हुआ, जिसमें **श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा.** ने 'स्वाध्याय एवं ध्यान के पारस्परिक सम्बन्ध' पर महत्त्वपूर्ण प्रकाश डाला। **महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा.** ने 'भक्ति एवं ध्यान' विषय का मार्मिक विवेचन किया। **प्रो. फूलचन्द जैन 'प्रेमी' वाराणसी** ने 'आचार्य कुन्दकुन्द के साहित्य में ध्यान' विषय को स्पष्ट करते हुए शुद्धोपयोग की चर्चा की। **जिनवाणी के सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन** ने 'ध्यान एवं कायोत्सर्ग' विषय पर प्रकाश डालते हुए इन दोनों में रहे भेद को रेखांकित किया तथा कायोत्सर्ग की महत्ता प्रकट करते हुए बताया कि देह के प्रति आसक्ति का त्याग कायोत्सर्ग है। ध्यानपूर्वक कायोत्सर्ग किया जाता है एवं कायोत्सर्ग से महती कर्म निर्जरा होती है। **पूज्य आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.** ने इस दिन भी अपने उद्‌बोधन में फरमाया कि ध्यान का फल कायोत्सर्ग है। ध्यान किये जाने की अपेक्षा ध्यान रखना पूरे दिन भर संभव है। ध्यान साधना करके शरीर को स्वस्थ रखने आदि का लक्ष्य सीमित लक्ष्य है। ध्यान का मूल लक्ष्य मोक्ष है। इसके द्वारा दिन भर की प्रवृत्तियों में जो सजगता रहती है, उसे ही ध्यान रखना कहा जाता है।

अष्टम सत्र 1.00 बजे प्रारम्भ हुआ जिसकी अध्यक्षता **प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर** ने की तथा संयोजन **श्री जम्बूकुमार जैन, जयपुर** ने किया। इस सत्र में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर के **प्रोफेसर**

सत्यप्रकाश दुबे ने 'भगवद् गीता में ध्यान', **प्रो. प्रभावती चौधरी, जोधपुर** ने 'प्रेक्षाध्यान' तथा **डॉ. पवनकुमार जैन, जोधपुर** ने 'स्थानांग सूत्र एवं व्याख्याप्रज्ञप्ति में ध्यान का स्वरूप' विषय पर शोधालेख प्रस्तुत किए।

सम्पूर्ति सत्र की अध्यक्षता **श्रीमती सुशीलाजी बोहरा, जोधपुर** ने की तथा संयोजन **श्री प्रकाशजी सालेचा, जोधपुर** ने किया। संगोष्ठी का प्रतिवेदन संगोष्ठी संयोजक प्रो. धर्मचन्द जैन, जोधपुर ने किया। इस सत्र में **श्री सम्पतराज चौधरी, दिल्ली एवं श्री तरुण बोहरा, जोधपुर** ने अपने अनुभव सुनाये। धन्यवाद ज्ञापन सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री **श्री विनयचन्दजी डागा** एवं भोपालगढ़ संघ के मंत्री **श्री पुनवानचन्दजी ओस्तवाल** द्वारा किया गया।

जोधपुर एवं भोपालगढ़ दोनों स्थानों पर अधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने विद्वानों के आवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था द्वारा आतिथ्य सत्कार किया। आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद् के सदस्यों ने इस संगोष्ठी में दोनों स्थानों पर उपस्थित रहकर सक्रिय सहभागिता निभाई।

भीलवाड़ा में 'कर्म-सिद्धान्त : एक विश्लेषण' विषय पर विद्वत्संगोष्ठी का सफल आयोजन

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में 22 अक्टूबर 2017 को एक दिवसीय विद्वत् स्वाध्याय संगोष्ठी 'कर्म-सिद्धान्त : एक विश्लेषण' विषय पर आयोजित की गई। इस गोष्ठी के लिए लोगों में अत्यन्त उत्साह, जिज्ञासा और आकर्षण था। प्रवचन सभा में जनसमूह की विशाल उपस्थिति कुछ पाने की उत्सुकता का परिचय दे रही थी। **प्रथम सत्र** का शुभारम्भ **श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा.** के प्रवचन से हुआ। उन्होंने 'कर्म क्या, क्यों व कैसे?' विषय पर फरमाया कि हमें कर्म को जानना है और धर्म में जीना है। कर्म-सिद्धान्त के अनेक बिन्दुओं को छूते हुए मुनिश्री का प्रवचन 9.30 बजे तक चला। विद्वत्संगोष्ठी का संचालन करते हुए **श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना**, जोधपुर ने अपनी चिर-परिचित शैली में रत्नसंघ के गौरवशाली इतिहास का संक्षिप्त परिचय कराते हुए आचार्य हस्ती व आचार्य हीरा के महनीय अवदानों का संगान किया। उन्होंने मुख्य अतिथि- मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष, **न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया**, अध्यक्ष-**श्री नवरतनजी डागा**, विशेष अतिथि- **श्री विमलचन्दजी डागा** एवं **श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना** का परिचय कराया। प्राचार्य, **विद्वान् श्री प्रकाशचन्द जी जैन, जयपुर** ने 'मोहकर्म : कारण व निवारण' विषय पर अपने उद्बोधन में आत्मा के वैभाविक अवस्था के मुख्य कारण व उनके निवारण के उपायों की विस्तृत चर्चा की। **मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा.** ने 'देखिए जरा, कैसे हो कर्म निर्जरा'' विषय के अन्तर्गत स्वदेशी लाओ-विदेशी हटाओ पर निर्जरा के विविध उपायों पर प्रभावी शब्दों में विवेचन किया।

द्वितीय सत्र के प्रारम्भ में **श्रद्धेय श्री अविनाशमुनिजी म.सा.** ने 'आगमों में कर्म का स्वरूप' विषय पर प्रकाश डालते हुए आगम में कहाँ-कहाँ कर्म को किस रूप में व्याख्यायित किया जाए, इसकी सुन्दर विवेचना की। **श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर** ने 'दिगम्बर व श्वेताम्बर साहित्य में कर्म' विषय पर अति सुन्दर, प्रभावी वक्तव्य से लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **पूर्व अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना** ने 'कथा में कर्म की व्यथा' इस विषय पर अनेक घटना प्रसंगों के उद्धरण देते हुए सुन्दर चर्चा की। जिनवाणी के **मानद् सम्पादक एवं विद्वत् परिषद् के राष्ट्रीय संयोजक डॉ. धर्मचन्दजी जैन-जोधपुर** ने 'भारतीय दर्शनों में कर्म' पर विशद विवेचना करते हुए कई बिन्दुओं पर प्रश्नोत्तर शैली के माध्यम से प्रभावी चर्चा की। उन्होंने कहा कि किसी भी भारतीय दर्शन में कर्म-सिद्धान्त का स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं है, जैन दर्शन में कर्म सिद्धान्त के अनेक स्वतन्त्र ग्रन्थ हैं।

अन्तिम कड़ी में **रजिस्ट्रार श्री धर्मचन्दजी जैन** ने 'स्वाध्याय से कर्म-निर्जरा' विषय पर संक्षिप्त किन्तु प्रभावी व्याख्या की। मुख्य-अतिथि आदरणीय श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया जो अब तक दोनों सत्रों में जिज्ञासा, रुचि के साथ प्रत्येक विद्वान् के विचारों को एकाग्रता से बैठे धैर्य के साथ सुन रहे थे, उन्हें मुख्यवक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया। उन्होंने अपने कई अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि मैं कई बड़े-बड़े समारोहों, प्रसंगों में गया लेकिन ऐसी संगोष्ठी में पहली बार भाग लेने का मुझे मौका मिला। उन्होंने वर्तमान पीढ़ी पर व्यंग्य करते हुए कहा कि हम इतना पैकेज प्राप्त कर रहे हैं, इस बात को लेकर जो गर्वित होते हैं वे अपनी गुलामी को अपनी उपलब्धि समझते हैं। राष्ट्रीय मंत्री श्री तरुणजी बोहरा ने सत्र का सुन्दर संचालन किया।

अंत में स्थानीय मंत्रीजी ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। पहली बार आयोजित इस कार्यक्रम से समूचा समाज आनन्दित रहा। अंत में श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने गुरु हस्ती, गुरु हीरा के इस स्वाध्याय मिशन से जुड़कर ज्ञान अभिवर्द्धित करने की प्रेरणा देते हुए मंगलपाठ सुनाया।

हिण्डौनसिटी में पल्लीवाल क्षेत्र के श्रावक-श्राविकाओं का पारिवारिक क्षेत्रिय सम्मलेन सानन्द सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हिण्डौनसिटी के संयुक्त तत्त्वावधान में पल्लीवाल क्षेत्रीय रत्नसंघ का पारिवारिक सम्मेलन 08 अक्टूबर 2017 को लक्ष्मी पैलेस, मण्डावरा रोड़, हिण्डौनसिटी में आयोजित हुआ। क्षेत्रीय सम्मेलन में पल्लीवाल क्षेत्र के खेरली, नदबई, भरतपुर, अलवर, पहरसर, मण्डावर, बौण, करौली, रसीदपुर, बाराभडकोल, लक्ष्मणगढ़, हरसाना, मौजपुर, खेड़ला, खोह, गढी सवाईराम, कंजोली, बरगमा, गंगापुरसिटी, नसिया गंगापुर, समुची, बड़ौदाकान एवं हिण्डौन सहित पल्लीवाल क्षेत्र की सभी शाखाओं एवं सम्पर्क सूत्रों से श्रावक-श्राविकागण पधारे। क्षेत्रीय सम्मेलन में पधारने वाले श्रावक-श्राविकाओं ने आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्ती व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के दर्शन-वन्दन एवं प्रवचन-श्रवण का लाभ लिया। प्रवचन सभा में व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा.,महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. एवं महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा. ने संघ की महिमा, संघनिष्ठा एवं गुरु भक्ति पर अपना सारगर्भित प्रवचन फरमाया। श्रावक-श्राविकाओं को संघ के प्रति समर्पण की बात रखते हुए संघ की गतिविधियों से जुड़ने की विशेष एवं प्रभावी प्रेरणा की। प्रवचन के पश्चात् ठीक 11.00 बजे लक्ष्मी पैलेस में क्षेत्रीय सम्मेलन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय श्री पी.शिखरमलजी सुराणा, राष्ट्रीय अध्यक्ष-अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता स्थानीय संघ अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन-हिण्डौन ने की। रत्नसंघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा-जयपुर एवं कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा-जोधपुर, अ.भा.श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की अध्यक्षा श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा-जयपुर, महासचिव श्रीमती बीनाजी मेहता-जोधपुर, अ.भा.श्री जैन रत्न युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली, महासचिव श्री मनीषजी लोढ़ा-जोधपुर, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ जोधपुर के संयोजक श्री ओमप्रकाश जी बांठिया-बालोतरा, अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के सह-सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा-जोधपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी-जोधपुर, स्थानीय संघ हिण्डौनसिटी के अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन एवं मंत्री वीरपिता श्री निर्मलकुमारजी जैन ने मंच को सुशोभित किया। सम्मेलन में श्रीमती लीलावतीजी सुराना धर्मसहायिका श्री पी.शिखरमलजी सुराना-चेन्नई एवं संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्री तरुणजी बोहरा भी उपस्थित थे।

सर्वप्रथम श्री जैन रत्न बालिका मण्डल की बालिकाओं ने मंगलाचरण प्रस्तुत किया एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल की श्राविकाओं ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ **हिण्डौन के अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन** ने सम्मेलन में पधारे हुए अतिथियों, पदाधिकारियों, वीर परिवारों तथा सभी श्रावक-श्राविकाओं का भावभीना स्वागत किया। पल्लीवाल क्षेत्र के **क्षेत्रीय प्रधान श्री क्रांतिचन्दजी मेहता** ने क्षेत्रीय सम्मेलन की रूपरेखा प्रस्तुत करते हुए सभी महानुभावों का स्वागत किया। संघ के **कार्याध्यक्ष श्री आनन्दजी चौपड़ा** ने क्षेत्रीय सम्मेलन में हिण्डौनशहर की भूमिका के लिए धन्यवाद देते हुए क्षेत्रीय सम्मेलन की आवश्यकता पर बल दिया। **कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा** ने गुरुदेव एवं महासती मण्डल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए संघ की गतिविधियों से सभी को जुड़ने के लिए प्रभावी प्रेरणा की। श्राविका मण्डल की राष्ट्रीय **अध्यक्ष श्रीमती पूर्णिमाजी लोढ़ा** ने श्राविका मण्डल द्वारा संचालित गतिविधियों की जानकारी उपस्थित जनसमुदाय को दी। तत्पश्चात् पल्लीवाल क्षेत्र के वीर परिवारों का सम्मान कार्यक्रम रखा गया, जिसमें पूरे पल्लीवाल क्षेत्र से 24 वीर परिवार उपस्थित हुए। सम्मेलन में उपस्थित वीर परिवारों में से वीरपिताओं/वीरभ्राताओं का माला, शाल द्वारा तथा वीरमाताओं/वीरभाभियों का माला एवं चूंदड़ी से बहुमान किया गया। युवक परिषद् के राष्ट्रीय **अध्यक्ष श्री राजकुमारजी गोलेच्छा-पाली** ने युवक संघ की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हुए युवक परिषद् के राष्ट्रीय कार्यक्रमों से युवा साथियों को जुड़ने हेतु प्रभावी प्रेरणा की एवं सूचना-संग्रहण कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी भी संघ सदस्यों को प्रदान की। स्वाध्याय संघ जोधपुर के **संयोजक श्री ओमप्रकाशजी बांठिया** ने स्वाध्याय संघ की गतिविधियों के बारे में प्रकाश डालते हुए **गुरु हस्ती-हीरा** द्वारा प्रेरित सामायिक-स्वाध्याय प्रवृत्ति से जुड़ने हेतु उपस्थित सदस्यों को आह्वान किया कि पल्लीवाल क्षेत्र से अधिकाधिक स्वाध्यायी पर्युषण सेवा दें तथा नये क्षेत्रों की खोज में सहयोग प्रदान करने हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रभावी प्रेरणा की। 2017 में पर्युषण सेवा देने वाले **पल्लीवाल क्षेत्र के श्री कृष्णमोहनजी जैन-हिण्डौनसिटी एवं श्री अजयकुमारजी जैन-हिण्डौनसिटी** को सम्मान स्वरूप चांदी का सिक्का राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमलजी सुराणा एवं स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री ओमप्रकाशजी बांठिया के कर-कमलों द्वारा प्रदान किया गया। शेष सभी स्वाध्यायी अपना पर्युषण पुरस्कार काउण्टर से प्राप्त करने की सूचना प्रदान की। अ.भा.श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के **सह-सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा** ने शिक्षण बोर्ड की गतिविधियों की जानकारी प्रदान करते हुए थोकड़ों की आगामी परीक्षा 07 जनवरी-2018 को आयोजित होने एवं उपस्थित संघ सदस्यों को परीक्षा कार्यक्रम से जुड़ने हेतु प्रभावी प्रेरणा की। अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के **सचिव श्री राजेशजी भण्डारी** ने संस्कार केन्द्र द्वारा संचालित गतिविधियों एवं संस्कार केन्द्रों की विस्तृत जानकारी प्रदान करते हुए पधारे हुए परीक्षार्थियों को प्रतिक्रमण सम्बन्धी परीक्षाओं के प्रशस्ति-पत्र काउण्टर से प्राप्त करने एवं पुरस्कार राशि परीक्षार्थी के खाते में सीधे जमा कराने की सूचना दी। क्षेत्रिय सम्मेलन के अवसर पर पल्लीवाल क्षेत्र में संचालित संस्कार केन्द्रों की 19 शिक्षिकाओं का राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी. शिखरमलजी सुराणा, कार्याध्यक्ष श्रीमती सुशीलाजी बोहरा एवं संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी द्वारा माला, शाल एवं चूंदड़ी से बहुमान किया गया।

सम्मेलन के अवसर पर पल्लीवाल क्षेत्र के प्रशासनिक क्षेत्र में कार्यरत विशिष्ट प्रतिभाशाली महानुभावों को भी सम्मानित किया गया, जिसमें **सुश्री गार्गी जी जैन-अलवर** (आई.ए.एस.), **श्री अंकित जी जैन-परबणी** (आर.पी.एस.) एवं **श्री अनिलकुमारजी जैन**-(जिला सूचना अधिकारी, करौली) का मंचासीन अतिथियों द्वारा माला एवं शाल से बहुमान किया गया। सम्मानित प्रशासनिक अधिकारियों ने हिण्डौन संघ के प्रति

कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए प्रशासनिक क्षेत्र में किस प्रकार जैन समाज के बालक-बालिका आगे बढ़ सकते हैं, इस बात की प्रभावी प्रेरणा की। सभी प्रतिभाओं ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं रत्नसंघ हिण्डौन के प्रति धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया।

व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा के हिण्डौन चातुर्मास में श्रमणोचित औषधोपचार में सेवा देने वाले सेवाभावी चिकित्सकों के रूप में **डॉ. जिनेशजी जैन-हिण्डौनसिटी** एवं **सेवाभावी श्रीमती मुन्नीदेवीजी अग्रवाल-हिण्डौनसिटी** का माला एवं शाल द्वारा बहुमान किया गया।

पधारे हुए श्रावक-श्राविकाओं के लिए एक सुझाव-सत्र का आयोजन किया गया, जिसके तहत संघ की गतिविधियों के सम्बन्ध में श्रावक-श्राविकाओं से सुझाव आमंत्रित किए गए, जिसके अन्तर्गत युवक परिषद् के क्षेत्रीय प्रधान श्री मनीषजी जैन-खेरली एवं नदबई संघ के मंत्री श्री नरेशकुमारजी जैन-नदबई ने महत्त्वपूर्ण सुझाव प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री पी.शिखरमलजी सुराणा ने अपने वक्तव्य में कहा कि मुझे इस बात की परम प्रसन्नता है कि पूरे पल्लीवाल क्षेत्र से सभी शाखाओं एवं सम्पर्क सूत्रों से श्रावक-श्राविकागण पधारे हैं, यह आप लोगों की संघ निष्ठा एवं गुरुभक्ति को प्रदर्शित करता है। इस वर्ष रत्नसंघ के 21 चातुर्मास चल रहे हैं, जिसमें लगभग 12 चातुर्मासों में पल्लीवाल क्षेत्र से दीक्षित संत-सती जिनशासन की महती प्रभावना कर रहे हैं। 24 वीर परिवारों का सम्मेलन में उपस्थित होना प्रमोदकारी है। क्षेत्रीय सम्मेलन के प्रति आप सब के मन में अपार उत्साह है। यही कारण है कि स्थान छोटा पड़ रहा है। आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर, मुनिमण्डल एवं महासती-मण्डल के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए रत्नसंघ द्वारा संचालित सभी गतिविधियों से जुड़ने हेतु उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं को प्रभावी प्रेरणा की। हिण्डौन संघ के श्रावक-श्राविकाओं का मुझ पर बड़ा स्नेह रहा है। इसी भूमि पर 04 अक्टूबर 2015 को आयोजित संघ की साधारण सभा में मुझे संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष (प्रथम सेवक) का दायित्व सौंपा गया था। आप सभी श्रावक-श्राविकाओं के अपार स्नेह एवं सकारात्मक सहयोग से ही इस गुरुत्तर दायित्व को निभाने में समर्थ हो पाऊँगा। आप सभी महानुभावों का स्नेह, आशीर्वाद एवं मंगल कामना बनी रहे। आप हम सब मिलकर संघ को सक्षम, स्वावलम्बी एवं मजबूत बनाने में अपना अर्घ्य अर्पण करें, ऐसा विनम्र निवेदन है। क्षेत्रिय प्रधान, वीर भ्राता श्री क्रांतिचन्दजी मेहता, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-हिण्डौनसिटी, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल-हिण्डौनसिटी, श्री जैन रत्न युवक परिषद्-हिण्डौनसिटी, श्री जैनरत्न बालिका मण्डल-हिण्डौनसिटी सहित सभी श्रावक-श्राविकाओं का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करता हूँ। हिण्डौन संघ के सभी पदाधिकारियों, कार्यकर्त्ताओं एवं संघ सदस्यों ने दिन-रात मेहनत कर इस क्षेत्रीय सम्मेलन को सफल करने में अभूतपूर्व योगदान किया है, जिसके लिए मैं संघ की ओर से, मेरी ओर से आप सभी का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करता हूँ। भविष्य में भी इस प्रकार के सम्मेलन आयोजित होते रहें, ऐसी मंगल कामना करता हूँ।

हिण्डौनसंघ के मंत्री एवं **वीरपिता श्री निर्मलकुमारजी जैन** ने हिण्डौनसंघ की ओर से क्षेत्रिय सम्मेलन में पधारे हुए मुख्य अतिथि, पदाधिकारियों, शाखाध्यक्षों एवं संघ सदस्यों का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए हिण्डौन संघ के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम के अंत में बाहर गांव से पधारे हुए सभी महानुभावों का तथा हिण्डौन सकल समाज के सदस्यों के लिए भोजन की व्यवस्था की सूचना प्रसारित की। उपस्थित सभी सदस्यों ने हिण्डौनसंघ द्वारा की गई आवास-निवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था के लिए भूरि-भूरि प्रशंसा की।

कार्यक्रम का सफल संचालन अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के **सहमंत्री श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर** ने किया। -*पूरणराज अबानी, महामंत्री*

हिण्डौनसिटी में पल्लीवाल क्षेत्र की बालिकाओं का धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हिण्डौनसिटी द्वारा जिनशासन गौरव परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में 29 सितम्बर से 02 अक्टूबर 2017 तक पल्लीवाल क्षेत्र की बालिकाओं का धार्मिक एवं नैतिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया। इस शिविर में हिण्डौन सहित पूरे पल्लीवाल क्षेत्र से लगभग 60 बालिकाओं ने भाग लिया। प्रातःकाल सूर्योदय से लेकर रात्रि 8.30 बजे तक निरन्तर अध्ययन-अध्यापन का कार्यक्रम चला, जिसके अन्तर्गत प्रातःकाल प्रार्थना के बाद महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. द्वारा ध्यान का सुन्दर कार्यक्रम करवाया गया। प्रवचन के दौरान भी चारों दिन महासती मण्डल द्वारा सभी बालिकाओं को ज्ञान एवं संस्कारों की प्रभावी प्रेरणा की गई। व्याख्यान के पश्चात् कक्षाओं के माध्यम से पूरे दिन महासती मण्डल एवं अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा अध्ययन-अध्यापन करवाया गया, जिसके अन्तर्गत व्यक्तित्व विकास, जैन प्रश्नोत्तरी, सामायिक-प्रतिक्रमण, 25 बोल, 6 आरों का वर्णन, जैन धर्म और विज्ञान की जानकारी के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं के माध्यम से ज्ञानार्जन करवाया गया। शिविर के दौरान सांयकालीन कक्षा में 'सच्चा सुख क्या है?' तथा 'कॉस्मेटिक चीजों के प्रयोग से क्या हानियाँ हो सकती है' नामक मूवी दिखाई गई। प्रशिक्षक के रूप में श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर, श्री त्रिलोकचन्दजी जैन-जयपुर, श्रीमती रेखाजी सांखला-जयपुर, सुश्री जाह्नवी जैन-जयपुर एवं युवासाथी श्री सौरभजी जैन-हिण्डौनसिटी की सेवाएँ प्राप्त हुईं। शिविर के दौरान वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री विमलचन्द जी डागा-जयपुर, अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के पूर्व अध्यक्ष श्री जितेन्द्रजी डागा-जयपुर का उद्बोधन एवं मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान, जयपुर के अधिष्ठाता श्री दिलीप जी जैन ने भी 'हमें जैन होने पर गर्व क्यों हैं' और 'हम अच्छे कैसे बनें?' नामक विषय का प्रतिपादन किया।

शिविरकाल में मोटीवेशनल स्पीकर एवं ट्रेनर श्रीमती खुशबुजी कर्णावट-जयपुर ने हिण्डौन पधारकर शिविर की बालिकाओं को जीवन जीने की कला के साथ व्यक्तित्व विकास एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए जीवन्त प्रेरणा की। इनके उद्बोधन से बालिकाओं में एक नई ऊर्जा का संचार हुआ। आजकल तनाव के माहौल में रहकर हम कैसे प्रसन्न रह सकते हैं, इस बात को अनेक बिन्दुओं के माध्यम से बताया।

शिविर के अंतिम दिन 2 अक्टूबर 2017 को 11 से 3 बजे तक बालिकाओं के लिए श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हिण्डौन द्वारा बाबा पैलेस, मण्डावरा रोड में महावीर शिक्षण शिविर का आयोजन रखा गया, जिसमें समाज सेवी, प्रखरवक्ता प्रख्यात कवि श्री युगराजजी जैन-मुम्बई को आमंत्रित किया गया। प्रवचन के पश्चात् 11.00 बजे कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ, जिसमें शिविर की बालिकाओं के साथ श्री बालिका सीनियर स्कूल हिण्डौनसिटी, नई मण्डी कन्या विद्यालय एवं हायर सैकण्डरी स्कूल-हिण्डौनसिटी की लगभग 350 बालिकाओं ने भाग लिया। भाई युगराजजी जैन ने 'बहना तुमसे कुछ कहना है' कार्यक्रम के अन्तर्गत उपस्थित बालिकाओं को संस्कारित जीवन जीने की प्रेरणा करते हुए बालिका सशक्तीकरण एवं संस्कारों को सुरक्षित करने पर बल दिया। अनेक उदाहरणों के साथ उन्होंने अपना प्रभावी वक्तव्य देते हुए अपने जीवन को संस्कारित करने तथा दोनों कुलों की शोभा बढ़ाने हेतु प्रेरणा की। साथ ही कहा बहना अपने जीवन में ऐसा कोई कार्य मत करना, जिससे आपके

माता-पिता एवं परिवार को समाज में नीचा देखना पड़े। उपस्थित सभी बालिकाओं ने प्रख्यात कवि श्री युगराजजी जैन की बातों को हृदयंगम किया तथा यह संकल्प लिया कि हम जीवन में कभी भी घर से भागकर अथवा जैनेतर लड़के के साथ विवाह नहीं करेंगे। इस कार्यक्रम में बालिकाओं के अतिरिक्त हिण्डौनसंघ के सभी पदाधिकारियों सहित श्रावक संघ के सभी श्रावक एवं श्राविकाएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में श्री प्रकाशजी सालेचा ने श्री युगराजजी जैन का परिचय प्रस्तुत किया तथा हिण्डौनसंघ की ओर से संघ मंत्री श्री निर्मलजी जैन ने माला तथा अध्यक्ष श्री धर्मचन्दजी जैन ने शाल द्वारा युगराजजी जैन का भावभीना स्वागत किया। कार्यक्रम के अन्त में संघमंत्री श्री निर्मलजी जैन ने श्री युगराज जी जैन सहित उपस्थित सभी महानुभावों का धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर ने किया। इसी दिन दोपहर 3.00 बजे शिविर का समापन समारोह कार्यक्रम रखा गया, जिसमें शिविर की बालिकाओं ने अपने अनुभव एवं सुझाव प्रस्तुत किए। शिविर में भाग लेने वाली बालिकाओं को हिण्डौन संघ की ओर से पुरस्कार स्वरूप स्कूल बैग तथा प्रशिक्षकों को भी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। बाहर गांव से पधारने वाली बालिकाओं को हिण्डौनसंघ द्वारा यात्रा व्यय भी प्रदान किया गया। संघमंत्री श्री निर्मलकुमारजी जैन ने आभार एवं धन्यवाद ज्ञापित किया। हिण्डौन संघ द्वारा शिविर में पधारने वाली सभी शिविरार्थी बालिकाओं एवं प्रशिक्षकों के लिए आवास-निवास एवं भोजन की सुन्दर व्यवस्था की गई। शिविर का सफल संचालन श्रीमती रेखा जी सांखला ने किया तथा शिविर समापन कार्यक्रम का सफल संचालन श्री प्रकाशजी सालेचा-जोधपुर ने किया। *-निर्मलकुमार जैन, मंत्री*

दिसम्बर माह में स्वाध्याय शिक्षक-निर्माण शिविर जोधपुर में

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा धार्मिक शिक्षक तैयार करने हेतु परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर श्री 1008 हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में तथा अन्यत्र अब तक पाँच शिक्षक प्रशिक्षण शिविर (हिण्डौन, जयपुर, जोधपुर, जलगाँव एवं निमाज) में आयोजित किये जा चुके हैं। आगामी शिक्षक प्रशिक्षण शिविर दिनांक 29 दिसम्बर से 01 जनवरी 2018 तक जोधपुर में आयोजित किया जा रहा है। इस शिविर में वही स्वाध्यायी शिक्षक भाग ले सकेंगे जिन्होंने अब तक आयोजित शिविर में से कम से कम 3 शिविरों में भाग लिया हो। शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायी शिक्षक अपनी स्वीकृति 30 नवम्बर 2017 तक स्वाध्याय संघ कार्यालय को अवश्य दे देवें एवं शिविर में भाग लेने वाले स्वाध्यायी शिक्षकों को 28 दिसम्बर 2017 को सायंकाल तक शिविर स्थल पर पहुँचना अनिवार्य है। इसके पश्चात् आने वाले स्वाध्यायी शिक्षक को शिविर में प्रवेश देना सम्भव नहीं होगा। शिविर में पधारने हेतु आप अपनी स्वीकृति निम्न को दे सकते हैं:- 1. श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ कार्यालय (प्रातः 10 से सायं 05), फोन- 0291-2624891, 9414126279, 2. श्री धर्मचंदजी जैन-शिविर संयोजक, जोधपुर मो- 9351589694, 3. श्री प्रकाशजी जैन, शिक्षा समिति, जयपुर, मो- 9370020005, 4. श्री गोपालराजजी अबानी-सचिव, जोधपुर मो- 8003615215, 5. श्री धीरजजी डोसी- कार्यालय प्रभारी, जोधपुर मो- 9462543360 *-ओमप्रकाशजी बांठिया, संयोजक*

'बनें आगम अध्येता' के प्रतियोगियों को पुरस्कार

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा 'बनें आगम अध्येता' योजना के अन्तर्गत उत्तराध्ययनसूत्र भाग-1 से 3 (संयुक्त) खुली पुस्तक परीक्षाओं में भाग लेने वाले प्रतिभागियों के पुरस्कार भेजे गये हैं। आवश्यकसूत्र खुली पुस्तक का परिणाम भी प्रतिभागियों को शीघ्र ही भिजवा रहे हैं। विजेता प्रतिभागियों से निवेदन है कि वे अपने बैंक खाते सम्बन्धी जानकारी शीघ्र भिजवायें। प्रतियोगिता प्रतिभागी अपना नाम, स्थान का

उल्लेख करने के साथ निम्न जानकारी व्हाट्स-अप नं. 94131-32362 पर भिजवाने का श्रम करावें :- Name of Bank, Name of Account holder, Bank Account Number, Bank Place, Bake IFS code, Micr Code, Mobile No.

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा निर्धारित ड्रेस लाल चून्दड़ी की साड़ी की राशि में जी.एस.टी. की वजह से वृद्धि की गई है। अब साड़ी की कीमत 475 रुपये रखी गई है। श्राविका मण्डल की ड्रेस कोड भविष्य में यही रहेगी। जिस किसी भी श्राविका को आवश्यकता हो वह 97727-93625 पर सम्पर्क कर मंगवा सकती हैं। *-बीना मेहता-महासचिव*

जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों) की आगामी परीक्षा 07 जनवरी 2018 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की जैनागम स्तोक वारिधि (थोकड़ों की परीक्षा) की कक्षा 1 से 9 तक की आगामी परीक्षा दिनांक 07 जनवरी 2018, रविवार को दोपहर 1:00 बजे से आयोजित की जाएगी।

1. परीक्षा, ज्ञान वृद्धि का प्रमुख साधन है। क्रमबद्ध एवं सही ज्ञान ही व्यक्ति को हित-अहित की जानकारी कराता है। अत: ज्ञान बढ़ाने एवं सुसंस्कार पाने हेतु आप स्वयं भी परीक्षा दें तथा अन्य भाई-बहनों को भी परीक्षा में भाग लेने की प्रभावी प्रेरणा कर धर्म दलाली का लाभ प्राप्त करें।
2. कम से कम 10 परीक्षार्थी होने पर परीक्षा केन्द्र नया प्रारंभ किया जा सकता है।
3. परीक्षा से सम्बन्धित पुस्तकें शिक्षण बोर्ड कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।
4. सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार व मेरिट में आने वालों को विशेष पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।
5. परीक्षा में भाग लेने हेतु आवेदन-पत्र भरकर जमा कराने की अंतिम दिनांक 07 दिसम्बर-2017 है। नियत समय में आवेदन-पत्र जमा कराना अनिवार्य है।
6. कक्षा 1 से 9 तक की परीक्षा में निम्नांकित थोकड़े रखे गये हैं-

प्रथम कक्षा-	25 बोल, 67 बोल, सुपच्चक्खाण-दुपच्चक्खाण, संज्ञा, सवणे नाणे
द्वितीय कक्षा-	कर्म प्रकृति, गति-आगति, चौदह गुणस्थान का बासठिया, रूपी-अरूपी, उपयोग
तृतीय कक्षा-	नवतत्त्व, जयन्तीबाई, भवभ्रमण, श्वासोच्छ्वास, श्रमण निर्ग्रन्थों के सुख की तुल्यता
चतुर्थ कक्षा-	समिति-गुप्ति, ज्ञान लब्धि, 32 बोल का बासठिया, पाँच देव, छोटी गतागत
पाँचवीं कक्षा-	लघुदण्डक, गुणस्थान, द्रव्येन्द्रिय, आठ आत्मा, असंयत भव्य द्रव्य देव
छठी कक्षा-	अबाधाकाल, 98 बोल का बासठिया, विरह, दिशाणुवाई, छ: काय
सातवीं कक्षा-	47 बोल की बन्धी, जीव पज्जवा, अजीव पज्जवा, 256 राशि, 50 बोल की बन्धी
आठवीं कक्षा-	जीवधड़ा, 102 बोल का बासठिया, आहार पद, आत्मारंभी, छ: भाव
नवमीं कक्षा-	सर्वबन्ध-देशबन्ध, संजया, नियण्ठा, 800 बोल की बन्धी, पदवी

परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक चोरडिया, संयोजक-94141-29162, नवरतन गिड़िया, सचिव-94141-00759, धर्मचन्द जैन, रजिस्ट्रार-93515-89694, शिक्षण बोर्ड कार्यालय,

जोधपुर-0291-2630490 फैक्स-2636763, Website : jainratnaboard.com, E-mail: shikshanboard jodhpur@gmail.com

-नवरतन गिड़िया, सचिव

संस्कार केन्द्र द्वारा कर्नाटक क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र, जोधपुर द्वारा 10 से 12 अक्टूबर 2017 तक त्रिदिवसीय प्रचार-प्रसार कार्यक्रम कर्नाटक क्षेत्र के बैंगलोर, बंगारपेट, मूलबागर, कोलार, होसपेट, शिवमोग्गा, भद्रावती आदि क्षेत्रों में आयोजित किया गया। उक्त कार्यक्रम में संस्कार केन्द्र के संयोजक श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी-जोधपुर, सचिव श्री राजेश जी भण्डारी-जोधपुर, सह-सचिव श्री सुरेन्द्रजी कुम्भट-जोधपुर के साथ रत्नसंघ के कर्नाटक क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी बोथरा(बीजापुर)-बैंगलोर, संघमंत्री श्री गौतमजी ओस्तवाल, संस्कार केन्द्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री सुभाषजी धोका-मैसूर, श्री सुनीलजी नाहटा-बंगारपेट एवं अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के उपाध्यक्ष श्री यशवन्तजी सांखला-बैंगलोर की सेवाएँ प्राप्त हुई। प्रचार-प्रसार कार्यक्रम के दौरान सभी स्थानों पर स्थानीय संघ द्वारा संचालित रविवारीय संस्कार केन्द्रों को संस्कार केन्द्र-जोधपुर से सम्बद्ध किया गया। इन सभी स्थानों पर आयोजित बैठक में स्थानीय संघ पदाधिकारी एवं अन्य श्रावक-श्राविकाएँ अच्छी संख्या में उपस्थित हुए। सभी स्थानों पर संस्कार केन्द्र की गतिविधियों की जानकारी, पुस्तकें, उपस्थिति पत्रक, संस्कार डायरी तथा अन्य विभिन्न सामग्री उपलब्ध करवाई गई। अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कर्नाटक क्षेत्र के क्षेत्रीय प्रधान श्री पारसमलजी बोथरा (बीजापुर) ने जोधपुर के एक रविवारीय संस्कार शिविर का वर्षभर का खर्च 125000/- रुपये देने की घोषणा कर्नाटक प्रवास के दौरान प्रदान की। *-राजेश भण्डारी, सचिव*

युवारत्न श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी द्वारा संघ को भूखण्ड-दान की घोषणा

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र के संयोजक युवारत्न श्री हर्षवर्द्धनजी ललवाणी, जोधपुर ने भोपालगढ़ में आयोजित संघ की कार्यकारिणी बैठक में जोधपुर-नागौर रोड़ पर मेडिकल महाविद्यालय, चिकित्सालय एवं छात्रावास हेतु संघ को भूखण्ड देने की भावना रखी, इस हेतु उनका हार्दिक आभार। संघ समर्पित ऐसे युवारत्न का यह कदम प्रेरणादायी है।

-पूरणराज अबानी, महामंत्री, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

उज्जैन में प्रो. धर्मचन्द जैन का जैनधर्म विषयक व्याख्यान

श्रीमती ओमवती शर्मा जनसेवा ट्रस्ट की ओर से 02 सितम्बर 2017 को आयोजित धर्म व्याख्यानमाला में 'जिनवाणी' के मानद सम्पादक प्रो. धर्मचन्द जैन (अधिष्ठाता, कला संकाय, जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर) ने ''जैन धर्म अनुयायी और जैन समाज'' विषयक अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि जैन धर्म माया-मोह, राग-द्वेष जैसे दुर्गुणों का नाश करके चेतना को शुद्ध करने वाला है। यह समाज के सभी वर्गों में तालमेल, मित्रता, करुणा को बढ़ाता है। इसके द्वार चारों वर्णों के लिए खुले हैं। इसमें अनशन आदि बाह्य तप ही नहीं प्रायश्चित्त, विनय, स्वाध्याय आदि आन्तरिक तप भी स्वीकार किए गए हैं। अनुयायियों में आज जो जैन धर्म का स्वरूप दिखाई देता है, वह चिन्ताजनक है। जैनधर्म में अनेकान्तवाद का सिद्धान्त ऐसा सिद्धान्त है, जो जैनियों को सबके साथ हिलमिल कर रहना सिखाता है। यही कारण है कि जैन धर्म भारत से कभी लुप्त नहीं हुआ एवं जैन धर्म के अनुयायियों के प्रति आम लोगों का सकारात्मक व्यवहार रहता है।

महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में पाणिन विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेशचन्द्र पण्डा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि वेदों में जातिवाद तथा सम्प्रदायवाद नहीं है। सभी धर्म मानवता की बात करते है। मुख्य अतिथि सिन्धिया प्राच्यविद्या शोध प्रतिष्ठान के निदेशक प्रो. बालकृष्ण शर्मा ने धर्म की सही जानकारी पर बल दिया। स्वागत ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. सूर्यप्रकाश व्यास ने किया तथा संचालन डॉ. वीरबाला छाजेड़ ने किया। *-डॉ. श्वेता जैन*

सद्भावना व्याख्यानमाला में डॉ. श्वेता जैन का उद्बोधन

भारतीय ज्ञानपीठ, उज्जैन द्वारा आयोजित पद्मभूषण डॉ. शिवमंगलसिंह 'सुमन' की स्मृति में सप्तदिवसीय अखिल भारतीय पंचदश सद्भावना व्याख्यान-माला के अन्तर्गत 25 अक्टूबर, 2017 को जिनवाणी की सह-सम्पादक डॉ. श्वेता जैन (पोस्ट डॉक्टरल फेलो, यू.जी.सी., नई दिल्ली) ने 'वर्तमान युग की मांग : जीवन-निर्माण' विषय पर अपने मुख्य वक्तव्य में कहा कि मनुष्यों को विचार शक्ति एक वरदान के रूप में मिली है। हमें इस शक्ति का उपयोग सकारात्मक रूप में ही करना चाहिए, तभी सही अर्थ में जीवन-निर्माण कर सकते हैं। यदि विचार नकारात्मक प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होते हैं तो वे अभिशाप बन जाते हैं। जिस प्रकार श्वास पर नियंत्रण करके स्वास्थ्य को प्राप्त किया जा सकता है वैसे ही विचारों पर नियंत्रण करके सफलता को प्राप्त किया जा सकता है। सफल व्यक्ति कभी विचारों के गुलाम नहीं रहे हैं। विचारों में नकारात्मकता हमें अपने लक्ष्यों तक नहीं पहुँचने देती। हमारे विचार जैसे होंगे वैसा ही हमारा व्यवहार भी होगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संयुक्त वाणिज्य कर आयुक्त गोपाल पोरवाल ने "जी.एस.टी. का देश की अर्थव्यवस्था पर प्रभाव" विषय पर प्रकाश डालते हुए कहा कि जीएसटी ने अप्रत्यक्ष कर के क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन किए हैं। जीएसटी के पहले विविध प्रकार के टैक्स वस्तुओं पर लगते थे, किन्तु जीएसटी लागू होने के बाद अब सारे टैक्स एक सम्पूर्ण टैक्स में समा गए हैं।

विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी प्रेमनारायण नागर थे। स्वागत उद्बोधन संस्था के अध्यक्ष श्री कृष्णमंगलसिंह कुलश्रेष्ठ ने दिया। मंगलाचरण के रूप में जैन, बौद्ध, ईसाई, सिक्ख, हिन्दू, मुस्लिम धर्मों की प्रार्थनाएँ बच्चों के द्वारा की गई। संचालन डॉ. सीमा दुबे ने किया। *-प्रदीप जैन, उपाध्यक्ष*

हैदराबाद में आचार्य हस्ती सेवा सम्मान-समारोह सम्पन्न

आचार्य हस्ती फाउण्डेशन-हैदराबाद के तत्त्वावधान में '7 वाँ आचार्य हस्ती सेवा सम्मान-2017' अहिंसा रत्न मूक पशुओं के मसीहा श्री जसराजजी श्रीश्रीमाल को 29 अक्टूबर 2017 विदुषी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 7 के पावन सान्निध्य में दिया गया। सम्मान समारोह के मुख्य अतिथि श्री पी.एस. सुराणा, राष्ट्रीय अध्यक्ष, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ने कहा- "अहिंसा, जीवदया, पशु-कल्याण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए" दिया गया सम्मान आचार्य हस्ती फाउण्डेशन की शोभा बढ़ाता है। इससे युवा पीढ़ी को पशु-कल्याण के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा मिलती है। समारोह के अतिथि राजीव त्रिवेदी, प्रिंसिपल सेकेट्री, तेलंगाना सरकार ने बताया कि त्यागी संतों के सान्निध्य में किया गया सम्मान कार्यक्रम त्यागमय जीवन की प्रेरणा देता है। समारोह के विशेष अतिथि जैन रत्न राजेन्द्रजी कीमती ने बताया- "आचार्य हस्ती जैन जगत के महान् संत हुए। उनके नाम से दिया गया अवार्ड समाज सेवियों का प्रोत्साहन बढ़ाता है। आचार्य हस्ती फाउण्डेशन के अध्यक्ष हस्तीमलजी गुन्देचा ने आगन्तुक सभी अतिथियों का शाल, माला एवं भावों से स्वागत किया। कार्याध्यक्ष तेजराजजी जैन ने 'प्रशस्ति-पत्र' का पठन किया। श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। श्रीमती लता पितलिया ने संघ एवं आचार्य हस्ती के गुणों पर विचार प्रकट किये। कवयित्री कल्पनाजी सुराणा ने सुन्दर गीत

की प्रस्तुति दी। समारोह में चातुर्मास-2017 में उत्कृष्ट सेवा कार्यों के लिए विभिन्न संघ-सेवियों का सम्मान किया गया। युवारत्न-सम्मान श्री सज्जनजी गुन्देचा को दिया गया।

आचार्य हस्ती सेवा सम्मान समारोह में ग्रेटर हैदराबाद के अध्यक्ष एवं विशेष अतिथि कान्तिलालजी नाहर, कांतिलालजी पितलिया, शान्तिलालजी गुन्देचा, पारसमलजी तातेड़, फाउण्डेशन के सहमंत्री सुरेशजी गुगलिया, सज्जनराजजी गुन्देचा, प्रेमजी बागमार, दिलखुशजी दफ्तरी, सचिनजी छाजेड़, किशोरजी मुथा, अभयजी जैन, दिनेशजी बालड़, कैलाशजी देशलहरा, मुमताज अहमद चिश्ती, कमलजी देशलहरा, सुरेशजी गुन्देचा, मूलचन्दजी डोशी, शान्तिलालजी मुणोत, गौतमजी सुराणा, विक्रमजी श्रीश्रीमाल, सौरभजी भण्डारी, दीपकजी दफ्तरी, गौतमजी बरडिया, प्रेमचन्दजी कांकरिया, बसंतजी बाफणा आदि समाज के विभिन्न गणमान्य लोगों ने भाग लिया। इस समारोह में आचार्य हस्ती फाउण्डेशन के चेयरमैन जैनरत्न सुरेन्द्रजी लुणिया भी उपस्थित थे।

इस समारोह में श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के सभी सदस्य उपस्थित थे। विजयवाड़ा, गुन्टूर, कालहस्ती, कम्मारेडी, चित्तुर इत्यादि स्थानों से अतिथियों ने इसमें भाग लिया। समारोह में सम्पूर्ण चातुर्मास-2017 के भोजन लाभार्थी वीरपिता सुकनराजजी, गौतमचन्दजी, राजेशकुमारजी, सज्जनराजजी गुन्देचा परिवार का संघ द्वारा स्वागत किया गया। *-श्रीपाल देशलहरा, 93911-00974*

संक्षिप्त समाचार

जोधपुर- श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल जोधपुर द्वारा 08 अक्टूबर 2017 को वार्षिक संगोष्ठी का आयोजन सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरुपार्क में सुबह 9.00 से 1.30 बजे तक हुआ। इस संगोष्ठी में अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा ने महिला शक्ति व जागृति के बारे में उद्‌बोधन फरमाया। इस संगोष्ठी में जैन प्रश्नोत्तरी, हाउजी का कार्यक्रम एवं तपस्वी बहिनों का सम्मान कर उन्हें पुरस्कृत किया गया। इस संगोष्ठी में लगभग 200 श्राविकाओं ने भाग लिया।

-सुशीला गुलेच्छा, अध्यक्ष

चेन्नई- श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, तमिलनाडु के तत्त्वावधान में 26 अक्टूबर 2017 को श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 55 वां दीक्षा-दिवस तीन-तीन सामायिक की साधना के साथ मनाया गया। श्री विनोदजी जैन ने आचार्य भगवन्त के विशिष्ट गुणों पर प्रकाश डाला। रत्नसंघ के गौरवशाली इतिहास, आचार्य भगवन्त के साधनामय जीवन पर रोचक प्रश्नोत्तर कार्यक्रम श्री नरेन्द्रजी कांकरिया द्वारा करवाया गया। हीरा चालीसा स्तुति उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं ने भावपूर्वक की। श्री पी.एस. सुराणा, श्री मांगीलालजी चोरडिया, श्री अशोकजी बाफणा, श्री चम्पालालजी बोथरा, श्री जवाहरलालजी कर्णावट, श्री राजेन्द्रजी बाघमार, श्रीमती संगीताजी बोहरा ने आचार्य भगवन्त के संघ समाज पर किये गये उपकारों का वर्णन किया एवं साथ ही श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल द्वारा पुच्छिसुणं एवं हीरा चालीसा पर लिखित प्रश्नोत्तर प्रतियोगिता रखी गई। कार्यक्रम का संचालन संघ के मंत्री श्री गौतमचन्दजी लोढ़ा ने किया।

16 से 19 अक्टूबर 2017 तक भगवान की अंतिम देशना उत्तराध्ययन सूत्र का मूल एवं संक्षिप्त विवेचन श्री विनोदजी जैन द्वारा किया गया तथा अनेक गुरु भ्राताओं ने सम्मिलित होकर श्रवण किया।

-आर.नरेन्द्र कांकरिया, प्रचार-प्रसार सचिव

भोपालगढ़- आचार्य हस्ती आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान पूर्व छात्र परिषद् के सदस्यों ने जोधपुर में उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं प्रभृति सन्तप्रवरों, महासतीवृन्द के तथा भोपालगढ़ में पूज्य आचार्यप्रवर एवं संत-सतीवृन्द के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण का लाभ लेने के साथ विद्वत्संगोष्ठी में भी सक्रिय भूमिका का निर्वाह

किया। श्री पारसमलजी जैन, मुम्बई की अध्यक्षता में आयोजित परिषद् की साधारण सभा में श्री गौतमचन्दजी जैन-डी.एस.ओ. को अध्यक्ष तथा श्री अशोककुमारजी जैन, वन विभाग, जयपुर को मानद् सचिव मनोनीत किया गया। परिषद् की गतिविधियों पर पूर्व सचिव डॉ. धर्मचन्द जैन ने प्रकाश डाला।

चेन्नई- रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलोजी के द्वारा संचालित जैन विद्याश्रम सीनियर सैकण्डरी स्कूल में 5 से 14 अक्टूबर 2017 तक दस दिवसीय राष्ट्रीय केडेट कोर (एन.सी.सी.) के वार्षिक प्रशिक्षण शिविर-2017 में पूर्णतः शाकाहारी व्यवस्था रखी गई। इसमें तमिलनाडु के स्कूलो-कॉलेजों के 500 केडेट्स ने भाग लिया। महासचिव डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया ने बताया कि जैन विद्याश्रम परिसर पूर्ण निरामिष क्षेत्र (वेज जोन) घोषित है। अतः शाकाहार की शर्त पर ही स्कूल में शिविर की अनुमति दी गई। सभी केडेट्स, अधिकारियों और प्रशिक्षकों ने शिविर अवधि में सहर्ष पूर्ण शाकाहार ही ग्रहण किया। कमांडिंग ऑफिसर लेफ्टिनैंट कर्नल एस.पी.सिंह ने कहा कि एनसीसी का यह पहला शिविर है, जिसमें शत-प्रतिशत शाकाहार ही परोसा गया। यह हमारी संस्कृति का हिस्सा है। इसका मुझे तथा सारे केडेट्स को गर्व है। *-डॉ. दिलीप धींग*

राजानांदगाँव- रिसर्च फाउंडेशन फॉर जैनोलोजी, जैनविद्या विभाग (मद्रास विश्वविद्यालय), चेन्नई, अ.भा. साधुमार्गी शांतक्रांति जैन श्रावक संघ, उदयपुर तथा साधुमार्गी शांतक्रांति जैन श्रावक संघ, राजनांदगाँव के संयुक्त तत्त्वावधान में 2-3 अक्टूबर को राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़) में 'समाचारी' विषय पर चतुर्थ राष्ट्रीय जैनविद्या संगोष्ठी सम्पन्न हुई। आचार्य श्री विजयराजजी म.सा. ने श्रुताराधना का महत्त्व तथा विद्वानों के मान-मूल्यांकन पर बल दिया। आचार्यश्री संगोष्ठी के पाँच में से चार सत्रों में विराजित रहे, सबको ध्यानपूर्वक सुना एवं मार्गदर्शन प्रदान किया। रिसर्च फाउंडेशन के महासचिव डॉ. एस. कृष्णचंद चोरड़िया ने उद्घाटन सत्र में औघिक समाचारी पर विचार रखे। आई.सी.पी.एस.आर. के निदेशक साहित्यकार डॉ. दिलीप धींग ने उपसम्पदा समाचारी के प्रयोग की आवश्यकता पर प्रकाश डाला और एकल विहार पर सवाल खड़े किये। संगोष्ठी में साध्वी कल्पनाश्री, साध्वी प्रेक्षाश्री, राष्ट्रपति पदक प्राप्त डॉ. चन्द्रकुमार जैन, समरथ जैन संघ, राजनांदगाँव के प्रथम अध्यक्ष मांगीलाल टाटिया, प्रकाशचन्द पटवा, अणुव्रतसेवी डॉ. ललिता बी. जोगड़, डॉ. हंसा हिंगड़, डॉ. रेणुका जे. पोरवाल, डॉ. तारा डागा, डॉ. सुभाष कोठारी, डॉ. बबिता जैन आदि ने भाग लिया। समापन सत्र में पद्मश्री डॉ. पुखराज बाफना ने जैविक घड़ी के सिद्धान्त की तुलना जैन दर्शन से की। स्थानीय संघाध्यक्ष रतनलाल गोलछा तथा महामंत्री भागचंद गिड़िया ने आभार जताया। *-शांतिलाल कोठारी*

चेन्नई- भगवान महावीर फाउण्डेशन, चेन्नई की ओर से 20 वें महावीर पुरस्कारों का वितरण समारोह 08 सितम्बर 2017 को आयोजित किया गया, जिसमें 'मुख्य अतिथि' राज्यसभा के सदस्य डॉ. सुब्रह्मण्यम स्वामी, 'अध्यक्ष' भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड के भूतपूर्व अध्यक्ष श्री डी.आर. मेहता थे।

पुरस्कार हेतु चयन समिति द्वारा सम्पूर्ण भारत से प्राप्त 367 नामांकनों में से चार श्रेणियों के अन्तर्गत निम्न संस्थाओं/व्यक्तियों का चयन किया गया- **1. अहिंसा एवं शाकाहार के क्षेत्र में-** 'ऐनिमल एड चेरिटेबल ट्रस्ट, उदयपुर (राज.), **2. शिक्षा के क्षेत्र में-** 'एम.फोर.सेवा' चेन्नई (तमिलनाडु), **3. चिकित्सा के क्षेत्र में-** डॉ. एम.सी. नाहटा, इन्दौर (मध्यप्रदेश), **4. सामुदायिक एवं समाज सेवा के क्षेत्र में-** अर्पणा रिसर्च एण्ड चैरिटीस ट्रस्ट, करनाल (हरियाणा) है। अतिथियों द्वारा प्रत्येक को 10 लाख रुपये, प्रशस्ति-पत्र एवं स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया। *-के. नन्दकिशोर, सलाहकार*

इन्दौर- आस्था जैन द्वारा गाय की रोटी के लिए आस्था रोटी बैंक की स्थापना की गई है। गाय है नहीं, कुत्ते खाते नहीं, रोटी तो निकलती है, इसका क्या किया जाए। यही विचार गुजराती कॉलेज में पढ़ रही आस्था जैन के मन में खटकता था। इसी का रास्ता निकालते हुए उसने घर के बाहर कपड़े की थैली टांगी और आसपास वालों से बाहर

ओटले पर रोटी रखने के बजाय इसमें जमा करने को कहा। रोटियों की संख्या बढ़ने पर आस्था रोटी बैंक एटीएम मशीन लगा दी है, जो जल्द ही कई कॉलोनियों में लगेगी। जमा रोटियाँ गौशाला भेजी जाएँगी। आस्था जैन की इस पहल को लोढ़ा भाईपा संघ, जे.एस.एस. जी. अरिहन्त ग्रुप के साथ अनेक संगठनों का समर्थन भी प्राप्त हो रहा है। इसी शृंखला में चार एटीएम शहर में लग चुके हैं।

उज्जैन- विगत 60 वर्षों से कार्यरत खादी ग्रामोद्योग विकास मण्डल की गो सेवा सदन एक उपइकाई है। गो सेवा सदन का मुख्य ध्येय है मानव समाज द्वारा तिरस्कृत अपंग, वृद्ध, नेत्रहीन, दूध नहीं देने वाली व कत्लखानें ले जाये जाने वाली गायों को बचाना तथा उनकी आजीवन सेवा करना। इस पुनीत सेवा यज्ञ में जीवदया प्रेमी बन्धुओं का सहयोग अपेक्षित है। सहयोग राशि खाता क्रमांक 53016320599 SBI, सेन्ट्रल कोतवाली रोड़, उज्जैन, IFSC Code : SBIN 0030062 में श्री तिलकेश्वर गौ सेवा सदन के नाम से जमा की जा सकती है। *-प्रदीप जैन, 94259-45934*

तिरुपति- तिरुपति नगर के निकट सन् 1988 में स्थापित श्री महावीर गौशाला फाउण्डेशन ट्रस्ट (रजि.) मूक, बीमार, बूढ़े और कमजोर गाय, बैल जैसे पशुओं के लिए साफ सुथरे और आरामदायक वातावरण में निवास की व्यवस्था करता है। जीवदया के इस महान् पुण्यकार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिये आपके सहयोग की अपेक्षा रखते हैं। अनुदान/सहयोग की राशि बैंक ड्राफ्ट या मनी-आर्डर अथवा नेट बैंकिंग द्वारा 'श्री महावीर गौशाला फाउण्डेशन ट्रस्ट (रजि.) तिरुपति' के नाम से भेज सकते हैं। बैंक व अन्य विवरण इस प्रकार है- The Karur Vysya Bank Ltd. Main Branch, Tirupati, IFSC Code : KVBL0001412 In name of Sri Mahaveer Gaushala Foundation Trust, Tirupati. A/c. No. 1412155000022132 *-सुरेश चौधरी, संयोजक ट्रस्टी*

बधाई

जयपुर- श्री मनोज जैन, शिक्षक सेंट जेवियर स्कूल, नेवटा को मधुबन ग्रुप की ओर से हिन्दी दिवस के अवसर पर दिल्ली में आयोजित 'हिन्दी हैं हम' कार्यक्रम के अन्तर्गत हिन्दी में उत्कृष्ट योगदान के लिए सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में एन.सी.ई.आर.टी. निदेशक उषा शर्मा सहित अनेक शिक्षाविदों ने विचार रखे। आप श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के पूर्व छात्र हैं।

मुम्बई- श्री सुमित भंसाली (वरिष्ठ प्रबन्धक, यस बैंक, मुम्बई) M.ech. IIT (BHU) द्वितीय स्थान MBA, IIT (Mumbai) स्वर्ण एवं रजत पदक CA (IPCC), सुपुत्र श्रीमती कल्पना प्रमोदजी भंसाली, सुपौत्र श्रीमती कमला शान्तिमल जी भंसाली एवं दोहिता श्रीमती चंचलजी सौभागचन्दजी खींचा के FRM (USA) तथा CFA (USA) में उत्तीर्ण होने पर हार्दिक बधाई।

श्रद्धाञ्जलि

महाराष्ट्र उपप्रवर्तिनी प्रकाशकुंवरजी म.सा. का देवलोकगमन

आचार्यश्री शिवमुनिजी की आज्ञानुवर्तिनी महाराष्ट्र उपप्रवर्तिनी श्री प्रकाशकुंवरजी म.सा. का 03 अक्टूबर 2017 को देवलाकगमन हो गया। *-पुखराज दरडा*

जोधपुर- समाज-सेवी, मानव-सेवा में समर्पित सुश्रावक श्री सुन्दरनाथजी मोदी का 13 अक्टूबर 2017 को स्वर्गवास हो गया। आपका जीवन संघ व समाज सेवा में पूर्णतः समर्पित था। विभिन्न सामाजिक संस्थाओं में आपने मुक्त हस्त से दान दिया। दान देने के साथ ही आप स्वयं सेवा में सन्नद्ध रहते थे। मोदी परिवार संघ-सेवा, समाज-सेवा में सदैव अग्रणी रहा है। आपके अग्रज भ्राता श्री सुमेरनाथजी मोदी संघ-समर्पित श्रावकरत्न थे। संघ में विभिन्न

पदों पर रहते हुए उन्होंने संघ-सेवा में महनीय योगदान प्रदान किया है। *-पूरणराज अबानी, महामंत्री*

बालोतरा-कोयम्बटूर- सुश्री तनिषा चौपड़ा सुपुत्री श्री नरेशकुमारजी चौपड़ा सुपौत्री श्री माणकचन्दजी चौपड़ा (फर्म

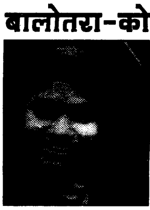

माणक ग्रुप) का 08 अक्टूबर 2017 को 15 वर्ष की अल्पायु में कोयम्बटूर में देवलोकगमन हो गया। आप दसवीं कक्षा में अध्ययनरत थीं। व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. के कोयम्बटूर चातुर्मास में आपने ज्ञान-ध्यान सीखा था। तप-त्याग में भी आपकी रुचि थी। आपका पूरा परिवार धर्मनिष्ठ एवं गुरुभक्त हैं। *-प्रकाश सालेचा, जोधपुर*

जोधपुर- सुश्रावक श्री सुभाषचन्द्रजी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री सुगनचन्दजी भण्डारी का 19 अक्टूबर 2017 को

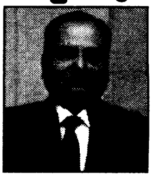

देहावसान हो गया। सरलता, मधुरता और सबके साथ सामंजस्य पूर्ण व्यवहार उनके जीवन की प्रमुख विशेषता थी। उनके चेहरे पर सदा शान्ति-सौम्यता झलकती रहती थी। वाणी की मधुरता, व्यवहार की सरलता और मन की निष्कपटता के कारण वे सबके प्रियपात्र थे। केवल वे ही नहीं सम्पूर्ण भण्डारी परिवार रत्नसंघ की सभी गतिविधियों में सक्रिय रूप से जुड़ा हुआ है। संत-सतीवृन्द की सेवा तथा स्वधर्मी भाई-बहिनों के आतिथ्य-सत्कार में भण्डारी परिवार सदैव तत्पर रहता है। आप आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सांसारिक बड़े भ्राता श्री शांतिलाल जी गाँधी के कंवर साहब थे।

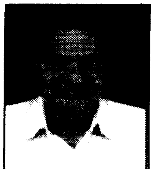

जोधपुर- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सम्पतराजजी मेहता सुपुत्र स्व. श्री सुजानमलजी मेहता का 15 सितम्बर, 2017 को देहावसान हो गया। आपका सम्पूर्ण जीवन धर्ममय रहा है। उदारमना सुश्रावक की आचार्यप्रवर, उपाध्यायप्रवर एवं सभी संत-सतियों के प्रति आपकी अनन्य श्रद्धाभक्ति थी। *-धनपत सेठिया, अध्यक्ष*

चेन्नई- सुश्रावक श्री देवराजजी धोका (पीपाड़ वाले) का 85 वर्ष की आयु में 08 अक्टूबर 2017 को स्वर्गवास हो

गया। आप जैन एवं वैदिक दर्शनों के गहन अध्येता थे। कई जैन साधु-संत एवं मद्रास विश्वविद्यालय के दर्शन शास्त्र के प्रोफेसर उनसे इन विषयों पर गहन चर्चाएँ करते थे। उन्होंने चारों वेदों पर अपने भाष्य लिखे हैं। श्री सम्पतराज जी चौधरी, पूर्व कार्याध्यक्ष, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के वे जीजाजी थे। गुरु हस्ती के प्रति वे अनन्य आस्थावान थे।

रायचूर- संत-सेवी सुश्राविका श्रीमती शांताजी भण्डारी धर्मपत्नी श्री सौभागराजजी भण्डारी का 03 अक्टूबर 2017 को 68 वर्ष की वय में परलोकगमन हो गया। वे प्रतिदिन 3-4 सामायिक स्वाध्याय के साथ करती थीं तथा प्रतिदिन सायंकाल नियमित रूप से प्रतिक्रमण करती थी। अपने जीवनकाल में उन्होंने 21, 15, 9,8, आदि तपस्याएँ कीं। वे प्रतिवर्ष आयम्बिल ओली तप की आराधना भी करती थीं। स्वभाव से सरल एवं शान्त थी तथा विहार में भी संत-सतियों को सेवा प्रदान करने में तत्पर रहती थीं। स्वधर्मी वात्सल्य एवं आतिथ्य-सत्कार में भी भण्डारी परिवार सदैव समर्पित रहा है। *-सौभागराज भण्डारी*

रतलाम- धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री सुजानमलजी कटारिया का 81 वर्ष की आयु में 06 अक्टूबर 2017 को निधन हो गया। शिक्षाविद कटारियाजी नगर तथा जिले की विभिन्न शिक्षण संस्थाओं से पिछले पचास वर्षों से जुड़े हुए थे। नियमित सामायिक, पौषध, स्वाध्याय आपकी दिनचर्या का अनिवार्य अङ्ग था। *-एस.सी. कटारिया*

मौजपुर- श्री खैरातीलालजी जैन का 90 वर्ष की आयु में 01 सितम्बर 2017 को स्वर्गवास हो गया। ये अपने गाँव से बी.ए. करने वाले प्रथम छात्र थे। सरकारी सेवा में एक वर्ष अध्यापक के रूप में हाई स्कूल खेड़ली में सेवाएँ दी। तत्पश्चात् कस्टोडियन विभाग (भारत सरकार) में प्रबन्ध अधिकारी के

पद पर रहे। इसके बाद 1968 में आयकर अधिकारी, भरतपुर के पद से सेवानिवृत्त हुए। श्री खैरातीलालजी ने अपना पूर्ण सेवाकाल पूरी मेहनत, निष्ठा एवं ईमानदारी के साथ पूरा किया।

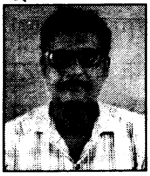

चेन्नई- धर्मानुरागी सुश्रावक श्री मनीषजी गादिया सुपुत्र स्व. श्री सोहनचन्दजी गादिया (जोधपुर निवासी) का 43 वर्ष की अल्प आयु में 18 अक्टूबर 2017 को सागारी संथारा के साथ समाधिमरण हो गया। -*कांतिचन्द जैन*

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी-परिवार तथा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं।

संशोधन

मुम्बई- व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. के चातुर्मास का पता जो पत्राचार हेतु जिनवाणी के जुलाई अंक में प्रकाशित किया गया था, उसमें संशोधन इस प्रकार है- श्रीमान् रतनराजजी नेमीचन्दजी भण्डारी-अध्यक्ष, ए-404, पंचशील हाईट्स, महावीर नगर, कांदिवली (वेस्ट), मुम्बई-400067 (महा.), मोबाइल : 93226-41172

कोटा- गत माह कोटा के श्री बिहारीलालजी जैन एवं श्री नेमीचन्दजी जैन के श्रद्धांजलि समाचारों में भूलवश फोटो बदल गए, इसके लिए मैं हार्दिक क्षमाप्रार्थी हूँ। -*अनिलकुमार जैन, कोटा*

पर्युषण पर्व में सेवा देने वाले शेष नामों की सूची

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ के तत्त्वावधान में इस वर्ष पर्युषण पर्व में सेवा देने वाले स्वाध्यायियों की नामावली पूर्व में प्रकाशित हो चुकी है। शेष इस प्रकार हैं-

मुकटी	श्रीमती विनिताजी साभद्रा-जलगाँव
भराडी	श्री चंदुलालजी कोठारी-महाड़
डोम्बीवली	विरक्त बंधु श्री महावीरजी जैन-भोपालगढ़
बडनेरा	सुश्री भावनाजी जैन-जामनेर
	सुश्री श्रुतिजी सेठिया-शिरपुर
वालुज	श्री रोशनजी चौपड़ा-जलगांव
पिलखोड़	श्रीमती कंचनजी भंसाली-जलगांव
लोहारा	सौ.चंदाजी कांकलिया-जलगांव
कामठी	सौ. मंगलाजी ललवाणी-शिरुड
	सौ. मनीषाजी भण्डारी-शिरुड
	श्री राजेन्द्रजी सुराणा-शिरुड
मिरसाहिबपेठ	श्री सुभाषजी कोठारी-माजलगांव
कलाचुकी	सौ. पुष्पाजी बनवट-जलगांव
गुडवांचरी	श्रीमती आशाजी कोठारी-जामनेर
कोलिडम	श्रीमती शकुन्तलाजी कटारिया-जलगाँव
सुमेरगंजमण्डी	श्री सचिनजी जैन-वरणगाँव
विद्यानगर, जयपुर	सौ. सुशीलाजी समदडिया-नाशिक
	श्री नन्दकिशोरजी खिंवसरा-नाशिक

❁ साभार-प्राप्ति-स्वीकार ❁

1000/-जिनवाणी पत्रिका की आजीवन (अधिकतम 20 वर्ष) सदस्यता हेतु प्रत्येक

क्रम संख्या 15851 से 15856 तक 6 सदस्य बने।

'जिनवाणी' मासिक पत्रिका हेतु साभार प्राप्त

11000/- श्री भंवरलालजी, प्रकाशचन्दजी, दिलीपचन्दजी, निखिलजी, प्रवेशजी भण्डारी, जोधपुर, श्री सुभाष जी भण्डारी सुपुत्र स्व. श्री सुगनचन्दजी भण्डारी के कार्तिक वदी अमावस्या को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

5100/- श्री जिनेशजी अभिषेकजी कानूंगो, हुबली, सहायतार्थ।

5100/- श्री उगमराजजी ऋषभजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री सम्पतराजजी मेहता के 15 सितम्बर 2017 को देहावसान पर उनकी पुण्य स्मृति में।

5100/- श्री माणकचन्दजी, ललितकुमारजी, पवनकुमार जी, नरेशकुमारजी, विक्रमकुमारजी चौपड़ा (फरस माणक ग्रुप), बालोतरा-कोयम्बटूर, सुश्री टीशाजी जैन सुपुत्री श्री नरेशजी जैन सुपौत्री श्री माणकचन्द जी चौपड़ा-कोयम्बटूर का 08 अक्टूबर, 2017 को स्वर्गवास होने पर उनकी पावन स्मृति में।

2000/- श्री अमृतलालजी, गौतमचन्दजी, संदीप कुमारजी, विक्रमजी सुराणा (मूलवासी खण्डप), हुबली।

2000/- श्री मंगलचन्दजी, धर्मीचन्दजी, राजेन्द्र कुमारजी भंसाली (जैन), बड़पल्ली-चेन्नई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री मोहनलालजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री पारसमलजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री सुशील कुमारजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री आनन्दजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री अरविन्दजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्री विशालजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्रीमती उगमाबाईजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्रीमती मदनबाईजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्रीमती सरोजादेवीजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

2000/- श्रीमती चन्दाबाईजी बोहरा (ब्यावर वाले), तिरूवन्नेमलाई, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1101/- श्री पारसमलजी, अशोक कुमारजी, मुकेशजी जैन (चौधरी), सवाईमाधोपुर, धर्मानुरागी सुश्रावक श्री लड्डूलालजी चौधरी का 28 सितम्बर 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री कमलचन्दजी बैद, जयपुर की ओर से।

1100/- श्री ओमप्रकाशजी, प्रेमप्रकाशजी, जयप्रकाशजी जैन, अलवर, पूज्य पिताजी सुश्रावक श्री खैरातीलाल जैन (रिटायर्ड आई.टी.ओ.) भोजपुर वाले का 1 सितम्बर 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री हीरालालजी, पन्नालालजी, पदमचन्दजी, चैनराजजी नाहर (कोसाणा वाले), चेन्नई, पूज्य पिताजी सुश्रावक श्री धरमचन्दजी नाहर का 18 जुलाई 2017 की पुण्य तिथि के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री राजेन्द्रजी, सौरभजी, हर्षजी चौरड़िया (जोधपुर वाले), बैंगलोर, भोपालगढ़ में सपरिवार साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने की खुशी में।

1100/- श्री सौभागराजजी, विजयराजजी, संजयकुमारजी, पवनकुमारजी, अजयजी, अभयजी एवं समस्त भण्डारी परिवार, रायचूर, श्रीमती शांताबाईजी धर्मपत्नी श्री सौभागराजजी भण्डारी का 3 अक्टूबर 2017 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में।

1100/- श्री बाबूलालजी, कमलजी, राजेन्द्रजी, अनिलजी जैन, सवाईमाधोपुर, सुश्राविका श्रीमती प्रेमदेवीजी जैन की द्वितीय पुण्य तिथि 29 सितम्बर 2017 के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री नवरतनचन्दजी, रजतजी ओस्तवाल, पीपाड़ सिटी, अपने दोहित्र भव्य कटारिया के जन्म एवं पुत्र रजत के आई.बी.एस. मुम्बई से एम.बी.ए. करने व बंधन बैंक, मुम्बई में सहायक पद पर नियुक्ति होने पर।

1100/- श्री मदनलालजी-मैनाबाईजी बोहरा, आवड़ी, चेन्नई, जोधपुर में नेहरूपार्क अष्टसम्पदा कार्यक्रम में सपत्नीक आराधना करने की खुशी में।

1100/- श्री प्रकाशचन्दजी, प्रवीणजी जैन, भरतपुर, श्री प्रकाशचन्दजी जैन की 40 वर्ष की बैंक सेवा से सेवानिवृत्ति के उपलक्ष्य में।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल हेतु साभार प्राप्त

119500/- श्री पदमचन्दजी-चन्द्रप्रभाजी मेहता (जोधपुर वाले), बैंगलोर, वीर गुण गौरव गाथा के पुनः मुद्रण हेतु।

118000/- श्री जुगराजजी हस्तीमलजी डूँगरवाल, चेन्नई, श्रावक सामायिक प्रतिक्रमण सूत्र के पुनः मुद्रण हेतु।
श्री आशीषजी चौधरी (पीपाड़ सिटी), मुम्बई, 25 बोल विवेचन सहित के पुनः मुद्रण हेतु।

35000/- श्री प्रवीण कुमारजी दुर्गालालजी रूणवाल, माधव नगर, श्रावक के बारह व्रत के पुनः मुद्रण हेतु।

5000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर की ओर से।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

31000/- श्रीमती लीलाजी सालेचा, जलगांव, अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा आयोजित गुणी अभिनन्दन समारोह में वरिष्ठ स्वाध्यायी सम्मान प्राप्त करने की खुशी में।

5100/- श्रीमती मधुजी अभिषेकजी, जिनेशजी कानूंगो, हुबली, सहायतार्थ।

2700/- श्री अमृतलालजी, गौतमचन्दजी, संदीपजी, विक्रमजी सुराणा, खण्डप, सहायतार्थ।

1100/- श्री रामलक्ष्मणजी कुम्भट, जोधपुर, पूज्य पिताजी स्व. श्री मगराजजी कुम्भट की 21 वीं एवं भ्राता स्व. श्री महावीरराजजी कुम्भट की 16वीं पुण्यतिथि पर।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को पर्युषण सहयोग प्राप्त

5100/- रालेगांव 3100/- सतारा

श्री महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ को पर्युषण साभार प्राप्त

5100/- डोम्बीवली 2200/- चिखली

अ.भा.श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर को साभार प्राप्त

1100/- श्री अरविन्दकुमार, अमितकुमारजी जैन, गंगापुर सिटी, जीवदया हेतु।

1100/- श्री एस.सी. मेहता, जोधपुर, जीवदया हेतु।

संघ-सेवा सोपान हेतु साभार

11,000/- श्री नरेन्द्रमोहनजी जैन-बजरिया, सवाईमाधोपुर, भोपालगढ़ में साधना-आराधना का सौभाग्य प्राप्त होने के उपलक्ष्य में।

श्री महावीरचन्दजी एवं श्रीमती सुनयनादेवीजी मेहता, भोपालगढ़ हॉल निवासी जोधपुर के विवाह की 60 वीं वर्षगांठ पर स्वयं द्वारा एवं परिवारजनों द्वारा प्रदत्त राशि

5100/- सुपुत्र डॉ. अशोककुमारजी मेहता, अमेरिका।

5100/- सुपुत्र श्री अनिलकुमारजी मेहता, जोधपुर।

5100/- पुत्रवधू डॉ. चमनदेवीजी धर्मपत्नी श्री प्रवीणजी मेहता, जोधपुर।

5100/- स्वयं द्वारा।

5100/- पुत्रवधू श्रीमती मंजूदेवीजी अनिलजी मेहता, जोधपुर।

5100/- पुत्रवधू डॉ. अर्चनाजी अशोककुमारजी मेहता, अमेरिका।

5100/- सुपौत्र श्री अक्षयकुमारजी अनिलजी मेहता, अमेरिका।

5100/- सुपुत्र श्री प्रवीणकुमारजी मेहता, जोधपुर।
5100/- सुपौत्री सुश्री नेहाजी अनिलजी मेहता, जोधपुर।
5100/- सुपौत्रवधू श्रीमती शिल्पाजी अक्षयकुमारजी मेहता, जोधपुर।
5100/- सुपौत्रियाँ एवं सुपौत्र सुश्री ईशिताजी सुश्री हनीजी, रजतकुमारजी प्रवीणजी मेहता, जोधपुर।
5100/- सुपौत्री श्री टिवंकलजी डॉ. अशोककुमारजी मेहता अमेरिका।

संस्कार केन्द्र, जोधपुर को साभार प्राप्त

25000/- श्री रतनलालजी खींवसरा (कोठारी) परिवार, पल्लवरम, चेन्नई, सहयोगार्थ।

गजेन्द्र निधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

दानदाता एवं दान एकत्रित करने वालों की सूची

500000/- श्री मोफतराजजी मुणोत, मुम्बई।
100000/- श्रीमती कमलादेवी दुलीचन्दजी बागमार, किलपॉक-चेन्नई (तमिलनाडु)।
24000/- श्री आशीषजी एवं खुशबुजी कोठारी, ब्यावर, जिला-अजमेर (राज.)
12000/- श्रीमती पुष्पाजी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)।
12000/- श्री निर्मलकुमारजी, मनोहरकुमारजी बंब, बैंगलोर।
12000/- श्री अचलराजजी, जितेन्द्रराजजी, सुरेशराजजी, हर्षजी डागा, जोधपुर, सुश्री कियारा के जन्मदिन के उपलक्ष्य में।

छात्रवृत्ति-योजना में इच्छुक दानदाता एक छात्र के लिए 12000/- रु. अथवा उनके गुणक में जितनी छात्रवृत्तियाँ देना चाहें तदनुसार दानराशि 'गजेन्द्र निधि आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड' योजना के नाम चैक या ड्राफ्ट(Donations to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of IncomeTax Act 1961) से निम्नांकित पते पर भेजने का कष्ट करें- ***Sh. M. Harish Kawad**, No. 5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600056(T.N.) (Mob. 9543068382)*

आगामी पर्व तिथि

मार्गशीर्ष कृष्णा 8 ,	शनिवार	11.11.2017	अष्टमी
मार्गशीर्ष कृष्णा 12 ,	बुधवार	15.11.2017	आचार्य श्री विनयचन्द्र जी म.सा. की 102वीं पुण्य-तिथि
मार्गशीर्ष कृष्णा 14 ,	शुक्रवार	17.11.2017	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष कृष्णा 30,	रविवार	18.11.2017	पक्खी
मार्गशीर्ष शुक्ला 8,	सोमवार	27.11.2017	अष्टमी
मार्गशीर्ष शुक्ला 14,	शनिवार	02.12.2017	चतुर्दशी
मार्गशीर्ष शुक्ला 15,	रविवार	03.12.2017	पक्खी
पौष कृष्णा 8,	रविवार	10.12.2017	अष्टमी
पौष शुक्ला 14,	शनिवार	16.12.2017	चतुर्दशी
पौष शुक्ला 14,	रविवार	17.12.2017	पक्खी

सामायिक उपकरण संघ कार्यालय में उपलब्ध

आपको सूचित करते हुए हर्ष है कि सामायिक उपकरण का सेट जिसमें दुपट्टी, चोलपट्टा, आसन, पूँजणी, मुँहपत्ती, माला तथा प्रतिक्रमण की पुस्तक सम्मिलित है, संघ कार्यालय में लागत मूल्य से भी कम रियायती दर पर 200/- रुपये में उपलब्ध है। जोधपुर से बाहर मंगवाने पर पार्सल खर्च अतिरिक्त देय होगा।

-अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर-342001(राज.), फोन नं. 0291-2636763

बाल-जिनवाणी

सच्चा वीर

डॉ. दिलीप धींग

रघुपतिसिंह महाराणा प्रताप की सेना का बहादुर सैनिक था। वीर होने के साथ ही वह वचन का पक्का और सत्यनिष्ठ भी था। रघुपतिसिंह ने अकबर की सेना के विरुद्ध जबर्दस्त शौर्य का प्रदर्शन किया। अकबर चाहता था कि किसी तरह रघुपतिसिंह यदि पकड़ा या मारा जा सके तो प्रताप की सेना का एक सहारा टूट सकता है। इसलिए अकबर ने उसको मारने या पकड़ लाने के लिए बहुत बड़ा पुरस्कार घोषित किया। लेकिन रघुपतिसिंह मुगल सेना के हाथ नहीं लग पाया।

इधर, रघुपति का इकलौता बेटा सख्त बीमार हो गया। उसकी पत्नी ने समाचार भिजवाये कि यदि पुत्र का मुँह देखना हो तो तुरन्त घर आ जाओ। अकबर ने रघुपति के घर पर भी पहरा लगा रखा था। रघुपति के लिए यह भारी दुविधा की स्थिति थी। लेकिन वह सच्चा वीर था, वह निडर होकर अपने घर पर गया।

घर के बाहर तैनात मुगल सिपाही ने रघुपतिसिंह को रोका। रघुपति ने कहा- ''मैं अपने बीमार पुत्र को देखने आया हूँ। उससे मिलकर अभी वापस आ जाऊँगा, तब मुझे पकड़ लेना।''

रघुपति की बात सुनकर उस सिपाही को अपने पुत्र की याद हो आई। पुत्र-प्रेम का स्मरण करके उसने रघुपति को घर में जाने दिया। रघुपति अपनी पत्नी और बीमार पुत्र से मिला। पुत्र बहुत बीमार था। किसी भी समय उसके साँसों की डोर टूट सकती थी। ऐसी नाजुक घड़ी में भी वह जल्दी ही वापस लौटने लगा। पत्नी ने आग्रहपूर्वक रुकने के लिए कहा। इस पर रघुपतिसिंह ने कहा- ''मैंने मुगल सिपाही को वचन दिया है कि मैं वापस आ रहा हूँ, अतः मैं वचन से बँधा हुआ हूँ।'' यह कहकर रघुपति बाहर आ गया।

अकबर की तरफ से पहरा लगा रहे मुगल सिपाही के सामने आकर रघुपति ने कहा- ''मैं आ गया हूँ। मुझे पकड़कर पुरस्कार प्राप्त करो।''

वह सिपाही रघुपति की सच्चाई और वीरता से बेहद प्रभावित हुआ और उसने उसे छोड़ दिया। किसी के माध्यम से यह सारा वृत्तान्त अकबर तक पहुँचा, अकबर ने उस सिपाही पर न तो क्रोध किया और न ही उसे बर्खास्त किया। अकबर ने उस सिपाही को पुरस्कार से सम्मानित करते हुए कहा- ''यह मेरे लिए गर्व की बात है कि मेरे कर्मचारी अहिंसा, प्रेम और सत्य का आदर करते हैं।''

आज लोग मामूली स्वार्थ के लिए भी निष्ठा, अहिंसा, प्रेम और वचनबद्धता भुला देते हैं। जबकि उस समय युद्धकाल में भी दोनों पक्षों के राजा और सैनिक मानवीय मूल्यों की कद्र करते थे। तत्कालीन इतिहास के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि अहिंसा, प्रेम आदि श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों के संरक्षण और संवर्द्धन में जैन धर्म की शिक्षाओं का बड़ा प्रभाव था।

-निदेशक : अंतरराष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन व शोध केन्द्र, 18, रामानुजा अय्यर स्ट्रीट, साहूकारपेट, चेन्नई-600001 (तमिलनाडु)

बचपन लौटकर आता नहीं है...

श्री आर. प्रसन्नचन्द चोरडिया

हर किसी को अपना बचपन याद आता है,
लाख करो कोशिश पर, भूल नहीं पाता है।
गाँव की गलियों में अपने संगी साथियों के साथ
खेला करते थे।
लड़ते थे, झगड़ते थे, लेकिन,

सोने से पहले एक हो जाते थे।
कैसे भूले राम-श्याम और बंसी का साथ
मिलकर सभी मचाते थे उत्पात।
बचपन में किसी का डर नहीं था,
हर कोई राजा से कम नहीं था।।
कैसे भूला दे नानी-दादी की बातें,
खुले आसमान में तारों भरी रातें।
वो यादें, वो प्रेम, दिल से जाता नहीं है,
ऐसा बचपन फिर लौटकर आता नहीं हैं।

-52, कालाथी पिल्लै स्ट्रीट, चेन्नई-600079 (तमिलनाडु)

जैन धर्म : उभरते प्रश्न व उत्तर

श्री प्रमोद महनोत

प्रश्न:- स्थानकवासी शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर:- जैन धर्म के एक विशिष्ट वर्ग के धर्म आराधना के स्थल को स्थानक कहा जाता है, स्थानक का मतलब धर्म में स्थिर होने में सहायक होने वाला स्थान। स्थानकवासी अर्थात् स्थानक में बिना मूर्ति व फोटो के माध्यम से धर्म आराधना करने वाला वर्ग। स्थानकवासी परम्परा के संत, सती, वायुकाय के जीवों की विराधना से बचने के लिये मुँहपत्ती का उपयोग करते हैं।

प्रश्न:- मूर्ति अथवा फोटो की पूजा करने में क्या हानि है?

उत्तर:- मूर्ति से प्रभु पूजा एक विकृति है, जिससे तीन बड़े दोष उत्पन्न होते हैं।

1. मूर्ति में ही भगवान मानकर चमत्कारों की लालसा वृत्ति पैदा होती है। जो भगवान मोक्ष से जा चुके हैं, वे चमत्कार नहीं करते।
2. एक ही भगवान के विभिन्न प्रतीकों में से कई में अधिक श्रद्धा उत्पन्न होती है तो किन्हीं से न्यूनतम, जो विकार है, इससे एक ही भगवान में भेद की धारणा प्रचलित होती है।
3. आडम्बर की प्रवृत्ति बढ़ती है, जिससे हिंसा आदि दोष बढ़ते हैं, अनावश्यक मिथ्या दोष पनपते हैं।

प्रश्न:- पूजा के कितने भेद हैं?

उत्तर:- पूजा दो प्रकार की होती है।

1. **द्रव्य पूजा-** बाह्य पदार्थों से की जाने वाली पूजा द्रव्य पूजा है। द्रव्य पूजा के दो भेद हैं। अपने से भिन्न सजीव-निर्जीव पदार्थों जैसे चावल, फूल, पत्ती से पूजा करना सावद्य द्रव्य पूजा है तथा काया से नमस्कार करना तथा वचन से स्तुति करना निरवद्य द्रव्य पूजा है। जिसमें जीव हिंसा आदि हो उस कार्य को सावद्य कहते हैं तथा जिसमें हिंसा आदि पाप नहीं है और शुभ क्रिया हो उसे निरवद्य कहते हैं।
2. **भाव पूजा-** इधर-उधर भटकते हुए मन को एकाग्र करके जिनेश्वर देव के स्मरण में लगाना भाव पूजा है। भाव पूजा के हम चार भेद मान सकते हैं।

   1. नाम स्मरण- नमस्कार पूर्वक तीर्थंकर भगवन्त का नाम स्मरण करना अर्थात् लोगस्स के पाठ का चिन्तन करना।

   2. गुण स्मरण- नमस्कार पूर्वक गुणों का स्मरण करना जैसे नमोत्थुणं के पाठ से अर्थ-चिन्तन करते हुए नमस्कार करना।

   3. स्वरूप दर्शन- मन में समवसरण में 34 अतिशय सहित तीर्थंकर के स्वरूप की कल्पना से दृश्य देखना तथा उनके अनन्त चतुष्टय का चिन्तन करना।

   4. ध्यान पूजा- वर्ण, गंध, रस, स्पर्श और संस्थान से रहित सिद्ध भगवान का ध्यान करना।

-सी-345, हंस मार्ग, मालवीय नगर, जयपुर (राज.)

सातवाँ बोल- शरीर पाँच

सातवाँ बोल शरीर पाँच:- 1. औदारिक, 2. वैक्रिय, 3. आहारक, 4. तैजस और 5. कार्मण।

जीव के क्रिया करने के साधन को 'शरीर' कहते हैं।

जो उत्पत्ति समय से लेकर प्रतिक्षण क्षीण होता रहे, बदलता रहे उसे 'शरीर' कहते हैं। संसारी जीव जिसमें रहकर अपने शुभाशुभ कर्मों का भोग करे, उसे भी 'शरीर' कहते हैं।

1. **औदारिक शरीर**– जो रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि आदि स्थूल पुद्गलों से बना हो उसे 'औदारिक शरीर' कहते हैं।
2. **वैक्रिय शरीर**– जिस शरीर में विविध अथवा विशेष प्रकार की क्रियाएँ होती हैं, उसे वैक्रिय शरीर कहते हैं। जैसे– एक रूप होकर अनेक रूप धारण करना, छोटा-बड़ा शरीर बनाना, दृश्य-अदृश्य रूप बनाना आदि।
3. **आहारक शरीर**– चौदह पूर्वधारी प्रमत्त अणगार, लब्धि से अपने शरीर में से अति विशुद्ध स्फटिक के सदृश्य एक हाथ के पुतले के बराबर शरीर बनाते हैं उसे 'आहारक शरीर' कहते हैं।
4. **तैजस शरीर**– तेजोमय पुद्गलों से बना जो शरीर खाये हुए आहार के पुद्गलों को पचाने का काम करता है, उसे 'तैजस शरीर' कहते हैं। शरीर में विद्यमान उष्णता व जठराग्नि इसी के कारण प्रकट होती है।
5. **कार्मण शरीर**– कार्मण वर्गणाओं का वह समूह जो आत्मा के साथ एक ही क्षेत्र में दूध और पानी की तरह मिलकर रहा हुआ है, 'कार्मण' शरीर कहलाता है। जीव और कर्म पुद्गलों का आपस में अनादि सम्बन्ध है, उस कर्मों के पिण्ड को 'कार्मण शरीर' कहते हैं।

My Dream

From a very early age, kids are made to dream about becoming big professionally. They are fed with the importance of making a successful career. Everyone they come across asks them about their aim in life and career becomes the prime focus of most. They set an aim and give their best to achieve the same. While it is of utmost importance to establish oneself professionally, what people forget is that it is equally important to invest time to nurture relationships, health and other aspects of life. So if you can dream about having a rocking career then why not dream of a good relationship and great health too?

Your health is of utmost importance. It is only when you enjoy good health you shall be able to focus on other things in life. So why just dream of a big car, huge bungalow and a six figure salary, why not dream about enjoying good health as well? Everyone should dream about having good health and work in that direction. It is essential to take out some time from your schedule to indulge in exercise daily. Also make it a point to have wholesome food that includes all the essential micro nutrients.

Everyone has a career dream. As kids, I also dreamt of becoming a scientist then as I grew I was fascinated by the Bollywood actors and wanted to become an actor however it was only when I completed my 12th standard. Then I realised that I had a technical bent of mind and decided to get into engineering. There is no harm in dreaming big however choose your path wisely keeping in mind your potential and other aspects. Don't set unrealistic career goals.

Merely having career goals and succeeding professionally can have you alone after one point in life. It is thus as important to dream of having loving relationship and having fitness goals as it is to dream of succeeding professionally. Work as diligently to achieve these as you do to realise your career dreams.

कौन किसके गुरु?

श्री सुरेशचन्द्र धींग

नीचे दिये गये प्रश्नों के सामने दो विकल्प दिये गये हैं। प्रश्न के उत्तर के लिए सही विकल्प पर सही (√) का निशान लगाए।

क्र. सं.	प्रश्न	पहला विकल्प	√	दूसरा विकल्प	√
1	गौतम स्वामी के गुरु	भगवान महावीर		भगवान पार्श्वनाथ	
2	जम्बू स्वामी के गुरु	गौतम स्वामी		सुधर्मा स्वामी	
3	आचार्य स्थूलिभद्र के गुरु	आचार्य भद्रबाहु		आचार्य संभूतविजय	
4	आचार्य हरिभद्र के गुरु	आचार्य जिनभद्रसूरि		आचार्य शीलगुणसूरि	
5	आचार्य हेमचन्द्र के गुरु	आचार्य यशोभद्र		आचार्य देवचन्द्र	
6	राजा कुमारपाल के गुरु	आचार्य हेमचन्द्र		आचार्य हरिभद्र	
7	आचार्य भद्रबाहु के गुरु	आयार्य यशोभद्र		आयार्य शय्यंभव	
8	साध्वी मृगावती की गुरुणी	महासती चन्दनबाला		महासती धारिणी	
9	सम्राट सम्प्रति के गुरु	आचार्य सुहस्ती		आचार्य महागिरि	
10	आचार्य सुहस्ती के गुरु	आचार्य स्थूलिभद्र		आचार्य प्रभव	
11	आचार्य हस्तीमलजी के गुरु	आचार्य रत्नचन्द्रजी		आचार्य शोभाचन्द्रजी	
12	आचार्य रघुनाथजी के गुरु	आचार्य धर्मदासजी		आचार्य भूधरजी	
13	आचार्य भिक्षु के गुरु	आचार्य भूधरजी		आचार्य रघुनाथजी म.	
14	आचार्य जयमलजी के गुरु	आचार्य भूधरजी		आचार्य धन्नाजी म.	
15	सिद्धसेन दिवाकर के गुरु	आचार्य वृद्धवादी		कालकाचार्य	
16	सम्राट् विक्रमादित्य के गुरु	जैन दिवाकर		सिद्धसेन दिवाकर	
17	जैन दिवाकर चौथमलजी के गुरु	मुनि हीरालालजी		आचार्य मन्नालालजी	
18	आचार्य घासीलालजी के गुरु	आचार्य जवाहरलालजी		आचार्य हुक्मीचन्दजी	
19	तपस्वी गणेशलालजी म. के गुरु	प्रेमराजजी महाराज		रोड़मलजी महाराज	
20	आचार्य शोभाचन्द्रजी के गुरु	आचार्य रत्नचन्द्रजी		आचार्य विनयचन्दजी	
21	आचार्य नानालालजी के गुरु	मेवाड़ी चौथमलजी		आचार्य गणेशीलालजी	

क्र. सं.	प्रश्न	पहला विकल्प	√	दूसरा विकल्प	√
22	आचार्य आनन्दऋषि के गुरु	पूज्यपाद तिलोकऋषि		आचार्य रत्नऋषि	
23	आचार्य देवेन्द्रमुनि के गुरु	उपाध्याय पुष्करमुनि		आचार्य आनन्दऋषि	
24	आचार्य शिवमुनि के गुरु	आचार्य आत्मारामजी म.		ज्ञानमुनिजी	
25	आचार्य महाश्रमण के गुरु	आचार्य तुलसी		आचार्य महाप्रज्ञ	
26	आचार्य उमेशमुनि 'अणु' के गुरु	मालवकेसरी सौभाग्यमलजी		सूर्यमुनि	
27	उपाध्याय केवलमुनि के गुरु	उपाध्याय कस्तूरचंदजी		जैन दिवाकर चौथमलजी	
28	उपाध्याय पुष्करमुनि के गुरु	आचार्य देवेन्द्रमुनि		महास्थविर ताराचन्दजी	
29	युवाचार्य मधुकरमुनि के गुरु	स्वामी ब्रजलालजी म.		स्वामी जोरावरमलजी	
30	प्रवर्तक पन्नालालजी के गुरु	मुनि मोतीलालजी		आचार्य नानकरामजी	
31	मरुधर केसरीजी म. के गुरु	स्वामी बुधमलजी म.		आचार्य रघुनाथजी	
32	तपस्वीराज चम्पालालजी म. के गुरु	बहुश्रुत समरथमलजी		आचार्य धन्नाजी	
33	आचार्य हीराचन्द्रजी म. के गुरु	आचार्य गुमानमलजी म.		आचार्य हस्तीमलजी म.	
34	पाण्डवों के गुरु	द्रोणाचार्य		कृपाचार्य	
35	कबीर के गुरु	रामानन्दाचार्य		तुलसी	
36	महात्मा गाँधी के गुरु	मुनि बेचरदास		श्रीमद् राजचन्द्र	
37	शिवाजी के गुरु	रामदासजी		तुमारामजी	
38	दानवीर भामाशाह के गुरु	मुनि सोमसुन्दर		जैनमुनि देपागरसूरि	
39	पं. दलसुख मालवणिया के गुरु	पं. सुखलालजी संघवी		वीरचन्द राघवजी गाँधी	
40	विवेकानन्द के गुरु	वेद व्यास		रामकृष्ण परमहंस	
41	एपीजे अब्दुल कलाम के गुरु	डॉ. डी.एस. कोठारी		विक्रम साराभाई (जैन)	

-बम्बोरा-313706, जिला-उदयपुर (राज.)

NICE QUOTE

Mrs. Minakshi Dinesh Jain

The Plus Symbol is made with a pair of minus Symbols. So all negative things can be shaped as positive. The only requirement is positive attitude. *-17/729,CHB, Jodhpur*

बाल–स्तम्भ

भारत की बेटी प्रियल

श्रीमती कमला हणवन्तमल सुराणा

बाल-स्तम्भ के अन्तर्गत प्रकाशित इस रचना को पढ़कर अन्त में दिए गए प्रश्नों के उत्तर 20 वर्ष की आयु तक के पाठक 15 दिसम्बर, 2017 तक जिनवाणी संपादकीय कार्यालय, सामायिक–स्वाध्याय भवन, कुम्हार छात्रावास के सामने, प्लॉट नं. 2, नेहरू पार्क, जोधपुर–342003 (राज.) के पते पर प्रेषित करें। **उत्तर के साथ अपनी आयु तथा पूर्ण पते का भी उल्लेख करें।** श्रेष्ठ उत्तरदाताओं को श्री महावीरचन्द जी बाफना, जोधपुर द्वारा अपनी धर्मपत्नी एवं श्रीमती अरुणा जी, श्री मनोजकुमार जी, श्री कमलेश कुमार जी बाफना की माताश्री स्व. श्रीमती मोहिनीदेवी जी बाफना की पुण्य-स्मृति में पुरस्कृत किया जा रहा है। पुरस्कारों की राशि इस प्रकार है- प्रथम पुरस्कार-500 रुपये, द्वितीय पुरस्कार-300 रुपये, तृतीय पुरस्कार- 200 रुपये तथा 150 रुपये के पाँच सान्त्वना पुरस्कार। पुरस्कार राशि सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल,जयपुर द्वारा भिजवाई जाती है।

जोधपुर में एक श्रमिक परिवार रहता था। पति-पत्नी पत्थर तोड़ने का कार्य करते थे। उनके दो बच्चे थे, एक बेटी और एक बेटा। बेटी प्रियल दसवीं में और बेटा कुणाल चौथी कक्षा में पढ़ते थे। प्रियल हमेशा विद्यालय देर से पहुँचती थी। लगभग गणित का प्रथम कालांश समाप्त होने वाला था और प्रियल कक्षा में पहुँची। उसने अध्यापिका से पूछा- ''मैडम, क्या मैं अन्दर आ सकती हूँ।''

अध्यापिका ने कहा-''आइए, फिर कहा कि तुम प्रतिदिन देर से आती हो, तुम इतना भी नहीं समझती हो कि गणित जैसे कठिन विषय में पीछे रह जाओगी। परीक्षा-परिणाम बिगड़ जाएगा। कल देर से आई तो अन्दर नहीं आने दूँगी। बताओ, तुम देर से क्यों आती हो?'' इतनी बात सुनते ही प्रियल भभक-भभक कर रोने लगी। उसकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी।

प्रियल ने रोते हुए कहा-''मैडम मुझे घर का पूरा काम करके छोटे भाई को स्कूल पहुँचाना पड़ता है। मेरी माँ नहीं है। मेरी माँ दो घरों में बर्तन साफ करने का काम करती थी, वह काम भी अब मुझे ही करना पड़ता है।''

जैसे ही प्रियल ने कहा कि मेरी माँ नहीं है। यह सुनकर अध्यापिका की आँखें भी नम हो गईं। उनको देखकर अन्य छात्राएँ भी भावुक हो गईं। कक्षा का वातावरण सहानुभूतिमय हो गया। अध्यापिका मन ही मन में पश्चात्ताप करने लगी। वह मन ही मन में सोचने लगी कि प्रियल इतनी अच्छी लड़की है। घर की व्यवस्था करने के पश्चात् भी कक्षा में प्रथम स्थान लाती है।

अध्यापिका ने पूछा-'तेरे पिताजी क्या काम करते हैं?

प्रियल- मेरे माता-पिता दोनों पत्थर तोड़ने और बजरी-सीमेण्ट की तगारियाँ भरकर कारीगरों को पकड़ाते थे। पिताजी अभी भी यही काम करते हैं। मम्मी के फेंफड़े खराब हो गए, उन्हें तपेदिक की बीमारी लग गई थी। पिताजी के पास इलाज कराने के पैसे नहीं होते थे। बीमारी बढ़ती गई और दो वर्ष पूर्व उनका देहान्त हो गया। माँ के अभाव में पिताजी बहुत दुःखी रहते हैं। अब तो बुरी संगत में पड़कर शराब पीना सीख गए हैं। मैं पीने का मना करती हूँ पर मेरी सुनते ही नहीं है। रात को देर से घर आते हैं। भैया जल्दी सो जाता है। मैं अकेली घर में रहने के साथ पढ़ाई भी करती हूँ, इसलिए सवेरे उठने में भी देर हो जाती है। दीवाली के दिनों में तो रात-रात भर भी घर नहीं आते हैं। ये बातें मैं किसी को नहीं बताती हूँ क्योंकि मेरे पापा की छवि बिगड़ जाएगी। मौहल्ले में रहना दुष्कर हो जाएगा। मेरे पड़ोस में रहने वाली आंटी अच्छी है, वह हमारा पूरा ध्यान रखती है। स्वयं के सामान लाती है तब हमारे भी ले आती है।

अध्यापिका- प्रियल! मैं तुम्हें गोद ले रही हूँ।

आज से पढ़ाई का खर्च में दूँगी। स्कूल पोशाक भी मैं बनवाऊँगी। तू यह बर्तन साफ करने का काम छोड़ दे।

प्रियल- मैडम! मेरे घर का खर्च न चलेगा। मैं इन पैसों से कोठरी का किराया तो चुका दूँगी। किराया नहीं देंगे तो मकान मालिक कोठरी छुड़वा देगा। मैं यह छोड़ना नहीं चाहती, क्योंकि मेरे पड़ौसी बहुत अच्छे हैं।

अध्यापिका- मैं स्कूल फीस माफ करवाने का प्रयत्न करूँगी और छात्रवृत्ति के लिए भी कोशिश करूँगी।

समय बीतता गया। प्रियल ने बारहवीं की परीक्षा दे दी। परीक्षा फल निकला। पूरे राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ स्थान प्राप्त किया। प्रियल ने 99 प्रतिशत अंक प्राप्त किए। समाचार पत्र वाले प्रियल के घर आए तो उसकी कोठरी देख दाँतों तले अंगुली दबा ली, उस सीधी-सादी लड़की को निहारने लगे। इस कोठरी में, ऐसा हीरा चमक रहा है। प्रियल लम्बी-पतली और दिखने में अच्छी लगती थी।

प्रियल के पिता को भी बुलवाया गया। उसके पिता घर के बाहर भीड़ और मीडिया वालों को देख स्तब्ध रह गए। उसको पता चला कि प्रियल राजस्थान में 12 वीं की परीक्षा में राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ रही है तो बेटी को गले लगाकर रोने लगा।

मीडिया वालों ने प्रियल का फोटू खींचा। तत्पश्चात् उससे साक्षात्कार किया। उन्होंने प्रियल से प्रश्न किया कि आप कौनसी स्कूल में पढ़ती हो?

प्रियल- राजकीय सीनियर माध्यमिक बालिका स्कूल, जोधपुर।

मीडिया- आपको पढ़ने की प्रेरणा किससे मिली?

प्रियल- अपनी स्वर्गीय माँ से, मेरी माँ की इच्छा थी कि 'मैं बहुत पढ़ूँ'।

मीडिया- घर का कार्य कौन करता है?

प्रियल- 'मैं बड़ी हूँ और एक छोटा भाई है। पिताजी खाने का टिफिन लेकर साढ़े सुबह साढ़े आठ बजे दिहाड़ी पर चले जाते हैं।

मीडिया- आप आगे क्या करना चाहती हैं?

प्रियल- मैं डॉक्टर बनना चाहती हूँ।

मीडिया- आपके पिताजी की आमदनी अल्प है फिर ....।

प्रियल- मेरी एक अध्यापिका 'प्रेरणा मैडम' ने मुझे गोद लिया है, मेरी पढ़ाई का खर्च वही देगी। मैं उनको भगवान के रूप में देखती हूँ। स्कूल में अर्द्धविश्राम के समय में वे मुझे गणित पढ़ाया करती थी। उनसे आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रहती है। मैं अपनी इस सफलता का पूरा श्रेय उनको ही देती हूँ। मैं उन्हें शत-शत नमन करती हूँ।

मीडिया- आप डॉक्टर ही क्यों बनना चाहती है?

प्रियल- मैं डॉक्टर बनकर रोगियों-पीड़ितों की सेवा करूँगी। क्योंकि इलाज के अभाव में मैंने अपनी माँ को खो दिया था।

मीडिया वालों ने प्रियल के अकेली की एवं बाद में उसके पिता और भाई के साथ फोटो लिये।

दूसरे दिन ही कितने ही समाचार पत्रों में 'भारत की बेटी प्रियल' शीर्षक के साथ उसकी जीवनी और उसके सद्विचार मुख-पृष्ठ पर छप कर आए। समाचार पढ़कर प्रियल के पिता का एक पियक्कड़ मित्र आया और कहने लगा कि हाय रे! मैंने तो बड़ा भारी अपराध कर दिया। कल ही मेरी पत्नी के गर्भ में बेटी भ्रूण पल रहा था, जिसकी मैंने हत्या करवा दी। मैंने प्रकृति और स्त्री लिंग के साथ अन्याय कर डाला। मेरे भी प्रियल जैसी एक पुत्री होती।

प्रियल के पिता- मित्र! मैंने प्रियल के माँ के मरने के बाद उसकी टोह नहीं ली। हम पुरुष वर्ग नारी को सम्मान देना नहीं चाहते हैं। नारी त्याग, तप, करुणा, वात्सल्य, दया, सहानुभूति, सहनशीलता का पुंज है। मित्र! मैं प्रियल को एक खुशी देना चाहता हूँ कि अपनी मित्र मण्डली को शराब छुड़वाकर।

प्रियल- पिताजी आप मुझे आशीर्वाद दीजिए कि मैं डॉक्टर बनकर अपने शहर में निर्धनों के लिए अस्पताल खोलकर उनकी जी-जान से सेवा करूँ।

प्रियल के घर के बाहर पड़ौसियों की भीड़ लगी हुई थी, वे उसे कन्धों पर उठा कर नाचने लगे।

-'ई-123, नेहरू पार्क, जोधपुर-342003 (राज.)

प्रश्नः-

1. प्रियल की जीविका के साधन क्या थे?
2. वह क्या बनना चाहती थी और क्यों?
3. प्रियल के पिता अच्छे थे या बुरे?
4. इस कहानी में किसका किरदार आपको अच्छा लगा और क्यों?
5. निम्नलिखित वाक्यों में से विशेषण पद छाँटिए-
   (1) प्रियल राजस्थान में सर्वश्रेष्ठ रही।
   (2) मेरे पापा की छवि बिगड़ जाती है।
   (3) प्रियल ने 99 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।
   (4) मैंने तो बड़ा भारी अपराध कर दिया।
   (5) नारी त्याग, तप, करुणा, वात्सल्य, दया, सहानुभूति, सहनशीलता का पुंज है।

बाल-स्तम्भ [सितम्बर-2017] का परिणाम

जिनवाणी के सितम्बर-2017 के अंक में बाल-स्तम्भ के अंतर्गत 'स्वच्छता और हम' के प्रश्नों के उत्तर 14 बालक-बालिकाओं से प्राप्त हुए। पूर्णांक 30 हैं।

पुरस्कार एवं राशि	नाम	अंक
प्रथम पुरस्कार-500/-	नमिता जैन-मसूदा, जिला-अजमेर (राज.)	29
द्वितीय पुरस्कार-300/-	निकिता जैन-मसूदा, जिला-अजमेर (राज.)	27.5
तृतीय पुरस्कार- 200/-	ऋषभ चौपड़ा-जोधपुर (राज.)	26.5
सान्त्वना पुरस्कार- 150/-	अभिषेक पालरेचा-जोधपुर (राज.)	26
	भावेश जैन-मंदसौर (मध्यप्रदेश)	25.5
	अरिष्ट कोठारी-अजमेर (राज.)	24.5
	आरोही एस. जैन-भुसावल (महा.)	24
	नमन श्रेणिक जैन-भुसावल (महा.)	24

धैर्य से सफलता

डॉ. प्रेमचन्द गोस्वामी

गुरुजी अपने बहुत से शिष्यों के साथ एक आश्रम से दूसरे आश्रम की ओर जा रहे थे। राह में एक विद्यार्थी शिष्य को प्यास लगी। रास्ता सुनसान था। दूर एक खेत दिखाई दे रहा था। सभी उस ओर बढ़ चले। खेत पर पहुँचने के बाद पता चला कि वहाँ कोई कुँआ तो नहीं, किन्तु थोड़े-थोड़े फासले पर लगभग पचास हाथ गहरे तीन गड्ढे खुदे हुए थे। थोड़ी देर पर एक चौथा गड्ढा भी था जिसे कदाचित् अब गहरा किया जा रहा था।

शिष्यों ने गड्ढों के विषय में जिज्ञासा प्रकट की तो गुरुजी ने बतलाया-''पुत्रों! जिस कृषक का यह खेत है, उसके विचार बिल्कुल अस्थिर लगते हैं। यह अपने खेत में कुआँ खुदवाना चाहता है, किन्तु पर्याप्त खुद जाने के बाद भी जब देखता है कि उसमें से पानी नहीं निकला है तो अपने विचार बदलकर दूसरे स्थान पर प्रयत्न शुरू कर देता है। असल में भिन्न-भिन्न दूरी पर प्रयत्न करके वह किसी एक जगह से भी पानी प्राप्त नहीं कर सका है। यदि यह अपने सम्पूर्ण साधनों एवं शक्ति का उपयोग चार स्थानों पर न करके, एक ही स्थान पर करता तो अवश्य ही पानी निकल जाता।''

''प्रिय विद्यार्थियों, किसी कार्य को आरम्भ करने के बाद असफलताओं के उपरान्त भी धैर्य से काम लेने पर, जरूर सफलता मिलती है, इसमें संदेह नहीं। अस्थिर विचार और अस्थिर निर्णय मनुष्य को अपनी राह से सदा भटकाते हैं।''

शिष्य आश्वस्त हुए और पानी की खोज में आगे बढ़ गए। *-जिनवाणी, फरवरी 1979 से गृहीत*

जय गुरु हस्ती ||GURUDEV|| जय गुरु हीरा–मान

गुरु हस्ती के दो फरमान
सामायिक स्वाध्याय महान

गुरु हीरा का यह सन्देश
व्यसन मुक्त हो देश विदेश

UDAY GROUP

UDAY INDUSTRIES CHENNAI PVT. LTD.

IMPORT & EXPORT AND DEALERS OF IRON & STEEL
LONG & FLAT PRODUCTS

UDAY CONSULTS LLP

OVERSEAS AND DOMESTIC MANPOWER RECRUITMENT
AND
FACILITY MANAGEMENT

CONNECTING BRIGHT TALENT WITH THE RIGHT COMPANY

STEEL | LOGISTICS | MANPOWER

WITH BEST COMPLIMENTS from:
G R SURANA & RAJESH SURANA
No.10&11, Jawaharlal Nehru Road,
Koyambedu, Chennai - 600 107.
Mobile No: 9940566666, Contact No: 044-24797675
Website: www.udaygroup.net
Mail Id: industries@udaygroup.net

भण्डारी हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

BH Since 1936

(आपके स्वास्थ्य के साथ हमेशा)

Certificate No. H-2012-0136

राजस्थान व पड़ौसी राज्यों में लेजर, लैप्रोस्कोपी एवं लिथोट्रिप्सी का सर्वश्रेष्ठ एवं विश्वसनीय सेन्टर

~ अस्पताल की विशेषताएं ~

दूरबीन पद्धति से पेट, अपेन्डिक्स, हर्निया, प्रोस्टेट, पाइल्स आदि की शल्य चिकित्सा की सुविधा।

शरीर में किसी भी स्थान पर होने वाली पथरी के ईलाज का सर्वश्रेष्ठ संस्थान।

स्त्री रोग, नॉर्मल, सिजेरियन व हाई रिस्क डिलेवरी का अग्रणीय संस्थान।

विशेषज्ञों की सेवायें

- मूत्र व पथरी रोग
- पेट, लीवर व आंत रोग
- जनरल व मोटापा निवारण सर्जरी
- स्त्री रोग
- जनरल फिजिशियन
- प्लास्टिक व कॉस्मेटिक सर्जरी
- बाल रोग एवं बाल शल्य चिकित्सा
- न्यूरो सर्जरी
- दन्त रोग
- नाक, कान व गला रोग
- चर्म रोग

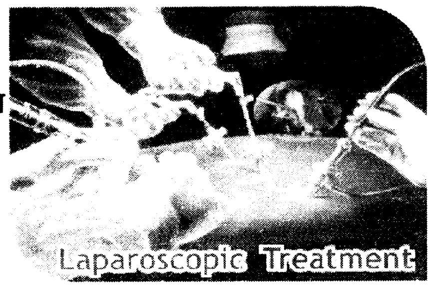

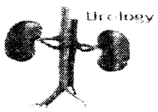

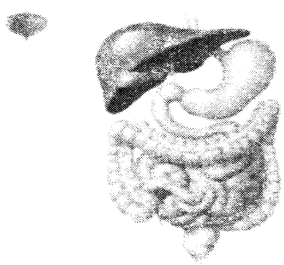

सुविधायें

- 30 वर्ष का अनुभव
- 4 लाख से अधिक रोगियों का सफल ईलाज
- 2 लाख से अधिक रोगियों का शल्य क्रिया द्वारा उपचार।
- 50,000 से अधिक पथरी रोगियों का उपचार।
- NABH & NABL से मान्यता प्राप्त।
- MLC (Medico Legal Case) की सुविधा
- 24x7 ICU, Emergency Facilty

CGHS, ECHS, ESIC, NPCIL (Rawatbhata), BSNL, BHEL, GAIL, IOCL, CWC, FCI, NFL, MNIT, CIPET, CSWRI, HCL, AAI, Coal India, CISF (8th RES BN), Rajasthan University, केन्द्र व राजस्थान सरकार के सभी कर्मचारी व पेंशनर्स एवं सभी प्रमुख TPA व इंश्योरेंस कंपनीयों से ईलाज हेतु अधिकृत

138-ए, वसुन्धरा कॉलोनी, गोपालपुरा बाईपास, टोंक रोड़, जयपुर - 302018

फोन: 0141-2703851-52 (मो.) 9660006228, 9829770055

जयगुरु हस्ती जयगुरु हीरा जयगुरु मान

साधना के मार्ग में प्रगतिशील वही बन सकता है, जिसमें संकल्प की दृढ़ता हो।

– आचार्य श्री हस्ती

C/o CHANANMUL UMEDRAJ
BAGHMAR MOTOR FINANCE
S. SAMPATRAJ FINANCIERS
S. RAJAN FINANCIERS

 # 218, Ashoka Road, Lashkar Mohalla,
Mysore-570001 (Karanataka)

With Best Compliments from :

C. Sohanlal Budhmal Sampathraj Rajan
Abhishek, Rohith, Saurabh, Akhilesh Baghmar

Tel. : 821-4265431, 2446407 (O)
Mo. : 9845126407 (B), 9845580407 (S), 9845113334 (R)

Gurudev

SURANA™

yes, the best TMT RE-BARS

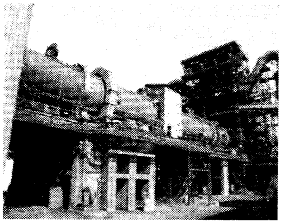

DRI Plant

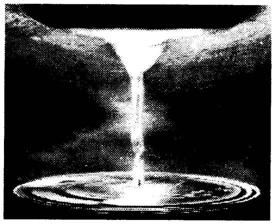

Electric Arc Furnace

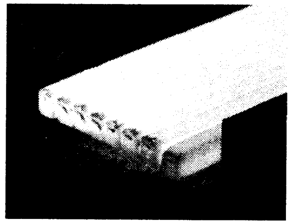

Billets

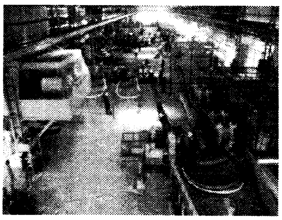

Rolling Mill

Captive Power Plant

Windmill

With best wishes from

ISO 9001-2008

SURANA INDUSTRIES LIMITED

INTEGRATED STEEL PLANT

MANUFACTURE OF TMT BARS AND ALL KIND OF ALLOY STEEL

29, Whites Road, II Floor, Royapettah, Chennai 600 014/ Ph : 044-28525127 (3 lines) 28525596. Fax: 044-28521143

Email: steelmktg@suranaind.com / www.surana.org.in

STEEL I POWER I MINING

।। श्री महावीराय नमः ।।

हस्ती-हीरा जय जय !

हीरा-मान जय जय !

छोटा सा नियम धोवन का।
लाभ बड़ा इसके पालन का।।

अखण्ड बाल ब्रह्मचारी चारित्र चूड़ामणि, भक्तों के भगवान् 1008
श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में हृदय की असीम आस्था से समर्पण
उनके अनमोल खजाने के हीरे-मोती जन-जन के तारणहार
पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा.,
पण्डित रत्न उपाध्याय प्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.
एवं समस्त

रत्नाधिक साधु साध्वी मण्डल

के चरण कमलों में भावभरा कोटिश: वन्दन एवं समर्पण...

OUR HUMBLE SALUTATIONS TO THE MOST NOBLE SOULS

PRITHVIRAJ PREM KUMAR KAVAD
690, Trunk Road, Poonamallee, Chennai - 600 056
Ph. 044-26272196 Mob. : 93810-07273

MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD
GURU HASTI THANGA MAALIGAI
(JEWELLERS & BANKERS)
5, Car Street, Poonamallee, Chennai-600 056
Ph. : 044-26272609 Mob. : 95-00-11-44-55

गजेन्द्र निधि द्वारा संचालित

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

आदरणीय रत्नबंधुवर,

छात्रवृत्ति योजना की निरन्तर गतिशीलता के लिए सदस्यता अभियान से जुड़िये। सदस्यता अभियान का प्रारूप इस प्रकार है –

आचार्य हस्ती मेधावी छात्रवृत्ति योजना

उज्ज्वल भविष्य की ओर एक कदम.......

सदस्यता अभियान

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)

नोट-सदस्यता को ग्रहण करने वाले सभी सदस्यों का नाम जिनवाणी पत्रिका में प्रति माह प्रकाशित किया जायेगा।

Acharya Hasti Scholarship Fund

Ujjawal Bhavishya Ki Aur Ek Kadam..........

Your Contribution Towards This Noble Cause Will Go A Long Way In Lighting The Lamp Of Knowledge To Deserving and Intelligent Students, Hence We Kindly Request You To Contribute For This Noble Cause.

Note-The Fund Acknowledges Donation From Rs.3000/- Onwards. The Bank A/c Details is as follows -

A/c Name- Gajendra Nidhi Acharya Hasti Scholarship Fund
A/c No. 168010100120722
Bank Name & Address - AXIS BANK LTD. Anna Salai, Chennai(TN) IFSC Code - UTIB0000168
PAN No. - AAATG1995J
Note- Donation to Gajendra Nidhi are exempted u/s 80G of Income Tax Act 1961.

- **For Scholarship Fund Details Please Contact M.Harish Kavad, Chennai (+91 95001 14455)**

छात्रवृत्ति योजना में सदस्यता अभियान के सदस्य बनकर योजना की निरन्तरता को बनायें रखने में अपना अमूल्य योगदान कर पुण्यार्जन किया, ऐसे संघनिष्ठ, श्रेष्ठीवर्यों के नामों की सूची –

हीरक स्तम्भ सदस्य (5 लाख रुपये प्रति वर्ष)	स्वर्ण स्तम्भ सदस्य (1 लाख रुपये प्रति वर्ष)
श्रीमान् मोफतराज जी मुणोत, मुम्बई। युवारत्न श्री हरीश जी कवाड़, चैन्नई। श्रीमान् राजीव जी नीता जी डागा, ह्यूस्टन श्रीमान् रिखबचंद सा सुखानी, रायचूर (कर्नाटक)	श्रीमान् दूलीचंद बाघमार एण्ड संस,चैन्नई। श्रीमान् दलीचंद जी सुरेश जी कवाड़, पून्नामल्लई। श्रीमान् राजेश जी विमल जी पवन जी बोहरा, चैन्नई। श्रीमान् गणपत जी हेमन्त जी बाघमार, चैन्नई। श्रीमान् प्रेम जी कवाड़, चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई। श्रीमान् अम्बालाल जी बसंतीदेवी जी कर्नावट, चैन्नई। श्रीमान् सम्पतराज जी राजकंवर जी भंडारी, ट्रिपलीकेन–चैन्नई। गुप्त सहयोगी, चैन्नई।

सहयोग के लिए चैक या ड्राफ्ट कार्यालय के इस पते पर भेजें–

M. Harish Kumar Kavad - 5, Car Street, Poonamallee, **CHENNAI-600056** (TN)

छात्रवृत्ति योजना से संबंधित जानकारी के लिए सम्पर्क करें– मनीष जैन, चैन्नई **(Mob. +91 95430 68382)**

'छोटा सा चिन्तन परिग्रह को हल्का करने का, लाभ बड़ा गुरु भाइयों को शिक्षा में सहयोग करने का'

Jai Guru Heera *Jai Guru Hasti* *Jai Guru Maan*

।। जैनं जयति शासनम्।।

With Best Compliments from:

Dharamchand Paraschand Exports
Paras Chand Hirawat
CC 3011-3012, Bandra Kurla Complex, Bandra (E),
Mumbai-400 098 (MH)
Tel. : +91 22 4018 5000
Email : dpe90@hotmail.com

KANTILAL SHANTILAL RAJENDRA LUNKER
PACHPADRA-PALI-ERODE
K.L. ASSOCIATES
'Sanskar', 177-B, Adarsh Nagar, Pali-306401 (Raj.)
Mobile : 094141-22757
135, N.M.S. Compound, ERODE-638001 (T.N.)
Tel. : 3205500 (O), Mobile : 093600-25001

BHANSALI GROUP
Dhanpatraj V. Bhansali
BHANSALI DEVELOPERS
Sharda Bhawan, 2nd Floor, Nandapatkar Road, Vile Parle (E),
Mumbai-400057 (MH) Tel. : 26185801, 32940462 (O),
E-mail : bhansalidevelopers@yahoo.com

S.D. GEMS & SURBHI DIAMONDS
Prakash Chand Daga
Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)
FC51, Bharat-Diamond Bourse,
Bandra Kurla Complex,
Bandra (E), Mumbai-400098 (MH)
Ph. : 022-23684091, 23666799 (o), 022-28724429
Fax : 22-40042015, Mobile : 098200-30872
E-mail : sdgems@hotmail.com

Basant Jain & Associates, C.A.
BKJ & Associates, C.A.
BKJ Consulting Pvt. Ltd.,
Megha Properties Pvt. Ltd.
Ambition Properties Pvt.Ltd.
बसंत के जैन
अध्यक्षः श्री जैन रत्न युवक परिषद, मुम्बई
ट्रस्टी : गजेन्द्र निधि ट्रस्ट
601, Dalamal Chambers, New Marine Lines,
Mumbai - 400020 (MH)
Ph. : 022-22018793, 22018794 (o), 022-28810702

NARENDRA HIRAWAT & CO.
N.H. Studios ***Launches*** ***N.H. Jewells***
A-1502, Floor-15th, Plot-FP616(PT), Naman Midtown, Senapati Bapat Marg,
Near Indiabulls, Elphinstone (W), Mumbai-400013 (MH)
Web. www.nhstudioz.tv, Tel. : 022-24370713

!!Jai Guru Heera!! !!Jai Guru Hasti!! !!Jai Guru Man!!

LIFE
SHOULD NOT
ONLY BE LIVED,
IT SHOULD BE
CELEBRATED!

With best compliments from:

C. R. Kothari & Sons Group of Companies
Stock Broking - DP-CDSIL-NBFC-Solar Power

Mumbai - Baroda - Jaipur - Ajmer

Pradeep Kothari
Sanjay Kothari
Hemant Kothari
Alok Kothari

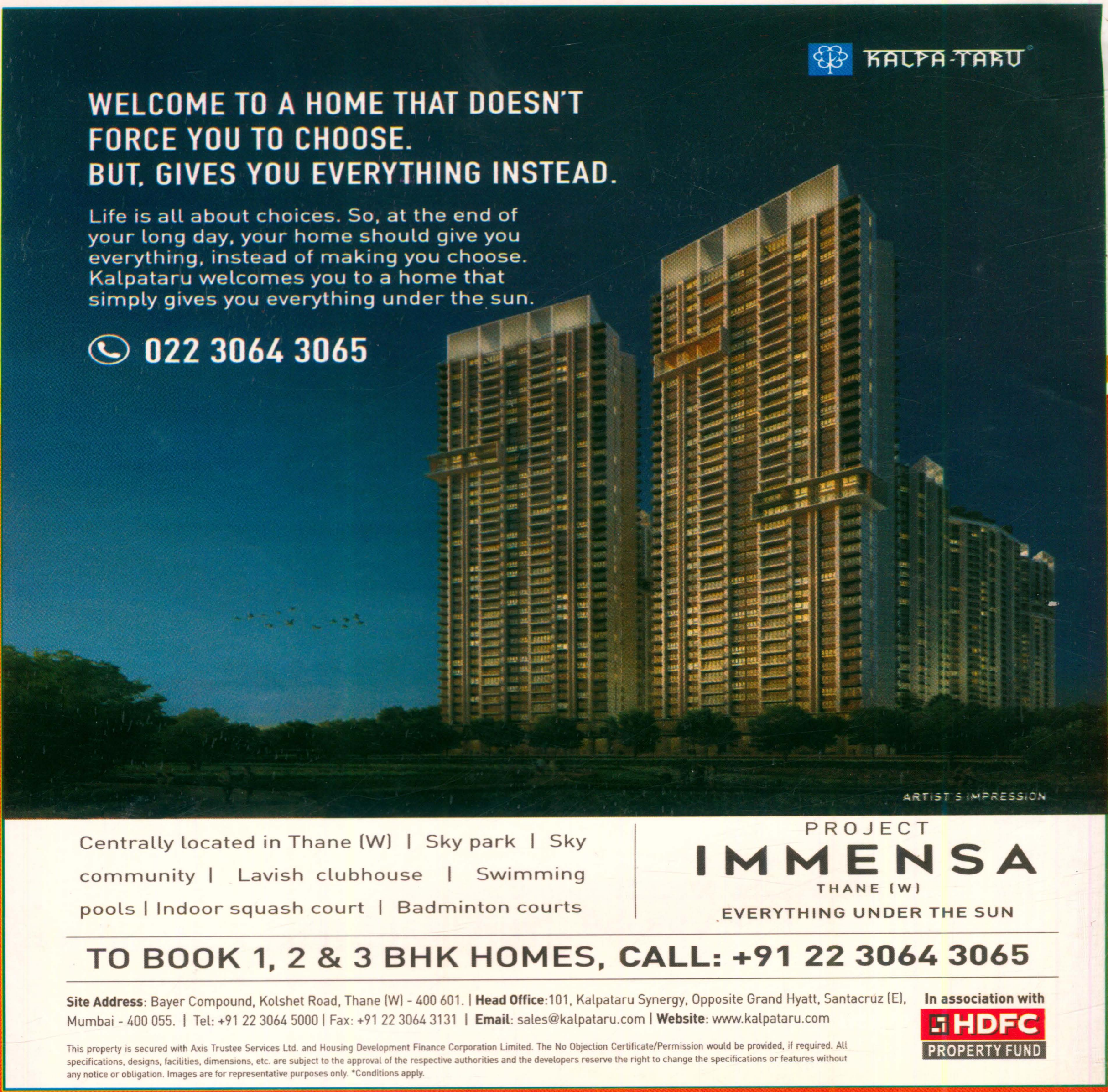

(आ. स. 6700)
श्री मन्त्री महोदय
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा-382007,
जिला-गाँधीनगर (गुजरात)

If undelivered, Please return to

Samyaggyan Pracharak Mandal
Above Shop No. 182,
Bapu Bazar, Jaipur-302003 (Raj.)
Tel. : 0141-2575997

स्वामी सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के लिए प्रकाशक, मुद्रक - विनय चन्द डागा द्वारा दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर राजस्थान से मुद्रित एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, शॉप नं. 182 के ऊपर, बापू बाजार, जयपुर-3 राजस्थान से प्रकाशित। सम्पादक-डॉ. धर्मचन्द जैन